Telephone :
205

Telegrams :
'Bhavishya'

'भविष्य' का चन्दा

वार्षिक चन्दा	...	१२) रु०
छःमाही चन्दा	...	६॥) रु०
तिमाही चन्दा	...	३॥) रु०

एक प्रति का मूल्य चार आने

Annas Four Per Copy

एक प्रार्थना

वार्षिक चन्दे अथवा फ़ी कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुक़ताचीनी करने में पहिले मित्रों को 'भविष्य' में प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टिपात करना चाहिए ।

वर्ष १, खण्ड ४ | इलाहाबाद—सोमवार ; १४ सितम्बर, १९३१ | सं० १४ पूर्ण सं० ५०

बम्बई की सुप्रसिद्ध सिनेमा-स्टार— कुमारी सुलताना

4

THE FINE ART PRINTING COTTAGE. CHANDRALOK. ALLAHABAD.

कौन-सा ऐसा शिक्षित परिवार है,

जिसमें न जाता हो ?

'चाँद'-जैसे निर्भीक पत्र की ग्राहकता स्वीकार करना—जिसने अपने जीवन के प्रथम प्रभात से ही क्रान्ति की उपासना में अपना सर्वस्व स्वाहा कर दिया है—निश्चय ही सद्विचारों को आमन्त्रित करना है। यदि आप अब तक इसके ग्राहक नहीं हैं, तो तुरन्त ग्राहकों की श्रेणी में नाम लिखा लीजिए ; और यदि आप ग्राहक हैं तो अपने इष्ट-मित्रों को ऐसा करने की सलाह दीजिए। 'चाँद' का वार्षिक चन्दा केवल ६।।) रु० है अर्थात् आठ आने फ़ी कॉपी—ऐसी हालत में कौन ऐसा बुद्धिमान व्यक्ति होगा, जो केवल एक पैसे रोज़ में वह ज्ञान उपार्जन करने से इन्कार करे—जो हज़ारों रुपए व्यय करने पर भी आजकल के स्कूल और कॉलेजों द्वारा प्राप्त नहीं हो सकता ?

सितम्बर, १९३१ की विषय-सूची

लेख — लेखक

इसके अतिरिक्त तिरङ्गे तथा रङ्गीन चित्र (आर्ट पेपर पर), अनेक चुटीले कार्टून तथा ऐसे चित्रादि पाठकों को मिलेंगे, जो और किसी पत्र-पत्रिका में मिल ही नहीं सकते।

हृदय पर हाथ रख कर बताइए, समस्त भारत में ऐसा सुसम्पादित और सुसञ्चालित पत्र दूसरा कौन है ?

☞ व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशन विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे एकमात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड ४ | इलाहाबाद–सोमवार ; १४ सितम्बर, १६३१ | संख्या १४, पूर्ण संख्या ५०

लन्दन में महात्मा गाँधी का अपर्वू स्वागत हुआ !

बन्दरगाह पर हज़ारों की भीड़ :: हर्ष-नाद से आकाश हिल उठा !

[हमारा रियूटर का विशेष तार]

लन्दन, ११ सितम्बर

आज महात्मा जी मार्सलीज़ पर जहाज़ से उतरे। कहा जाता है कि महात्मा जी ने जहाज़ की यात्रा में मौ० शौकत अली से बातें कर साम्प्रदायिक मसले को बहुत कुछ सुलझा लिया है। मौ० शौकत अली ने डॉ० अन्सारी के गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स में प्रतिनिधि-स्वरूप शामिल होने का समर्थन करने का वचन दिया है !

मार्सलीज़ के बन्दरगाह पर सैकड़ों की संख्या में जनता महात्मा जी के दर्शन के लिए एकत्र थी। इसी बीच में 'राजपूताना' जहाज़ महात्मा जी को लेकर बन्दरगाह पर पहुँच गया। जहाज़ के पहुँचते ही महात्मा जी को सिर्फ़ लँगोटी पहने और अपनी बनाई हुई चादर को कड़ी सरदी और बारिश में ओढ़े हुए जहाज़ के डेक पर खड़े देख कर जनता ने गगन-भेदी हर्षनाद किया। भारतीय विद्यार्थियों ने तालियों की गड़गड़ाहट से आकाश को कम्पायमान कर दिया। महात्मा जी ने भी इसके उत्तर में ताली बजाई, किन्तु वह 'नक़्क़ारख़ाने में तूती की आवाज़' सिद्ध हुई।

जैसे ही जनता की भीड़ कुछ कम हुई, वैसे ही समाचार-पत्रों के प्रतिनिधियों और फ़ोटो लेने वालों का ताँता लग गया। पुलीस ने बड़ी मुश्किल से भीड़ को संयमित कर पाया। भीड़ इतनी थी और महात्मा जी को इतना परिश्रम पड़ा कि कुछ क्षण उन्हें हवादार स्थान में विश्राम लेना पड़ा। पत्र-प्रतिनिधियों को महात्मा जी ने पाँच-पाँच के जत्थे में बुलाया, और उनसे बातें कीं।

गाँधी जी १२ सितम्बर को चार बजे शाम को लन्दन पहुँच गए।

महात्मा जी का वक्तव्य

महात्मा जी ने मार्सलीज़ पहुँच कर कहा कि—"१७ वर्ष बाद इङ्गलैण्ड जाने में मुझे कुछ 'घबराहट सी, होती है। मेरी जहाज़ की यात्रा कप्तान और समस्त जहाज़ी कर्मचारियों की कृपा से बड़े आनन्द की रही।" महात्मा जी ने अपने मित्रों से यह कहा है कि—"मुझे लन्दन के नेताओं की ख़ानगी कॉन्फ्रेन्स से गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स की अपेक्षा अधिक सफलता की आशा है।" रियूटर के प्रतिनिधि से आपने कहा—"मैं अपने देश की स्वतन्त्रता सम्बन्धी अपने जीवन के स्वप्नों का अनुभव करने इङ्गलैण्ड जा रहा हूँ। इङ्गलैण्ड की सरकार के परिवर्तन का मेरी नीति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। होर मुझे सच्चे अङ्गरेज़ मालूम होते हैं, उनकी सहानुभूति विपरीत होने की अपेक्षा मेरे पक्ष में ही होगी।" यह पूछने पर कि आप सम्राट से मिलने जाएँगे या नहीं, महात्मा जी ने कहा कि—"मैं अङ्गरेज़ी सरकार का क़ैदी हूँ। यदि आप चाहेंगे तो जाऊँगा।"

एसेम्बली में प्रेस-बिल उपस्थित हो गया

कॉङ्ग्रेस की वर्किङ्ग कमिटी की ओर से बिल का घोर विरोध

शिमला, ११ सितम्बर

आज एसेम्बली में नया प्रेस-बिल सर जेम्स क्रेरार ने उपस्थित कर दिया और उसे एक निर्वाचित कमिटी में, जिसमें सर्वश्री भगतराम पुरी, रङ्गा ऐयर, आर्थर मूर, सर अब्दुल्ला सुहरावर्दी, डॉ० डेसूज़ा, ए० हून, एस० आर० पण्डित, सर अब्दुल रहीम और स्वयं सर जेम्स क्रेरार रहेंगे, सर जेम्स ने उस पर १८ सितम्बर तक रिपोर्ट देने के लिए भी प्रस्ताव किया। बिल उपस्थित करते हुए सर जेम्स क्रेरार ने कहा कि हाल की भीषण हत्याओं से सार्वजनिक मत को बड़ा धक्का लगा है। वर्तमान स्थिति में इस बिल के पेश करने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं है। अन्त में उन्होंने इस वर्ष के अन्दर हुए आतङ्ककारी आक्रमणों का ज़िक्र करते हुए कहा, कि यह क़ानून सीधे-साधे नवयुवकों को शरारत-पूर्ण लेखों या व्याख्यानों से बचाने के लिए बनाया जा रहा है।

नए प्रेस-बिल पर निन्दात्मक प्रस्ताव

अहमदाबाद, ११ सितम्बर

कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग-कमिटी ने नए प्रेस-बिल के सम्बन्ध में यह प्रस्ताव पास किया है—वर्किङ्ग कमिटी यद्यपि वह सदा से हिंसा का विरोध और उसकी निन्दा करती रही है, इस समय एसेम्बली के सामने उपस्थित प्रेस-बिल को बहुत कठोर और बिल्कुल अनावश्यक समझती है, क्योंकि इससे दण्ड के विधान में एक और धारा बढ़ती है और इससे समाचार-पत्रों की जायदाद और स्वतन्त्रता पर सीधा आक्रमण होता है। कमिटी यह घोषित करती है कि बिल का दायरा इतना विस्तृत और सन्दिग्ध है कि जनता के किसी भी काम को हिंसा का नाम दिया जा सकता है। सरकार ने समझौते के सम्बन्ध में जो अर्थ लगाए हैं, जैसे बहुत से क़ैदी अभी तक जेल में हैं, उन्हें देखते हुए कमिटी को अपने इस भय को प्रदर्शित करने का प्रबल कारण है। इस के अतिरिक्त कमिटी की राय में यह प्रस्तावित क़ानून बनाना गत वर्ष के प्रेस-ऑर्डिनेन्स को और अधिक विस्तृत रूप में जारी करना है; इसलिए कमिटी यह समझती है कि समझौते के दौरान में इस क़ानून को बनाना दिल्ली-समझौते को साफ़-साफ़ तोड़ना है।

पत्रकार-सङ्घ के मन्त्री का तार

बम्बई, ११ सितम्बर

पत्रकार-सङ्घ के मन्त्री श्री० ब्रेलवी ने नीचे लिखा तार भारत-सरकार के होम-सेक्रेटरी और एसेम्बली के प्रेज़िडेण्ट के पास भेजा है—अपने ६ सितम्बर को भेजे हुए तार के सिलसिले में मैं इतना और सूचित करना चाहता हूँ, कि जब समझौते पर हस्ताक्षर किया गया था, उस समय प्रेस-ऑर्डिनेन्स जारी था, इसलिए यह नया प्रेस-बिल जारी करना, समझौते को स्पष्ट तोड़ना है।

महात्मा जी के स्वागत की तैयारी

स्वागतियों में मि० चर्चिल भी हैं !

लन्दन, ६ सितम्बर

महात्मा गाँधी के लन्दन पहुँचने पर स्वागत करने के लिए स्वागत कमिटी ने चौदह सौ ब्रिटिश नेताओं को निमन्त्रित किया है। इनमें से एक श्री० चर्चिल महोदय भी हैं। महात्मा गाँधी सम्भवतः १२ सितम्बर को ४ बजे शाम के वक़्त लन्दन पहुँचेंगे। लन्दन पहुँचते ही यूस्टन रोड पर "फ़्रेन्ड्स हाउस" में आपका स्वागत किया जायगा। मि० हाउसमैन स्वागत में एक वक्तृता देंगे और महात्मा गाँधी उसका उत्तर देंगे। गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स के ज्वाइण्ट सोशल सेक्रेटरी मि० विन्सेन्ट फ़ॉकस्टोन से मोटर द्वारा आपको लन्दन पहुँचाएँगे। स्वागत के बाद महात्मा गाँधी किंग्सले हॉल जायँगे।

दिल्ली-षड्यन्त्र केस

नई दिल्ली, ६ सितम्बर

अभियुक्त बिमलप्रसाद जैन के अदालत में हाज़िर होने से बार-बार इन्कार कर देने के कारण स्पेशल ट्रिब्यूनल को अभियुक्त बिमलप्रसाद से अदालत में हाज़िर होने को कहने के लिए अदालत के क्लर्क को भेजना पड़ा। अभियुक्त वात्सायन के अतिरिक्त, जो कि बीमार है, अदालत में सब अभियुक्त उपस्थित थे। श्री० वात्सायन की तरफ़ से किसी पैरवी करने वाले व्यक्ति के न होने के कारण अदालत की कार्रवाई दूसरे दिन के लिए स्थगित हो गई।

महात्मा जी की रक्षा का प्रबन्ध

लन्दन का समाचार है कि स्कॉटलैण्ड यार्ड (लन्दन के पुलीस-विभाग) ने महात्मा गाँधी और राउण्डटेबिल कॉन्फ्रेन्स के अन्य प्रतिनिधियों की रक्षा के लिए, जब तक वे इङ्गलैण्ड में रहेंगे, विशेष प्रबन्ध किया है।

'पायोनियर' का मामला

पाठकों को स्मरण होगा कि इलाहाबाद के 'पायोनियर' पर 'चाँद' और 'भविष्य' के अध्यक्ष श्री० रामरखसिंह जी सहगल ने 'प्रेस का कीपर' लिखने के कारण अदालत की मान-हानि का दावा किया था। उस सम्बन्ध में 'पायोनियर' के नाम नोटिस जारी हो गया था और उसकी पेशी ९ सितम्बर को होने वाली थी। पर एकाएक ८ सितम्बर को वह मामला ख़ारिज कर दिया गया। कारण यह बतलाया गया है कि '३) रु० नोटिस के जमा नहीं किए गए।'

श्री० के० सी० राय का देहान्त

माननीय व्यक्तियों के शोक-सूचक उद्गार

शिमला, ७ सितम्बर

आज लेजिस्लेटिव एसेम्बली का अधिवेशन सर इब्राहीम रहमतुल्ला की अध्यक्षता में आरम्भ हुआ, ग़ैर-सरकारी मेम्बरों की संख्या कम थी। कुछ तो शिमला पहुँच न सके थे और कुछ राउण्डटेबिल कॉन्फ्रेन्स में गए हुए हैं। दोपहर के समय जब कि एसेम्बली की कार्रवाही हो रही थी, एसोसिएटेड प्रेस के प्रधान सम्पादक श्री० के० सी० रॉय लक़वे के आक्रमण से गिर पड़े। उनको तुरन्त उठा कर रिपन अस्पताल में भेजा गया, जहाँ साढ़े चार बजे उनका देहान्त हो गया। श्री० रॉय की इस प्रकार मृत्यु पर सब को खेद हुआ। वे अपने पीछे विधवा पत्नी और तीन बच्चे छोड़ गए हैं।

अख़बारों की तलाशी

कलकत्ता, ७ सितम्बर

आज शाम को पुलीस ने 'एडवान्स', 'लिबर्टी' और दूसरे राष्ट्रीय समाचार-पत्रों के कार्यालयों की तलाशी ली। कहा जाता है कि इसका कारण बड़े बाज़ार की पिकेटिङ्ग के सम्बन्ध में प्रकाशित होने वाले समाचार थे।

पाँच सौ रुपए इनाम !

कलकत्ता, ७ सितम्बर

कलकत्ता के सेशन्स जज मि० गार्लिक के मृत हत्याकारी के फ़ोटो को पहिचानने के लिए ५००) रु० के इनाम की घोषणा की गई है।

बर्मा के विद्रोही नेता की अपील

रङ्गून, ७ सितम्बर

बर्मा-विद्रोह के श्री० नेता सायासान, जिन्हें फाँसी का दण्ड सुनाया गया है, की अपील हाईकोर्ट में दाख़िल कर दी गई है।

गोलमेज़ियों का सम्मान

लन्दन, ९ सितम्बर

'लन्दन ऑथोरिटी पार्टी' के चेयरमैन लॉर्ड रिची ने राउण्डटेबिल कॉन्फ्रेन्स के प्रतिनिधियों को निमन्त्रण देकर बुलाया। उनको एक क्रूज़र पर बैठा कर टेम्स की सैर कराई गई और बन्दरगाह के प्रबन्ध तथा विभिन्न प्रकार के जहाज़ों के आवागमन का सुप्रकाशित दृश्य दिखलाया गया। दर्शक इससे बड़े प्रसन्न हुए।

इलाहाबाद में पिकेटिङ्ग

इलाहाबाद की सिटी कॉङ्ग्रेस कमिटी को सूचना मिली है कि ९ तारीख़ को एक मुसलमान कपड़े के दुकानदार ने एक मुसलमान वालण्टियर को पीटा है। वह ग्राहकों से उस दुकान से कपड़ा न ख़रीदने को कह रहा था। वालण्टियर की कनपटी सूजी थी। दुकानदार मार-पीट करने की बात से इन्कार करता है और कहता है कि मैंने सिर्फ़ धक्का देकर वालण्टियर को अपने यहाँ से हटाया था।

शहर के कपड़े के दुकानदारों का एक डेपुटेशन पण्डित जवाहरलाल नेहरू अथा श्री० टी० के० शेरवानी से मिला और प्रार्थना की कि उनको अपने यहाँ रक्खा विदेशी ऊनी कपड़ा बेचने की इजाज़त दे दी जाय, वरना उनकी बड़ी हानि होगी। पर दोनों नेताओं ने ऐसा कर सकने में असमर्थता प्रकट की, क्योंकि वर्किङ्ग कमिटी तय कर चुकी है कि स्थानीय कमिटियाँ दुकानदारों से इस सम्बन्ध में किसी तरह का समझौता नहीं कर सकतीं। पर उनको यह आश्वासन दिया गया कि उनका मामला वर्किङ्ग कमिटी के सामने अवश्य पेश कर दिया जायगा।

—वियना (ऑस्ट्रिया) से ख़बर आई है कि एसेम्बली के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री० विट्ठलभाई पटेल अब अस्पताल छोड़ने लायक़ हो गए हैं और एतवार को हवाई जहाज़ द्वारा लन्दन पहुँचने वाले हैं।

गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स की कार्रवाई

अक्टूबर तक समाप्त होने की आशा

लन्दन, ९ सितम्बर

अक्टूबर के आख़ीर तक या इसी के लगभग गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स की कार्रवाई समाप्त हो जाने की आशा की जाती है। कॉन्फ्रेन्स के प्रभावशाली सदस्यों ने ज़ोर दिया है कि यह कॉन्फ्रेन्स अन्तिम और निर्णायक कॉन्फ्रेन्स होनी चाहिए।

गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स और सर अली इमाम

पटना, ९ सितम्बर

इङ्गलैण्ड के लिए रवाना होने के पहले, एसोसिएटेड प्रेस के प्रतिनिधि के पूछने पर गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स की अल्प-संख्यक कमिटी के राष्ट्रीय मुस्लिम सदस्य सर अली इमाम ने कहा कि "भारत की राजनीतिक स्वतन्त्रता हिन्दुस्तानियों के हाथ में है। गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स उसके लिए केवल एक अवसर है। उसका उचित उपयोग करने से भारतीय आकांक्षाओं को प्रकट करने का मतलब सिद्ध किया जा सकता है। समान आधार न होने पर गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स जैसे उपायों की निरर्थकता स्पष्ट है।

"लन्दन कॉन्फ्रेन्स की सफलता ब्रिटिश प्रतिनिधियों पर निर्भर नहीं है, बल्कि सम्पूर्ण भारतीय दृष्टिकोणों के एक रूप में प्रकट करने पर निर्भर है। भारत के भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों को लन्दन-कॉन्फ्रेन्स के परिणामों के लिए इस ज़रूरी शर्त को समझ लेना चाहिए।

वकीलों का सम्मान

जालन्धर में सब-जज द्वारा एक जूनियर वकील को कोर्ट से बाहर निकाले जाने के कारण बड़ी सनसनी फैल रही है।

कहा जाता है कि कोर्ट ने पहिले भी कई बार वकीलों तथा मुक़द्दमा लड़ने वालों से ऐसा ही व्यवहार किया है। सब-जज के इस व्यवहार से सारे शहर में असन्तोष फैल गया है और घर-घर इसी बात की चर्चा हो रही है।

गुण्डों की शरारत

रोहतक का समाचार है कि जब कॉङ्ग्रेस की अधीनता में एक-सार्वजनिक सभा हो रही थी, एक गाँव के अफ़सर के निर्देशानुसार कुछ गुण्डों ने सभा को तितर-बितर कर दिया। पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट घटनास्थल पर पहुँच गए हैं, परन्तु कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ताओं का विश्वास है कि इससे कोई फल नहीं हो सकता।

मोटर में बम का मामला

मुनीश्वर अवस्थी और उनके दो साथियों का मामला, जो कि कानपुर में गङ्गा जी के पुल पर कुछ ख़ाली बम लिए हुए मोटर में पकड़े गए थे, मैजिस्ट्रेट मि० ए० डी० बैनर्जी की अदालत में प्रारम्भ हुआ।

सुबूत की ओर से स्थानापन्न पुलीस सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० सिवर्ड और मि० फ़ैज़ुल हुसेन के बयान हुए। मि० सिवर्ड ने तलाशी में पाई हुई चीज़ों के विषय में गवाही दी। उन चीज़ों में कुछ ख़ाली बम और हिन्दी में लिखे हुए "तातिया टोपी" और "आहुति" या "जयपाल" नाम के काग़ज़ मिले थे। फ़ैज़ुल हुसैन ने कहा कि सीतापुर जेल में अभियुक्त पर षड्यन्त्रकारी होने का सन्देह किया गया था। बाहर के षड्यन्त्रकारियों से जेल के अफ़सरों पर आक्रमण करने के लिए कहा गया था। अभियुक्त और महेशचन्द मेहता के विरुद्ध जेल-नियम भङ्ग करने का भी मामला चलाया गया था।

—नई दिल्ली की पुलीस ने चोरी के अभियोग में याक़ूबअली नामक एक व्यक्ति को गिरफ़्तार किया है। वह पहिले एक पुलीस सब-इन्स्पेक्टर का नौकर रह चुका है और चोरी करने के अपराध में ६ माह की सज़ा भोग चुका है।

—सहारनपुर में ज़िला राजनीतिक कॉन्फ्रेन्स की तैयारियाँ हो रही हैं। अधिवेशन की तारीख़ १८ और १९ सितम्बर नियत की गई है। पं० जवाहरलाल नेहरू और डॉ० अन्सारी के भी आने की आशा है। १५ सितम्बर को एक स्वदेशी बाज़ार का उद्घाटन होगा, जो २१ तारीख़ तक खुला रहेगा। जो लोग उसमें खद्दर या कोई अन्य शुद्ध स्वदेशी वस्तु विक्रयार्थ भेजना चाहें, उनको १३ तारीख़ तक भेज देना चाहिए।

—प्रतापगढ़ के डिप्टी कमिश्नर श्री० विष्णुसहाय छुट्टी पर जा रहे हैं। आप एक सर्वप्रिय हाकिम थे, और लोगों से सहानुभूति और सभ्यता का व्यवहार करते थे। आपके जाने पर सर्व-साधारण ने बहुत खेद प्रकट किया है।

पेडी-हत्याकाण्ड का मामला

मि० जेम्स पेडी की हत्या के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए श्री० विवेकानन्द बोस तथा अन्य तीन व्यक्तियों के विरुद्ध, जो कुछ समय तक हिरासत में रखने के बाद दस-दस हज़ार की ज़मानत पर छोड़ दिए गए थे, मामले की सुनवाई सब-डिविज़नल ऑफ़िसर के इजलास में शुरू हो गई है।

अभियुक्त-पक्ष के वकीलों ने एतराज़ किया कि पुलीस जाँच करने के लिए बड़ा समय ले रही है। सब-डिवीज़नल ऑफ़िसर ने कहा कि पुलिस की जाँच कारण रहित नहीं है और उन्होंने अभियुक्तों को उसी ज़मानत में रहने के लिए आज्ञा देकर आगामी ३ अक्टूबर तक के लिए मामले की सुनवाई स्थगित कर दी है।

—पेशावर का समाचार है कि चीफ़ कमिश्नर ने पुलीस ऐक्ट की दफ़ा १५ के अनुसार घोषित किया है कि डेराइस्माइलख़ाँ शहर "अव्यवस्थित और ख़तरनाक हालत में है।" यह घोषणा दो महीने तक लागू रहेगी। अतिरिक्त गज़ट में कमिश्नर ने यह भी घोषित किया है कि रावलपिण्डी का ३ सितम्बर का 'मेवर' नाम का एक समाचारपत्र, जिसके सम्पादक गुलाम रब्बानी हैं, जहाँ मिले ज़ब्त कर लिया जाय।

बदमाशों से मज़दूरों की मुठभेड़

हाथरस का समाचार है कि गत शुक्रवार को प्रातःकाल शहर को जाते हुए मज़दूरों पर कुछ बदमाशों ने आक्रमण किया जिससे एक बदमाश मारा गया। पुलिस मामले की तहक़ीक़ात कर रही है।

यू० पी० कौन्सिल के सदस्यों के भत्ते में कमी

संयुक्त-प्रान्त की सरकार सरकारी नौकरों के सफ़र के भत्ते में कमी करने के बाद कौन्सिल के ग़ैर सरकारी सदस्यों के दैनिक भत्ते में कमी करने का विचार कर रही है। अब तक १० रुपया दैनिक भत्ता लखनऊ में किए जाने वाले अधिवेशनों में और १५ रुपया पहाड़ों पर किए जाने वाले अधिवेशनों में दिया जाता था। इसे घटा कर साढ़े सात रुपया और १० रुपया कर देने का विचार हो रहा है।

ट्रेड यूनियन कॉङ्ग्रेस का प्रस्ताव

लन्दन का समाचार है कि ब्रिटेन की ट्रेड यूनियन कॉङ्ग्रेस ने, जिसका अधिवेशन ब्रिस्टल में हो रहा है, मज़दूरों के कार्य करने के घन्टों को ४० घन्टे प्रति सप्ताह करने और छुट्टियों का पूरा वेतन देने का प्रस्ताव किया है।

"स्वराज्य की डिग्री"

कॉङ्ग्रेस नेताओं के भाषण

अहमदाबाद, ९ सितम्बर

एक बहुत बड़ी सार्वजनिक सभा में कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी के सदस्यों के भाषण हुए। ऐसी सभा डेढ़ वर्ष पहिले, महात्मा गाँधी की डण्डी-यात्रा के पहले होने वाली कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी की बैठक के समय हुई थी। वक्ताओं ने उस घटना का ज़िक्र करते हुए लोगों को उस समय पूर्ण स्वराज्य लिए बिना विश्राम न लेने की प्रतिज्ञा की याद दिलाई, जब महात्मा गाँधी जेल से छोड़े गए थे और समझौते के लिए वायसरॉय के भवन में बुलाए गए थे तब लोगों को स्वराज्य की डिग्री मिली थी। महात्मा गाँधी उस डिग्री को वसूल कर सकेंगे, अगर हम लोग दृढ़ रहेंगे। हम लोगों को महात्मा गाँधी के शब्द पर जीवन-बलिदान करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि महात्मा गाँधी की आवाज़ सेण्ट जेम्स पैलेस में सुनी जायगी—अगर उनके साथ जनता की शक्ति रहेगी।

डॉ० अन्सारी ने कहा कि राष्ट्रीय मुसलमान कॉङ्ग्रेस द्वारा निर्धारित स्वराज्य चाहते हैं, मि० जिन्ना द्वारा निर्धारित स्वराज्य नहीं।

डॉ० महमूद ने कहा कि मुसलमान भावी युद्ध में हिन्दुओं की तरह शामिल होंगे, अगर वह सन् १९३२ में छिड़ा।

मकान-भाड़ा घटाने का आन्दोलन

दिल्ली में सत्याग्रह होगा

दिल्ली, ९ सितम्बर

दिल्ली में मकान-भाड़ा घटाने का आन्दोलन ज़ोरों से चल रहा है। भाड़ा-कमिटी ने अब यह निश्चय किया है कि जो मकान-मालिक किराया घटाना स्वीकार नहीं करते उनके मकानों पर सत्याग्रह किया जाय। कमिटी ने यह आन्दोलन चलाने के लिए एक पिकेटिङ्ग सब-कमिटी, एक डिफ़ेन्स सब-कमिटी और एक अर्थ सब-कमिटी स्थापित की है।

—अलीगढ़ का ९ सितम्बर का समाचार है कि यू० पी० के होम-मेम्बर नवाब छतारी की जगह नवाब सर मुहम्मद मुज़म्मिल उल्ला ख़ाँ नियुक्त किए गए हैं। नवाब छतारी गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स में जाने की तैयारी कर रहे हैं।

नए प्रेस-ऐक्ट पर 'हिन्दू'-सम्पादक

बम्बई, १० सितम्बर

मद्रास के सुप्रसिद्ध 'हिन्दू' पत्र के सम्पादक श्री० ए० रङ्गस्वामी आयङ्गर ने, जो आजकल गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स के सम्बन्ध में लन्दन में हैं, 'बॉम्बे-क्रॉनिकल' के प्रतिनिधि से नए प्रेस-बिल के सम्बन्ध में बातें करते हुए कहा कि इस बिल से समाचार-पत्रों की स्वाधीनता और स्वतन्त्र-मत-प्रदर्शन के विरुद्ध एक और क़ानून तैयार किया जा रहा है। एसेम्बली के मेम्बरों को एकमत होकर इसका विरोध करना चाहिए और समाचार पत्रों की वैध स्वतन्त्रता की रक्षा करनी चाहिए।

रेलवे-जाँच-कमिटी

बम्बई, १० सितम्बर

रेलवे-जाँच-कमिटी की बैठक आज फिर बम्बई में हुई। रेलवे श्रमजीवी-सङ्घ की ओर से श्री० जमनादास मेहता की गवाही हुई। श्री० जमनादास ने कहा कि रेलवे श्रमजीवी-सङ्घ और रेलवे-बोर्ड के झगड़े के बीच की सभी बातें जाँच-कमिटी के सामने नहीं लाई गई हैं। बम्बई में अपना काम समाप्त करने के बाद जाँच-कमिटी मद्रास, कलकत्ता, नागपुर सदृश अन्य प्रमुख नगरों को भी जायगी।

चीफ़ कमिश्नर खड्ड में गिर कर मर गए

शिमला, १० सितम्बर

सीमा प्रान्त के चीफ़ कमिश्नर सर स्टुअर्ट पियर्स कल शाम को नाथियागाली के पास एक गहरे खड्ड में गिर कर मर गए। जब यह भीषण दुर्घटना हुई तो उनकी पत्नी भी उनके साथ थीं।

कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी

मिलों के सम्बन्ध में निर्णय

अहमदाबाद, १० सितम्बर

कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी ने, मिलों को स्वीकृत सूची से अलग करने वाली कमिटी से कहा कि उन मिलों से जो कि प्रति दिन दस घण्टे से अधिक कार्य कराती हैं, प्रति दिन दस घण्टे के अनुसार कार्य करने और जिन मिलों में मज़दूरी कम हो गई है वहाँ फिर वही मज़दूरी देने के लिए कहा जाय। कमिटी को अधिकार दिया गया है कि उपरोक्त प्रार्थना के अनुसार कार्य न होने पर, वह नियमानुसार नोटिस और समय देकर स्वीकृत मिलों की सूची से उनके नाम हटा दे।

—तञ्जोर का समाचार है कि दो कॉङ्ग्रेस वालण्टियरों से नेक-चलनी की ज़मानतें माँगी गई थीं। इन्कार करने पर उनको छः-छः मास की सादी क़ैद की सज़ा दी गई।

रण्डियों के मकानों पर पिकेटिङ्ग

पेशावर के ख़िलाफ़त वालन्टियरों ने वहाँ के म्युनिसिपल बोर्ड को १५ दिन की नोटिस दिया था कि रण्डियों को शहर से हटा दिया जाय। उस मियाद के ख़त्म हो जाने पर ९ सितम्बर से वालन्टियरों ने रण्डियों के मकानों और उनके पास के बाज़ारों पर शान्तिमय पिकेटिङ्ग आरम्भ कर दी है। इसके फल से वह मुक़ाम, जहाँ सदा चहल-पहल रहा करती थी, सुनसान पड़ा है।

९३ रुपए भूमि-कर के लिए गिरफ़्तारी

किरावली (आगरा) के एक प्रसिद्ध ज़मींदार श्री० शिवदयाल पालीवाल, जो कि वहाँ की तहसील कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रेज़िडेण्ट भी हैं, भूमि-कर के ९३ रुपए अदा न करने के लिए गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। वे किसी कार्यवश तहसीलदार की कचहरी में गए थे। वहीं उनको पकड़ कर हवालात में बन्द कर दिया गया।

—डॉ० नेविल वेमेएट पटने से प्रकाशित होने वाले 'इण्डियन नेशन' नामक पत्र के सम्पादक नियत किए गए हैं। आपने लिखा है कि इस नई नियुक्ति से उक्त पत्र की नीति में कोई अन्तर न पड़ेगा और पत्र का उद्देश्य पहले के समान भारत की भलाई करना ही रहेगा। आप पहले लन्दन के 'टाइम्स' के वैदेशिक विभाग के सम्पादक थे।

हथियारों के लिए तलाशी

गत ८ सितम्बर को पुलिस ने राँची (बिहार) की ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रेज़िडेण्ट डॉ० पूर्णचन्द्र मित्र के घर और मित्र-स्टोर की तलाशी ली। तलाशी बिना लायसेन्स के हथियारों और गोली-बारूद के लिए ली गई थी, पर ऐसी कोई चीज़ नहीं मिली। पुलिस वाले कुछ पैमफ़्लेट, 'चटगाँव आरमरी रेड' के अभियुक्तों तथा भगतसिंह के फ़ोटो आदि ले गई। तलाशी ख़ुद पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट ने ली थी और पुलिस का बहुत कड़ा इन्तज़ाम था।

—काठियावाड़ की कितनी ही रियासतों में विदेशी खिलौनों की पिकेटिङ्ग और जुआ रोकने में प्रशंसनीय सफलता हो रही है। इसी जन्माष्टमी के अवसर पर स्वदेशी खिलौनों की धूम-धाम से बिक्री हुई और बड़े सुन्दर-सुन्दर खिलौने बिकने आए। राजकोट और ध्राङ्गध्रा के समान कुछ उन्नतिशील रियासतों ने अपने यहाँ मेलों में जुआ का होना भी बन्द करवा दिया है। वढ़वान, लिम्बड़ी, बरवाला, धोलेरा आदि कई नगरों में यूथ लीग के सदस्यों ने लोगों को विदेशी खिलौने न ख़रीदने और जुए में रुपया बर्बाद न करने को बड़े आग्रहपूर्वक समझाया, इस शान्तिमय पिकेटिङ्ग का फल बहुत अच्छा हुआ है और इस वर्ष काठियावाड़ की जनता का क़रीब दो-तीन लाख रुपया बचा है जो खिलौनों और जुए में नष्ट होता था।

—नागपुर में भी शाम बैङ्कर नामक पारसी नवयुवक ने बलमोरिया की शराब की दुकान पर इसलिए भूखों रह कर धरना दिया था कि वह पारसियों के नए वर्ष-दिवस पर शराब न बेचें। अब पारसी लोगों ने उस रोज़ शराब न लेने की प्रतिज्ञा कर ली है और इसलिए मि० शाम बैङ्कर भोजन करने लग गए हैं।

—मद्रास हाईकोर्ट में ५ सितम्बर को बङ्गाल, नागपुर रेलवेमेन यूनियन के भूतपूर्व सेक्रेटरी मि० एस० एस० ऐय्यर के विरुद्ध, जिन्होंने मज़दूरों को रेलगाड़ी रोकने के लिए प्रोत्साहित किया था, मामले की सुनवाई शुरू हुई। ३ कॉन्स्टेबिलों से जिरह की गई, जिन्होंने बतलाया कि अभियुक्त ने मज़दूरों को गाड़ी रोकने तथा हड़ताल करने के लिए उकसाया। मामले की सुनवाई आगामी १६ सितम्बर तक के लिए स्थगित हो गई।

गवर्नमेण्ट का व्यङ्ग !

कुडालो (मद्रास) के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड ने गवर्नमेण्ट से सड़कों की मरम्मत के लिए १,१७५) रु० की सहायता माँगी थी। इसी बोर्ड ने सत्याग्रह आन्दोलन के समय पिकेटिङ्ग के लिए एक हज़ार रुपया मञ्जूर किया था। उसकी याद दिखाते हुए स्थानीय कलक्टर ने बोर्ड को लिखा है कि "इससे मालूम होता है कि डिस्ट्रिक्ट बोर्ड को सड़कों के लिए आवश्यक धन का प्रबन्ध स्वयम् ही कर लेना चाहिए। गवर्नमेण्ट खेदपूर्वक बोर्ड की इस सहायता की प्रार्थना को अस्वीकार करती है।"

पटना बम-केस

अभियुक्त बरी कर दिए गए

पटना के सिटी मैजिस्ट्रेट ने राय महेन्द्रप्रसाद और अन्य अभियुक्तों को, जो पटना बम-काण्ड के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए थे, सन्तोषजनक गवाही न मिलने से छोड़ दिया।

सम्पादक पर सरकार का कोप

पाठकों को स्मरण होगा कि हाल में कलकत्ते के 'श्रमिक' नामक बङ्गला साप्ताहिक पत्र के सम्पादक श्री० रमणीरञ्जन गुह राय को राजद्रोह के अभियोग में छः मास का कठिन कारागार दण्ड मिला था। अब उन पर चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट की अदालत में एक नया मुक़दमा दफ़ा १५३ ए (विभिन्न दलों में घृणा फैलाना) के अनुसार चलाया गया है। 'श्रमिक' में एक लेख प्रकाशित हुआ था, जिसका शीर्षक था—"ए सफ़ेद व्यापारी" उसीके लिए यह मुक़दमा चलाया गया है।

—ढाका का समाचार है कि बारी पोस्ट की डकैती के सम्बन्ध में नीरोद गुहा और धीरेन सेन, दो नवयुवक गिरफ़्तार किए गए हैं। कहा जाता है कि पोस्ट ऑफ़िस के चपरासी ने जिससे रिवॉल्वर दिखला कर रुपया छीना गया था, नीरोद गुह की शनाख़्त की है।

—मैमनसिंह में पुलिस ने प्रान्तीय वालण्टियर-दल के एक प्रमुख सदस्य श्री० विनोदविहारी चक्रवर्ती के घर की तलाशी ली। वे कलकत्ता में 'बङ्गाल क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट' के अनुसार गिरफ़्तार किए जा चुके हैं। पुलिस ने डेढ़ घण्टे तक तलाशी ली, पर कोई चीज़ आपत्तिजनक नहीं मिली।

—'मज़लूमी ख़ानदान का ख़ूनी दास्तान' श्री० मुहम्मद महताब कृत तथा 'नारा-ए-जङ्ग' सय्यद अली हुसेन कृत नामी पुस्तिकाओं को पञ्जाब-सरकार ने इण्डियन स्टेट्स एक्ट की धारा ३ तथा भारतीय दण्ड-विधान की धारा १२४ ए के अनुसार ज़ब्त कर लिया है।

—अहमदाबाद का १० सितम्बर का समाचार है कि हिन्दुस्तानी सेवादल के केन्द्रीय बोर्ड की रिपोर्ट पर विचार करने के बाद कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी ने स्वयंसेविकाओं के सङ्गठन के विषय में निश्चय किया है कि जब तक स्वयंसेविकाओं की केन्द्रीय कमिटी नहीं क़ायम हो जाती या उस सम्बन्ध में दूसरे प्रबन्ध नहीं हो जाते तब तक रिपोर्ट में दी गई सलाह के अनुसार एक स्त्री सङ्गठनकर्ता सलाहकार की हैसियत से नियुक्त कर दी जाय। केन्द्रीय बोर्ड को इस नियुक्ति का और इस सम्बन्ध में दूसरी आवश्यकीय कार्रवाइयों के करने का अधिकार दिया गया है।

—अजमेर की नौजवान भारत-सभा, समाचार-पत्रों के ऑफ़िसों तथा शहर के अन्य बहुत से स्थानों की स्थानीय सी० आई० डी० ने क्रान्तिकारी-साहित्य के लिए तलाशियाँ लीं। परन्तु कहीं भी कोई आपत्तिजनक वस्तु नहीं मिली।

पुलिस और बंगाली युवकों में युद्ध

हथियारों सहित दो नवयुवक गिरफ़्तार

देवेन्द्रनाथ भट्टाचार्य (उम्र २२ साल) और श्यामबिहारी मुकर्जी (उम्र २६ साल) नामक दो बङ्गाली नवयुवकों को पुलिस ने भद्रेश्वर के पास, जो ईस्ट इण्डियन रेलवे का एक स्टेशन है, गिरफ़्तार किया है। कहा गया है कि वे चिनसुरा के पास ग्राण्ड ट्रङ्क रोड पर एक टैक्सी गाड़ी को रोक कर उस पर सवार हुए और कुछ दूर जाने पर गाड़ी के ड्राइवर को पिस्तौल से धमका कर नीचे उतार दिया। ड्राइवर ने मानकुण्डू नामक स्टेशन पर जाकर इस घटना की इत्तला दी। वहाँ के स्टेशन-मास्टर ने रेलवे-पुलिस को सूचित कर दिया। जब वे युवक मोटर में भद्रेश्वर और वैद्यवटी के लेविल क्रॉसिङ्ग पर पहुँचे तो पुलिस ने उनको ठहरा कर पकड़ना चाहा। इस पर दोनों पक्षों में झगड़ा हुआ और दोनों युवकों तथा एक हेड-कॉन्स्टेबिल को चोट लगी। तलाशी लेने पर उनके पास एक भरा हुआ छः नली रिवॉल्वर और एक ख़ञ्जर मिला। भट्टाचार्य के पास लखनऊ से हबड़ा तक का टिकिट भी पाया गया, और मालूम हुआ कि वह लखनऊ का रहने वाला है। वे दोनों इज़्ज़तदार घरानों के लड़के हैं और उनमें से एक बी० एस-सी० पास है। पुलिस ने उनको सीरामपुर के सब-डिवीज़नल ऑफ़ीसर के सामने पेश किया और वे हवालात में भेज दिए गए।

बर्मा में पुलिस और विद्रोहियों की मुठभेड़

बन्दूकें, बम, तोपें तथा अन्य अस्त्र-शस्त्र मिले

बर्मी विद्रोहियों के दो और कैम्पों को पुलिस और फ़ौजी सिपाहियों ने नष्ट कर डाला। पहले कैम्प में कितने विद्रोही नेता मारे गए, एक घायल हुआ और तीन गिरफ़्तार कर लिए गए। विद्रोहियों ने भी सरकारी सिपाहियों पर गोलियाँ चलाईं, पर किसी को चोट नहीं लगी। कैम्प में छः बन्दूकें, बहुत से बम और दूसरे हथियार मिले। दूसरे कैम्प में से विद्रोही पहले ही ग़ायब हो गए, सिपाहियों को वहाँ तीन देशी तोपें मिलीं। प्रोम नामक स्थान, में २५-३० विद्रोहियों ने एक गाँव में डाका डाला, जिसमें एक देहाती मारा गया। रङ्गून शहर के बिलकुल पास एक बर्मी घर पर भी डाका पड़ा, जिसमें डाकू पुरुष और स्त्रियों को मार-पीट कर दो हज़ार का माल ले गए। और भी कितने ही क़स्बों से डाके की ख़बरें मिली हैं।

स्वामी गोविन्दानन्द गिरफ़्तार

करांची, ६ सितम्बर

अखिल भारतीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के सदस्य और सिन्ध के सुप्रसिद्ध नेता स्वामी गोविन्दानन्द जी आज दोपहर को राजद्रोह के अपराध में गिरफ़्तार कर लिए गए। गिरफ़्तारी के पहले अपने सन्देश में आपने यह
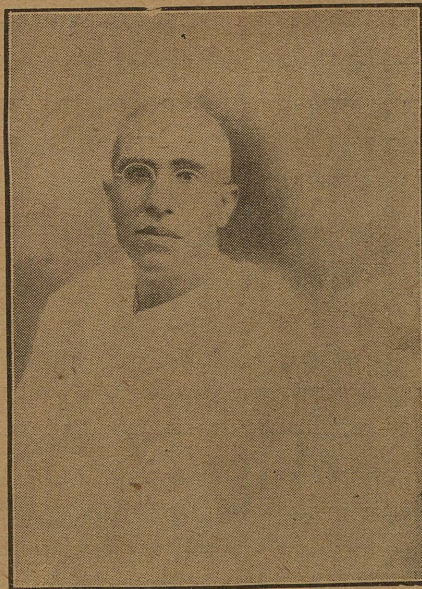
स्वामी गोविन्दानन्द

कहा कि उनकी गिरफ़्तारी दिल्ली-समझौते की शर्त का स्पष्ट रूप से तोड़ा जाना है, परन्तु अपने अनुयाइयों से आपने पूर्ण रूप से अहिंसा का पालन करने और बिलायती चीज़ों का बॉयकाट करने को कहा।

"पूँजीवाद का नाश हो"

बम्बई में प्रेस-कर्मचारियों का जुलूस

बम्बई के 'डेली मेल' में काम करने वाले प्रेस कर्मचारियों का एक जुलूस 'बम्बई प्रेस वर्कर यूनियन' की अध्यक्षता में निकला। जुलूस "इन्क़िलाब ज़िन्दाबाद", "प्रेस मज़दूर ज़िन्दाबाद", पूँजीवाद का नाश हो"—आदि के नारे लगाता हुआ फ़ोर्ट में घूमा। ये लोग "टाइम्स ऑफ़ इण्डिया" "बॉम्बे क्रॉनिकल" और "फ़्री प्रेस" आदि ऑफ़िसों के सामने गए और नेताओं ने उन स्थानों के कर्मचारियों के सामने 'डेली मेल' के कर्मचारियों की दुर्दशा का वर्णन किया। ये लोग 'डेली मेल' प्रेस के बन्द कर दिए जाने से बेकार घूम रहे हैं और उनको पिछले सात महीने से एक पाई भी नहीं दी गई है। भाषणकर्ताओं ने बतलाया कि पूँजीवाद में लोगों की रक्षा कैसी अनिश्चित रहती है। जुलूस में कुछ चन्दा भी इकट्ठा किया गया। कितने ही प्रेसों के कर्मचारियों की एक विशाल सभा 'डेली मेल' के ऑफ़िस के सामने की गई।

—संयुक्त-प्रान्तीय सेवा-दल प्रान्त के स्वयंसेवकों को ट्रेनिङ्ग देने के लिए बनारस में शिविर क़ायम करने का प्रबन्ध कर रहा है। ट्रेनिंग १६ सितम्बर को प्रारम्भ होगी।

—रायपुर (सी० पी०) की म्युनिसिपैलिटी के चुनाव में कॉङ्ग्रेस वालों को पूर्ण सफलता मिली है और सदस्यों में बहुमत कॉङ्ग्रेस का ही है। श्री० वामनराव लाखे नाम के एक प्राचीन कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ता बिना विरोध के चेयरमैन नियुक्त किए गए हैं।

चटगाँव की भीषण लूटमार और पुलीस की नृशंसता

अब तक चटगाँव के सम्बन्ध में जो हाल छपे हैं, उनसे भी अधिक भयङ्कर बातों का हाल में उद्घाटन हुआ है। इन बातों को सुन कर बहुतों को स्यात् आश्चर्य होगा और कह उठेंगे कि ब्रिटिश राज्य में ऐसा होना असम्भव है।

३१ अगस्त को प्रातःकाल से तीसरे पहर तक मुसलमान लोग स्वच्छन्दता से लूट व ताराज करते रहे, पुलीस खड़ी देखती रही। पुलीस की आँखों के सामने सड़कों पर लुटेरे मुसलमानों ने लूट के माल का हिस्सा-बखरा किया।

लूटे हुए माल की रवानगी

सोमवार को तीसरे पहर दो बजे कमिश्नर साहब राँगामाटी होकर चटगाँव को लौटे। उस समय सैकड़ों नावों पर दाल, चावल के बोरे, टिनों में मिट्टी का तेल, सरसों का तेल, कपड़ों की गाँठें, पीतल, काँसा और अनेक बिसाती बाने की चीज़ें लादे हुए लुटेरे कर्णफूली नदी के पार उतर रहे थे। क्या कमिश्नर को यह नहीं मालूम था कि वह चटगाँव के हिन्दुओं का लूटा हुआ माल है? यह सुई नहीं थी, न सौदागरों का काफ़ला था। कमिश्नर ने इस अजीब बात को देख कर कम से कम पूछा तो ज़रूर होगा कि आख़िर मामला क्या है? ख़ैर।

पुलीस की करतूत

इसी रात को १५-१६ दलों में दारोग़ा, सारजण्ट, कॉन्स्टेबिल, गोरखा पलटन के सिपाही वग़ैरह बन्दूक़, रिवॉलवर, लाठी, डण्डा लेकर अलग-अलग रात में ११ बजे निकल पड़े और नगर के बहुत से मकानों की तलाशी ली। आधी रात के सन्नाटे में जब लोग पड़े सो रहे थे, यह प्रजा-रक्षक-दल के लोग नागरिकों के घरों में घुस पड़े और मार-काट शुरू कर दी। आलमारी, सन्दूक़, बक्स, ट्रङ्क, शीशी और बोतलें, डण्डों, लाठियों और बन्दूक़ के कुन्दों से तोड़ डाली गईं।

इन लोगों ने पञ्चजन्य प्रेस में घुस कर प्रेस की मेशीन हथौड़ी से तोड़ी, ऑयल इञ्जिन और इलेक्ट्रिक मोटर चूर-चूर कर डाला, टाइप, काग़ज़, हिसाब-किताब के काग़ज़, सबको ख़ूब नष्ट किया। पुलीस ने ऐसा अमानुषिक अत्याचार एक जगह नहीं, कई जगह किया। साफ़ मालूम होता है कि पुलीस की इस प्रकार की उद्दण्डता का मतलब नगर-निवासियों में त्रास फैलाना था।

चटगाँव के और पास के गाँवों में भी कम अत्याचार नहीं हुआ। सोमवार को प्रभात में एक पुलीस कर्मचारी, गोरखा और सारजण्ट को साथ लेकर पटिया नामक ग्राम में गये और वहाँ म्युनिसिपिल पुलिस के साथ मिले। इन लोगों ने जो उपद्रव पटिया और उसके आसपास के गाँव में मचाया वह जल्दी सच मानना भी कठिन होता है। इस घटना के सम्बन्ध में पटिया के बार एसोसिएशन ने जो प्रस्ताव ग्रहण किया है, वह हमें परिस्थिति बतलाने के लिए पर्याप्त है :—

"दुःख है कि ३ अगस्त को ११ बजे दो यूरोपियन कर्मचारी कितने ही हथियारबन्द सिपाहियों को लेकर अकस्मात् पटिया के दो हाई स्कूलों में घुसे और अनायास ही हिन्दू लड़कों को लाठी और बेत से पीटने लगे और बड़ी निर्दयता से मारा। एक-एक बच्चे को खींच कर बेञ्च पर सुला दिया, दो सिपाहियों ने उनके हाथ-पैर मज़बूती से पकड़ लिए, तीसरे ने उनके बदन को नङ्गा कर दिया और चौथे ने उन्हें बेत मारते-मारते रक्ताक्त करके बेहोश दशा में छोड़ा।"

पटिया के सिवा पास के एक ग्राम में स्वर्गीय प्रसन्न सेन के मकान में पुलीस और गोरखा घुस गए और जो अत्याचार किया वह भी कम भयानक बात नहीं है।

जाँच-कमिटी

कलकत्ते से एक ग़ैर-सरकारी जाँच कमेटी ७ सितम्बर को प्रातःकाल चटगाँव पहुँची है। इसके सामने कई दिन तक फ़ौजी पुलीस ने जो-जो अत्याचार किए थे, उनका विस्तृत विवरण जनता ने रक्खा। इस जाँच से साफ़ साबित है कि ऊँचे अफ़सर के आदेश के अनुसार गोरखा पुलीस ने रामकृष्ण विश्वास, प्रसन्न सेन, हरीपद भट्टाचार्य (जो ख़ानबहादुर अमानुल्ला की हत्या करने के सन्देह में पकड़े गए हैं), अस्त्रागार लूटने का एक भागा हुआ मुल्ज़िम तारकेश्वर दस्तादार के मकानों को मिट्टी का तेल डाल कर उनमें आग लगा दी गई, जिससे वह बिलकुल जल गए। हरीपद के घर जलने का दृश्य हरीपद को ले जाकर दिखलाया गया।

इसके अतिरिक्त श्रीपूर में ४, खारणद्वीप में ६, कानूनगो पाडा में ८, पिंडाताली में १६, हौला गोताली में भी कई एक घरों को नुक़सान पहुँचाया गया है, असबाब वग़ैरह को भी क्षति पहुँची है। कई फ़ौजदारी के मुक़द्दमे चल रहे हैं।

श्री० सेन गुप्त को डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट का पत्र

जाँच कमिटी के प्रमुख श्रीयुत सेन गुप्त को ट्रेन के कमरे से उतरने के पहले ही डि० मैजिस्ट्रेट का एक पत्र डिप्टी मैजिस्ट्रेट की मारफ़त मिला। इस पत्र में लिखा था सेन गुप्त को चटगाँव पहुँच कर डि० मैजिस्ट्रेट से मिलना चाहिए, डि० मैजिस्ट्रेट अवस्था की गुरुता उन्हें ख़ूब समझा देंगे।

सेन गुप्त का उत्तर

श्रीयुत सेन गुप्त ने पत्र के उत्तर में कहा कि मैं जाँच कमिटी के दूसरे सदस्यों तथा चटगाँव के हिन्दू-मुसलमान नेताओं से बिना परामर्श किए मैजिस्ट्रेट की इस बात के अनुसार काम नहीं कर सकता।

चटगाँव पहुँच कर श्रीयुत सेन गुप्त ने दूसरे सदस्यों और नेताओं से परामर्श किया। परामर्श में निश्चय हुआ कि श्रीयुत सेन गुप्त डि० मैजिस्ट्रेट से मिलें, ताकि सरकार-पक्ष की गवाहियों का भी बयान हो सके। अगर डि० मैजिस्ट्रेट न माने तो उससे कहा जाय कि दूसरे पक्षों की गवाहियों के बयान लेवे और सरकारी कर्मचारियों के विरुद्ध शिकायत आवे तो वह उसका उत्तर दे सके, अथवा सारा मामला विशद-रूप से समझा कर मैजिस्ट्रेट साहब एक विज्ञप्ति निकालें। इसके अनुसार श्रीयुत सेन गुप्त जाकर पहले कमिश्नर नेलसन से मिले, थोड़ी ही देर में मैजिस्ट्रेट भी वहाँ ही आ गए। इन लोगों से श्री० सेन गुप्त की डेढ़ घण्टा तक बातचीत होती रही, अन्त में निश्चय हुआ कि श्री० सेन गुप्त के प्रस्ताव पर कमिश्नर और मैजिस्ट्रेट विचार करेंगे और इस मामले को प्रान्तिक-सरकार तक भी पहुँचाया जा सकता है।

सरकार की तरफ़ से विश्वास दिलाया गया है कि सरकार इस जाँच कमिटी के काम में बाधा न डालेगी और जाँच कमिटी के सदस्यों की सुविधा के लिए कर्फ़्यू ऑर्डर भी बदल दिया जायगा। हाल में कर्फ़्यू ऑर्डर आठ बजे रात से आरम्भ होता है।

जाँच कमिटी ने अपना काम शुरू कर दिया है, लोगों में कुछ शान्ति आई है व घबराहट कम हुई है।

नरपिशाच ससुर का भयंकर कृत्य

पतोहू को जलते हुए करछुल से मार डाला

लखनऊ के चीफ़ कोर्ट में मनीराम पासी नामक व्यक्ति ने फाँसी की सज़ा के विरुद्ध अपील की है। अभियुक्त ज़िला बाराबङ्की का रहने वाला है और वहाँ के सेशन जज ने उसे अपनी पतोहू की हत्या करने के अपराध में फाँसी की सज़ा दी थी। हत्या का कारण यह बतलाया जाता है कि उसकी पतोहू ने, जिसका नाम मेकी था और जिसकी उम्र केवल नौ वर्ष की थी, अपने ससुर की रोटी को खा लिया, इस पर उस नरपिशाच ने एक करछुल आग में डाल कर लाल किया और उससे ग़रीब बालिका के बदन भर को दाग दिया। उसने करछुल को उसके बदन पर इतनी देर तक दबाए रखा जब तक कि उसकी खाल ही नहीं, वरन् मांस तक जल गया। बदन का कोई भाग जलने से नहीं बचा है। गुप्त अङ्गों तक को निर्दयता के साथ दागा गया है। इसके फल से लड़की दो रोज़ बाद तड़प-तड़प कर मर गई। चीफ़ कोर्ट के जजों ने यह स्वीकार करते हुए कि अभियुक्त ७० वर्ष का बूढ़ा आदमी है और इस दृष्टि से फाँसी का दण्ड बहुत कड़ा है, फ़ैसला किया कि उसका क़सूर बहुत भयङ्कर और जघन्य है। इसलिए उसकी अपील रद्द कर दी गई।

एक हिन्दू देवी की बहादुरी

अकेली चार सशस्त्र डाकुओं से लड़ती रही

लाहौर के मेयो अस्पताल में एक हिन्दू-स्त्री अपने पति के साथ घायल होकर आई है। कहा जाता है कि एक दिन उसका पति, जिसका नाम विष्णुदत्त है और जो लाहौर के कूचा गुरुदत्तसिंह नामक स्थान में दुकान करता है, रात को सर्कस देखने गया और दो बजे लौट कर घर आया और जहाँ उसके बच्चे और बीबी सोए थे, वहीं सो गया। थोड़ी देर के बाद चार सशस्त्र डाकू उसके घर में घुस आए और विष्णुदत्त तथा उसकी स्त्री को जगाकर कहा कि अपने सब गहने और नक़द रुपए लाकर दे दो, नहीं तो तुम्हारे लड़के क़तल कर दिए जावेंगे। यह सुनते ही विष्णुदत्त की स्त्री आगे बढ़ी और डाकुओं को धक्के देकर कोठे से नीचे गिरा दिया। इसके बाद उसने बच्चों को जगाया और एक कोठरी में उन्हें बन्द करके डाकुओं के सामने आ डटी और उनके साथ लड़ने लगी। परन्तु डाकुओं के पास तेज़ धार वाले हथियार थे, इसलिए उन्होंने उसे तथा उसके पति को बुरी तरह घायल कर दिया। अन्त में बहादुर स्त्री ने एक डाकू का छुरा छीन लिया और उसकी छाती पर चढ़ बैठी। इतने में तमाम महल्ले में खलबली मच गई। बहुत से आदमी एकत्र हो गए और डाकू पकड़ लिए गए।

रूस का पञ्चवर्षीय आयोजन और श्री० जॉर्ज बर्नर्ड शा

[श्री० मथुरालाल जी शर्मा एम०, ए०, डी-लिट्]

श्री० जॉर्ज बर्नर्ड शा वर्तमान इङ्गलैण्ड के एक प्रमुख लेखक हैं। उनके रचे हुए उपन्यास, नाटक और गल्पें अङ्गरेज़ी भाषा-भाषी संसार में तो चाव से पढ़ी ही जाती हैं, साथ ही यूरोप की सब प्रधान भाषाओं के सिवा चीनी, जापानी और तुर्की भाषाओं में भी उनके कई ग्रन्थों के अनुवाद हो चुके हैं। इस समय इङ्गलैण्ड के रङ्ग-मञ्चों पर, सिनेमा घरों में, मीमांसा-पत्रों में और क्लबों में सर्वत्र बर्नर्ड शा की चर्चा रहती है। यदि मि० शा किसी नई पुस्तक की रचना करते हैं तो प्रकाशक लोग उस पर टूट पड़ते हैं, समाचार-पत्रों के पन्ने उसकी आलोचना से भरे रहते हैं और पुस्तकालयों तथा विद्यालयों में उसकी धूम मच जाती है। जब मि० शा का कोई नाटक प्रकाशित होता है, तो इङ्गलैण्ड के ऐक्टर उसका अभिनय करने में अपना चातुर्य प्रकट करने लगते हैं और सिनेमा कम्पनी उसका चित्र तैयार करने में लग जाती हैं। बर्नर्ड शा उच्च श्रेणी के साहित्यिक होने के साथ ही एक तीव्र सोशलिस्ट अर्थात् साम्यवादी हैं। साम्यवादी जनता में उनके ग्रन्थ का बड़ा प्रचार है। और उनकी प्रत्येक रचना में साम्यवादी विचारों का इतनी सुन्दरता के साथ समावेश होता है कि पाठक को यह पता नहीं लगता कि साम्यवाद का प्रचार करने के निमित्त ही उस ग्रन्थ की रचना की गई है! अभी थोड़े दिन हुए, मि० शा रूस गए थे। वहाँ की स्थिति का आपने बड़ी सूक्ष्मता से निरीक्षण किया है और उस पर अपने विचार प्रकट किए हैं। रूस के विषय में इस समय अनुकूल और प्रतिकूल दोनों प्रकार का विपुल साहित्य तैयार हो गया है, इसके कारण वहाँ की वास्तविक स्थिति का पता लगाना बड़ा कठिन है। मि० शा ने सोशलिस्ट की हैसियत से बड़ी सहानुभूति के साथ रूस की सब बातें देखी हैं और अपनी ओजस्विनी तथा हृदय-हारिणी भाषा में उसका बड़ा सुन्दर वर्णन किया है। हम मि० शा के लेख का निम्न पंक्तियों में भावानुवाद देते हैं, जिससे पाठकों को रूस की स्थिति का ज्ञान होगा तथा साथ ही मि० शा की ओजपूर्ण शैली का भी अनुमान हो सकेगा :—

"इस समय जिनसे हो सके उन्हें रूस जाना चाहिए। मेरा यह अभिप्राय नहीं है कि अधिकांश लोग जा सकते हैं। आने-जाने और वहाँ रहने के ख़र्चे को सहन करना साधारण आदमियों के लिए कठिन है, परन्तु फिर भी जिनसे हो सके उन्हें जाना चाहिए। मैं यह सलाह इसलिए देता हूँ कि जिस सोशलिज़्म की मैं कल्पना किया करता था, जिसका प्रचार मेरे जीवन का सुख-स्वप्न था, वही सोशलिज़्म, वही वैषम्य का अभाव रूस में कार्य-रूप में परिणत हो गया है। रूस के शासन-विधान की आधार-शिला सोशलिज़्म है। वहाँ के शासन का सर्व-प्रथम सिद्धान्त है, रूस में न किसी को छोटा माना जावे, न किसी को बड़ा। रूस ने व्यक्तिगत सम्पत्ति का अन्त कर दिया है और पूँजीवाद को तिलाञ्जलि दे दी है। रूस एक ऐसा देश है, जिसने कल्पना को वास्तविकता का रूप देकर संसार के सामने एक आश्चर्यजनक आदर्श उपस्थित किया है। इसीलिए मैं कहता हूँ कि रूस जाओ। जिन देशों में पूँजीवाद की प्रधानता है, वहाँ के सोशलिस्ट लोगों को साम्यवाद के वर्तमान स्वरूप का कुछ पता नहीं। वे एक अदृश्य और अपरिचित पदार्थ की खोज में हैं। वे सोशलिज़्म की कल्पना करते हैं, पर उन्हें उसके दर्शन नहीं होते। आप रूस में जाइए और अपनी निराकार भावनाओं की साकार प्रतिमा का दर्शन कीजिए। आप रूस में जिधर जाएँगे, उधर ही आपको आश्चर्यकारी दृश्य दिखाई देंगे। मैं आप लोगों को रूस का सर्वाङ्ग चित्र नहीं दिखा सकता। केवल उसके कुछ अङ्गों का ख़ाका आपके सामने खड़ा करूँगा।

जिस बात को जान कर मुझे सब से अधिक सन्तोष हुआ, वह थी रूस का 'फ़ेबियन सोशलिज़्म' है। स्टेलियन और ट्रॉटस्की यदि इस बात को सुनेंगे तो बहुत हँसेंगे। परन्तु फ़ेबिन वास्तव में क्रान्तिकारी नहीं था। सामाजिक और आर्थिक विषमता उसे शूल सी चुभती थी, परन्तु सिद्धान्ततः वह यही चाहता था कि किसी शान्तिमय उपाय से जगत में समानता की स्थापना हो। यही रूस में हो गया है। आप आश्चर्य मत कीजिए। मैं फिर कहूँगा कि रूस में फ़ेबियन सोशलिज़्म की स्थापना हो चुकी है, मैं आपको और भी अधिक आश्चर्यकारी बात सुनाऊँगा। आप रात-दिन सुनते और पढ़ते हैं कि रूस नास्तिक हो गया, वहाँ के गिरजाघर किसानों के क्लब बन गए, बाइबिल का पठन-पाठन त्याग दिया गया। लेकिन रूस में भ्रमण करने से मेरी यह धारणा हुई है कि वह बड़ा धार्मिक देश है। मैंने वहाँ के लोगों से कहा कि थर्ड इण्टर-नेशनल (तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय) एक धार्मिक संस्था है तो लोगों को बड़ा अचम्भा हुआ, बड़ी हँसी आई। फिर भी मैंने कहा कि रूस का सोशलिज़्म, फ़ेबियन सोशलिज़्म है और वह धर्ममय है।

मुझे बहुत सी बातें कहनी चाहिए, परन्तु मैं इधर-उधर की केवल दो-चार बातें ही कहूँगा। जिस शीघ्र-गति के साथ रूस में परिवर्तन हो रहे हैं, उस पर अचम्भा हुए बिना नहीं रह सकता। हम कल्पना करते हैं, वे कार्य करते हैं। उनकी कहाँ तक प्रशंसा की जाय। वास्तव में उनकी शैली, उनका आयोजन, सब प्रशंसा के योग्य हैं। रूस की शासन-मैशीन के पुर्ज़ों में तेल डाला जाता है, परन्तु हमारे यहाँ तेल के स्थान पर बालू से काम लिया जाता है। फलतः रूस का शासन शान्ति, सुगमता और निरुपद्रव के साथ चल रहा है। परन्तु हमारे यहाँ इस मैशीन से निरन्तर कर्णकटु और दुखदायी शोर होता रहता है। रूस में शासन-यन्त्र बिना सङ्घर्ष (Friction) के चलता है। हमारे यहाँ पूँजीपतियों की भीड़ है और अधभूखे श्रमजीवियों की भरमार। मज़दूर लोग अपने निरन्तर परिश्रम के बदले में पेट भरने के लिए रोटियाँ और तन ढँकने के लिए कपड़ा भी कठिनता से प्राप्त कर सकते हैं। हमारी जीवन-शैली का मूल-आधार अत्यन्त भयावह है। पूँजीपति अधिकाधिक लाभ प्राप्त करना चाहता है और मज़दूरों को कम से कम वेतन देना चाहता है। उधर मज़दूर लोग अधिक से अधिक मज़दूरी लेना चाहते हैं और कम से कम काम करना चाहते हैं। इससे सङ्घर्ष उत्पन्न होकर सामाजिक जीवन द्वेष, कषाय (लोभ) और प्रतिस्पर्धा से कलुषित हो जाता है। सुन्दरता के स्थान में भयङ्करता, मधुरता के स्थान में कटुता, प्रेम के स्थान में घृणा, समन्वय के स्थान में पार्थक्य और सहयोग के स्थान में बहिष्कार, यह दृश्य हमारी विषम पद्धति का फल है।

मैं मास्को नगर की एक बिजली-फ़ैक्टरी में गया। वह दिन मुझे अब तक याद है। मैं प्रत्येक दृश्य को देखने के लिए अपनी आँखों को सदैव खुली रखता था। मैं रूस में यह देखने के लिए नहीं गया था कि पूँजीवाद के समय की कितनी निर्धनता और मूर्खता वहाँ अब भी बाक़ी है। यह तो मैं अपने कमरे के अन्दर बैठा हुआ लन्दन में ही देख सकता हूँ। मैं रूस की उत्तमता देखने गया था। मैं जानना चाहता था कि साम्यवाद की कल्पना को किस हद तक साकार-स्वरूप दिया जा चुका है। जब मैं इस फ़ैक्टरी में था, एक नवयुवक को मुझसे मिलाया गया। उसके कोट पर एक तमग़ा लगा हुआ था और उसके चेहरे पर सफलता-प्राप्ति का गर्व था। उसकी क्षमता में विश्वास टपकता था। पूछने पर मुझे मालूम हुआ कि पञ्चवर्षीय आयोजन को पूरा करने के लिए उस फ़ैक्टरी में उसने ही सब से पहले उत्साह प्रकट किया था और अपने साथियों को आकर्षित किया था। मैंने उससे कहा—"नवयुवक, यदि तुम इङ्गलैण्ड में होते और तुमने यहाँ जितना काम किया, इससे दुगुना भी काम करते तो भी तुम्हारी प्रसिद्धि नहीं हो सकती थी, बल्कि तुमको मक्कार समझा जाता। कम से कम पहले तो ऐसा ही हुआ करता था। अब पता नहीं, इस समय क्या हो। इतना काम करने पर शायद तुम इस ख़तरे में पड़ जाते कि कोई तुम्हारा साथी ईंट से तुम्हारा सिर फोड़ डाले। अगर जीवन में तुम इसी दिलचस्पी से काम करना चाहते हो तो तुम रूस में ही रहो।" मेरा विश्वास है कि ऐसा काम करने वाला मज़दूर अपने मज़दूर भाइयों में इङ्गलैण्ड में बदनाम हुए बिना नहीं रह सकता। यह हमारी मैशीन में रेत के चिह्न हैं। इस समय विश्वव्यापिनी वाणिज्य-शिथिलता है, परन्तु फिर भी मेरा विश्वास है कि इङ्गलैण्ड के पूँजीपति कोई क्षति नहीं उठा रहे हैं। बल्कि दिन-दिन मालामाल होते जा रहे हैं। इस रोग की एक मात्र औषधि, मेरी राय में, यह है कि हम भी पञ्चवर्षीय आयोजन का अनुसरण करें और अमेरिका भी इसका अनुसरण करे।

क्या कारण है कि हम यहाँ पञ्चवर्षीय आयोजन को हाथ में नहीं ले सकते? रूस में बड़ी सुगमता से इसका आरम्भ कर दिया गया और बड़ी उत्तमता के साथ वहाँ इसका कार्य चल रहा है। फिर हमारे लिए कौन सी कठिनता है? आप जानते हैं कि आजकल रूस के कारख़ानों में क्या आवाज़ सुनाई देती है। लोग प्रायः कहते हैं—"रूखा-सूखा जैसा मिले वैसा खाओ, विलास की चिन्ता छोड़ो और पाँच वर्ष तक मन लगा कर अनवरत परिश्रम करो। पञ्चवर्षीय आयोजन सफल होना चाहिए।" कारख़ानों में ऐसे प्रोत्साहन का अनुमोदन होता है और मज़दूर लोग बड़े चाव से काम करते हैं। आप इङ्गलैण्ड में यह बात कहें तो क्या आप जानते हैं कि क्या उत्तर मिलेगा? मज़दूर कहेंगे, जी हाँ, हम पाँच वर्ष तक स्वादिष्ट भोजन से वञ्चित रहें, और पेट बाँध कर पूँजीपतियों की पूँजी को बढ़ावें, जिसके कारण उनकी सुस्ती और उनकी उपेक्षा और भी बढ़े। हम तो मज़दूर हैं और हमारा काम है अधिक से अधिक मज़दूरी लेना और कम से कम काम करना। रूस में आपको ऐसा उत्तर नहीं मिलेगा। वहाँ के मज़दूर जानते हैं कि पञ्चवर्षीय आयोजन से जो लाभ होगा वह उनमें विभक्त कर दिया जायगा।

रूस के विषय में कुछ ऐसी बातें हैं, जिनको सुन कर आपको आश्चर्य होगा। वहाँ आपको अपने रहने के मकान का किराया देना पड़ता है। चाहे आपका अपना मकान हो तो भी वह अपना नहीं माना जाता। रूसी

लोगों को अदब का अधिक ख़याल नहीं है। प्रसन्नता-पूर्वक पाँच रूसी एक कमरे में रह सकते हैं और स्थान की सङ्कीर्णता न हो तो दस तक साथ-साथ रह जाते हैं। यदि आपको इस पर आश्चर्य हो तो हो, पर मुझसे कई रूसियों ने कहा कि उनको अकेले कमरे में नींद नहीं आती। मैं एक दिन मॉस्को के स्टेट बैङ्क में गया। मैं ज़ार के राज्य-मुकुट के रत्नों को देखना चाहता था और एक हुण्डी के भी मुझे रुपए लेने थे। मैंने जाते ही कहा कि हुण्डी के सम्बन्ध में मेरे पास ऐसे प्रतिष्ठित लोगों के पत्र हैं, जिनको बैङ्क जानता है। सुनते ही एक कर्मचारी ने कहा—"इसकी चिन्ता न कीजिए, आपको चेक के रुपए अभी मिल जावेंगे।" मुझे उस समय बड़ी प्रसन्नता हुई और चाहा कि अपना सब रुपया ऐसे बैङ्क में ही जमा करना चाहिए, जहाँ ऐसी भलमनसी का बर्ताव होता हो। रूस के बैङ्कों में ब्याज भी आठ प्रतिशत सालाना तक मिलता है। मकान के किराए के विषय में हमारे देश में और रूस में इतना ही अन्तर है कि हम लोग मकान का किराया ऐसे आदमी को देते हैं, जिसके पास पहले से ही धन की प्रचुरता है और जो उस किराए को विलास या व्यभिचार में नष्ट कर डालता है। रूस में यह किराया राज्यकोष में जमा होता है और जनता के हित के लिए ख़र्च किया जाता है। आप अनुमान कर सकते हैं कि केवल लन्दन नगर का किराया ही यदि जनता के कार्यों के लिए एकत्र किया जाय, तो एक काफ़ी रक़म जमा हो सकती है। परन्तु लन्दन नगर में ऐसी बात करना या ऐसा आयोजन करना बोल्शेविज़्म, सोशलिज़्म या कम्यूनिज़्म के नाम से पुकारा जाता है। ऐसी बात करने से लन्दन में त्रास उत्पन्न हो जाता है। दूसरे शब्दों में यह कह सकता हूँ कि लन्दन के लोग मूर्ख हैं और मास्को के निवासी समझदार हैं।

यदि रूसियों से यह कहा जाय कि हम लोग मूर्ख हैं, तो उनको विश्वास नहीं होता। कम से कम उनको यह अनुमान तो कभी नहीं हो सकता कि हमारी मूर्खता इतनी उन्नत अवस्था को पहुँची हुई है। हमारे मूर्खता के कामों में भी उनको ज्ञान का भाव होता है। एक समय बात करते हुए राष्ट्रपति स्टेलिन ने एक जटिल समस्या के विषय में मुझसे कहा—"मि० शा, इसको कोई भी समझदार आदमी समझ सकता है।" मैंने कहा कि समझ का ही तो हमारे यहाँ टोटा है। परन्तु इतने पर भी उन्होंने ना माना। उनको इस बात पर विश्वास नहीं हुआ कि संसार में इस समय भी ऐसे मनुष्य हो सकते हैं, जो कम्यूनिस्ट शासन की सुन्दरता को न समझ सकें। यह बात आपके ध्यान देने योग्य है। एक साधारण से साधारण अङ्गरेज़ भी, यह विश्वास करता है कि नैतिकता और बुद्धिमत्ता में ऊँची से ऊँची श्रेणी के रूसी राजनीतिज्ञ से वह बढ़ा-चढ़ा है। यह भारी भ्रम है, जो हमको हटाना चाहिए।

नैतिक दृष्टि से एक अङ्गरेज़ एक रूसी की अपेक्षा बहुत गिरा हुआ है। बुद्धिमत्ता का तो कहना ही क्या। एटन और ऑक्सफ़ोर्ड के विद्यालयों में जो लड़कों के दिमाग़ों में भूसा भरा जाता है, उसे तो आप जानते ही हैं। रूस में कम्यूनिज़्म के कारण नैतिक दृष्टि से वे लोग हमसे कहीं बढ़े-चढ़े हैं और उनकी बुद्धि तो निश्चित रूप से हमारी अपेक्षा अधिक उज्ज्वल, परिमार्जित और निर्मल है। उन लोगों की शिक्षा मार्क्स की शिक्षा से आरम्भ होती है। मार्क्स के ग्रन्थों के अध्ययन से विद्यार्थी में स्वतः ही यह धारणा उत्पन्न हो जाती है कि उससे अधिक कोई क्या जानता होगा। एक समय मैंने लिट्वीनॉफ़ से कहा—"आपको स्मरण है, लॉर्ड कर्ज़न से आपकी क्या बातचीत हुआ करती थी।" उसने कहा—"हाँ, लॉर्ड कर्ज़न, वह अत्यन्त साधारण बुद्धिवाला आदमी था। उसकी सी समझ वालों के साथ राजनीतिक विषयों पर क्या बात की जाय। मैं उससे राजनीति पर बातचीत करना कभी पसन्द नहीं करता था। ऐसे गम्भीर विषय पर लॉर्ड कर्ज़न से बातचीत करना मेरे फ़रशी के साथ बातचीत करने के बराबर था।" आप यह न समझ लें कि लिट्वीनॉफ़ बड़ा मग़रूर था। यदि मैं आपसे लॉर्ड कर्ज़न के ग़रूर की कहानियाँ कहूँ तो आपको पता चले कि लिट्वीनॉफ़ की गर्वोक्ति वास्तव में कुछ नहीं है। वास्तव में हम लोग बुद्धि से ख़ाली हैं। रूसी लोग समझते हैं कि हम उतने बुद्धिहीन नहीं हैं, जितने कि हम वास्तव में हैं।

रूस का वर्तमान पञ्चवर्षीय आयोजन एक अत्यन्त ठोस कार्य-क्रम है। यदि आप आँख खोल कर देखें तो आपको स्पष्ट पता चल जायगा कि इसमें विफलता की कहीं गुञ्जाइश ही नहीं है। निराशावादी से निराशावादी भी उत्साहपूर्ण मज़दूरों को काम करते हुए देख कर यह आशा किए बिना नहीं रह सकता कि पञ्चवर्षीय आयोजन सफल होगा। विश्व-व्यापी वर्तमान आर्थिक क्षोभ से मुक्ति प्राप्त करने का एक मात्र साधन पञ्चवर्षीय आयोजन है। हमारी व्यवसाय-परम्परा हमको एक अत्यन्त गहरे अन्धकारमय गर्त की ओर ले जा रही है। हमको इसका पता नहीं, परन्तु रूसियों को यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है। रूसी हमको मूर्ख समझते हैं। मूर्खों से वास्तव में किसी को भय नहीं होना चाहिए। परन्तु रूसियों को हमसे भय है। उनसे आप कुछ भी कहें, परन्तु वे कभी इस बात पर विश्वास नहीं करेंगे कि हम शान्ति चाहते हैं। उनका ख़याल है कि मिस्टर चर्चिल जिस दिन चाहेंगे उसी दिन युद्ध छिड़ जायगा। जनता विरोध करेगी तो भी चलेगी मिस्टर चर्चिल की ही। रूस में कुछ विरोधी बातों की ओर मेरा विशेष ध्यान गया। कुछ विषयों में रूसी सरकार निर्दय है और कुछ विषयों में असीम दयालु। रूस के बच्चों को मैंने अत्यन्त साफ़ पाया। यह वास्तव में उनके साथ कठोरता है। बच्चों को साफ़ रखना चाहिए, परन्तु निरन्तर सफ़ाई भी अच्छी नहीं। विशेषकर खेलते समय उनकी सफ़ाई पर ज़ोर नहीं देना चाहिए। परन्तु रूस में खेलते समय भी सफ़ाई के विषय में बड़ी कठोरता की जाती है। मैं इसको निर्दयता समझता हूँ। सरकार की दयालुता बच्चों की रक्षा, गर्भवती स्त्रियों को छुट्टी, प्रसव-समय में उनके भरण-पोषण का प्रबन्ध और सम्पूर्ण देशवासियों के लिए पेट भर रोटियों का आयोजन आदि से ज़ाहिर होती है।

वहाँ के प्रबन्ध की उत्तमता का मैं आपको एक दृष्टान्त दूँगा। हमारे देश में जनता और पुलीस का सम्बन्ध काफ़ी अच्छा है, परन्तु रूस में यह सम्बन्ध अत्यन्त प्रशंसनीय है। लेनिनग्राड में मैंने देखा कि अमेरिकन यात्री फ़ोटोग्राफ़ ले रहा था। यह देख कर एक पुलीस कॉन्स्टेबिल आया और बड़े अदब के साथ उसने कहा—"महाशय, आप फ़ोटो नहीं ले सकते; मेरे ख़याल से हमारे देश में इसकी मुमानियत है।" अमेरिकन यात्री चिढ़ गया और कहा—"मैं जो चाहूँ कर सकता हूँ।" तब यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि वह अमेरिकन यात्री देश का क़ानून-भङ्ग कर रहा था या नहीं। ऐसी स्थिति में एक अङ्गरेज़ कॉन्स्टेबिल उस यात्री को थाने में ले जाता और पुलीस-इन्स्पेक्टर के सामने पेश करता, परन्तु रूसी कॉन्स्टेबिल ने कहा—"अच्छा मैं थाने में जाता हूँ और तलाश करके आता हूँ कि आप नियम को भङ्ग कर रहे हैं कि नहीं?" वह थाने में गया और अमेरिकन सज्जन अपनी भलमनसी के साथ वहाँ उसकी प्रतीक्षा करता रहा। वापस आकर कॉन्स्टेबिल ने कहा—"महाशय, मेरी भूल थी, आप फ़ोटो ले सकते हैं और मुझे क्षमा कीजिए।"

जब लेडी एस्टर ने राष्ट्रपति स्टेलिन से कहा कि रूस में बालकों के साथ बड़ा कठोर व्यवहार होता है, तब उसने तत्काल उत्तर दिया—"इङ्गलैण्ड में तो आप शारीरिक दण्ड भी देते हैं।" मेरे ख़याल से इङ्गलैण्ड और रूस की सभ्यता का अन्तर इस एक ही बात से स्पष्ट हो जाता है। रूस में बच्चों को मारना-पीटना जुर्म है। यहाँ तक कि माँ-बाप भी यदि शारीरिक दण्ड दें तो बच्चे पुलीस में रिपोर्ट कर सकते हैं। रूस में प्राण-दण्ड तो दिया ही नहीं जाता। इसका वहाँ बिल्कुल अन्त कर दिया गया है। वहाँ आप बहुत सस्ते में क़त्ल कर सकते हैं। हत्या के अपराध के लिए प्रायः ४ वर्ष का कारावास दिया जाता है। सम्भव है कि यदि हत्या अत्यन्त जघन्य उद्देश्य से की गई हो तो पाँच वर्ष तक की क़ैद मिल जाय। प्राण-दण्ड का अन्त कर दिया गया है, परन्तु राजनैतिक अपराधों के लिए गोली से मार दिया जाता है। इस विषय में रूसी सरकार अत्यन्त निर्दय है। आपको यह जान कर आश्चर्य होगा कि रूस में सट्टेबाज़ी भयङ्कर जुर्म माना जाता है। ऐसे अपराधियों को जेल में रख दिया जाता है, थोड़े दिन उसके रिश्तेदार उसके पास खाना पहुँचा सकते हैं और फिर २-३ दिन तक भूखा रख कर उसे गोली से मार दिया जाता है। हमारे देश में सट्टेबाज़ी की प्रशंसा होती है। सट्टेबाज़ों को पार्लामेण्ट का मेम्बर चुना जाता है और उपाधियों से विभूषित किया जाता है। कुछ वर्ष पूर्व रूस में सट्टेबाज़ी का बहुत ज़ोर था। महासमर के अन्त में जैसे हमारे यहाँ लोगों ने जर्मनी के नोट ख़रीदने शुरू किए थे, ठीक उसी चाव और आतुरता के साथ रूस में सट्टा चलने लगा, जिसका फल यह हुआ कि थोड़े ही दिनों में रुपए के दर्शन होना कठिन हो गया। रूसी सरकार ने इस विषम स्थिति का बहुत शीघ्रता और सरलता के साथ निवारण कर दिया। उसने एक सहस्र ऐसे व्यक्तियों का पता लगाया, जो सट्टे का व्यापार करते थे, या जिन पर ऐसा व्यापार करने का सन्देह किया जाता था। लोगों को त्रस्त करने के लिए और सट्टे की अवाञ्छनीयता लोगों के दिलों में जमाने के लिए प्रसिद्ध-प्रसिद्ध नगरों और गाँवों में, जहाँ अधिक संख्या में लोग एकत्रित हो सकते थे, वहाँ दो सट्टेबाज़ों को गोली से मार दिया गया। इस नृशंसता का फल यह हुआ कि तत्काल रुपया जहाँ होना चाहिए था, वहीं वापस आ गया। रूस के विषय में प्रायः आप यह सुना करते हैं कि वहाँ के कवि, लेखक और कलाविद भूखों मरते हैं। उनकी जठर-ज्वाला को शान्त करने की चिन्ता सरकार उस समय करती है। जब पहले मज़दूर सन्तुष्ट हो जाते हैं। इस बात की सत्यता जानने के लिए मैं लेखकों से मिला और मैंने देखा कि वे निहायत ख़ुशहाल थे। उनमें एक भी लेखक ऐसा नहीं था, जिस पर क़र्ज़ हो या जो अपने किसी काम के लिए किसी से ऋण लेना चाहता हो। मैंने एक विद्वान से पूछा,—"आप तो मज़दूर नहीं लेखक हैं, फिर आप इतने ख़ुशहाल क्यों हैं?" मुझे उत्तर मिला कि—"हम विद्वान नहीं, किन्तु दिमाग़ी मज़दूर हैं।"

अपने देश में हम जनता का कुछ हित नहीं कर सकते। इसका कारण है हमारा पार्लामेण्ट-सिस्टम। पूँजीवादी संसार इस शासन-पद्धति पर गर्व करता है। परन्तु वास्तव में यह पद्धति इतनी पक्की, इतनी जटिल, इतनी निश्चित और इतनी अचल हो गई है कि जो काम आध घन्टे में हो जाना चाहिए उस काम को करने के लिए पार्लामेण्ट में ३० साल लग जाते हैं। रूस में आधे घण्टे का काम आधे ही घ०टे में होता है और उसमें कोई भूल नहीं होती। वहाँ हमारी जैसी पार्लामेण्ट और हमारी जैसी मूर्खता नहीं है। वहाँ ऐसी समितियाँ अवश्य हैं, जो नीति पर बहस करती हैं। परन्तु

जब कोई कार्य करना होता है तो वह डिक्टेटर के हुक्म से किया जाता है। उस पर उस कार्य की पूरी ज़िम्मेदारी होती है। यदि वह भूल या प्रमाद करता है तो उसका पतन हो जाता है। वह जानता है, कि जब डिक्टेटर के आसन पर है, उसको देश-हित की दृष्टि से अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए और यदि वह नहीं कर सकता है तो उसको दूसरों के लिए अपना स्थान छोड़ देना चाहिए। लोकमत का बहाना लेकर रूस में डिक्टेटर अपनी ज़िम्मेदारी से नहीं हट सकता। हमारे देश में मन्त्री यह आड़ ले सकता है कि जिसे और उसने जनता का रुख़ देखा उसने वही कार्य किया। परन्तु रूस में ऐसी बातों से काम नहीं चल सकता। वहाँ ज़िम्मेदारी को निभाना ही पड़ता है। यदि स्टेलिन अपने दोस्त को मन्त्री बना दे तो उसकी कोई मीमांसा नहीं होती। रूस से वास्तव में दलबन्दी उठ गई है। शासन-सूत्र किसी के हाथ में इसलिए नहीं रह सकता कि वह किसी ख़ास दल का नेता है, बल्कि इसलिए रहता है कि वह ज़िम्मेदारी को समझता है और पूरी करता है। वास्तव में प्रजातन्त्र शासन इसी को कहते हैं। हमारे देश में प्रजातन्त्र का नाम है। प्रजातन्त्र नहीं है। पार्लामेन्ट शासन में ज़िम्मेदारी का अभाव रहता है, दलबन्दियों की भरमार होती है, बकवास का ज़ोर रहता है, और असली काम की बहुत कमी। जब हमारे देश में सोशलिज़्म आएगा तो हम अपनी शासन-पद्धति को आदि से अन्त तक बदलेंगे।

लेडी एस्टर के विषय में मैं दो शब्द कहना चाहता हूँ। उन्होंने कहा था कि "ईश्वर के बिना रूस का काम नहीं चल सकता। इस समय चाहे रूसी लोग नास्तिक हो जायँ, परन्तु एक दिन वे भगवद्भक्ति की आवश्यकता का अनुभव करेंगे।" लेकिन मेरी धारणा है कि रूसियों को अपनी वर्तमान स्थिति से वापस मुड़ने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। वे इस समय ही आस्था से भरे हुए हैं। वास्तव में यूनानी और रूसी ईसाई धर्म निकम्मा सम्प्रदाय था। आप लोगों ने सुना होगा कि रूस में एक बड़ा गिरजाघर नास्तिकता का अजायबघर बना दिया गया है। जब मैंने रूस में इसका ज़िक्र किया तो लोग अवाक् रह गए। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि जब मैंने उस अजायबघर को देखा तो मैं बहुत प्रसन्न हुआ और मैंने चाहा कि मार्टन लूथर पुनर्जीवित होकर या बेलफास्ट के ईसाई सन्त फिर इस लोक में आकर इस गिरजाघर की दशा देखेंगे। वास्तव में यह गिरजाघर नास्तिकता का अजायबघर नहीं बनाया गया है, बल्कि पण्डे और पुरोहितों की धूर्तता का, उनकी कपट-लीला और उनका पाप-कौशल, इन सब के नमूने उस अजायबघर में रक्खे गए हैं। किस प्रकार पादरी लोग भोली-भाली जनता का धन अपहरण करते थे और फिर किस प्रकार उसको भोग और विलास में नष्ट करते थे, इन सबके प्रत्यक्ष उदाहरण वहाँ पर जुटाए गए हैं। क्या यह नास्तिकता है?

मेरा तो यह कहना है कि रूस की सोशलिज़्म वास्तव में एक धार्मिक संस्था है। तुमको पर्याप्त भोजन मिलेगा और कम समय तक काम करना पड़ेगा, केवल यही रूस में नहीं है, आप वहाँ जाकर खुली आँखों से देखें तो आपको पता लगेगा कि मज़दूर लोग किस निष्ठा से और किस रुचि से काम करते हैं। उनके हृदय में एक प्रकार का आध्यात्मिक आवेश है। वे हृदय से चाहते हैं कि पञ्चवर्षीय आयोजन सफल हो। यही उनका मुक्ति-मार्ग है और यही उनका उपास्य देव। जो आदमी ख़ूब कमाता और खाता है, जिसको स्वयं अपने पेट की चिन्ता है, जिसके पास रहने को छोटा सा साफ़-सुथरा मकान है और जो औरों की भलाई में अपनी भलाई समझता है, क्या वह धार्मिक पुरुष नहीं है। मैं उसी आदमी को धार्मिक पुरुष कहूँगा जो अपनी चिन्ताओं को स्वयं झेल कर संसार की चिन्ताओं को कम करने का प्रयास करता है। रूस का मज़दूर अपने लिए मज़दूरी नहीं करता, न उसको बच्चे के पालन की चिन्ता है, न कुटुम्ब के भरण-पोषण की फ़िक्र। अपना पेट भरने के अनन्तर वह देश के लिए कार्य करता है। इतना ही नहीं, बल्कि उसका सुख-स्वप्न यह है कि सारे संसार से वैषम्य हट कर सब में एकता की स्थापना हो। क्या यह भावना धार्मिक भावना नहीं है? मैंने रूसी नेताओं से बातों में कहा कि थर्ड इण्टर नेशनल का जब जलसा होगा तो राज और धर्म में सङ्घर्ष अवश्य होगा। स्टेलिन ने मुस्करा कर कहा, हाँ मिस्टर शा०, उस पवित्र दिन की उत्सुकता से परीक्षा कर रहा हूँ। आख़िर निश्चय हो जायगा कि धार्मिक कौन है और अधार्मिक कौन?

❀ ❀ ❀

भावी युद्ध और रूस

[श्री० गणेशशङ्कर जी]

आजकल संसार में साम्यवाद का प्रचार हर एक मुल्क में हो रहा है, लेकिन इसके विपक्ष में (Capitalists) पूँजीवाद का भी ख़ूब प्रचार हो रहा है। जितने भी पूँजीवादी मुल्क हैं वे सभी गुप्त तौर पर लड़ाई की तय्यारी कर रहे हैं और गुप्त ही तौर पर एक दूसरे की राय ले रहे हैं। लड़ाई किसके साथ? रूस के। रूस, जो ग़रीब मज़दूर और किसानों के लिए इतना प्रयत्न कर रहा है, और जिसके नौजवान ग़रीबों के लिए फाँसी के तख़्तों पर लटक गए हैं, और कितने ही ज़ार की फ़ौज की गोलियों के शिकार हुए हैं, आज उस रूस के ख़िलाफ़ गुप्त तौर पर संसार के पूँजीवादी जङ्ग की तैयारी कर रहे हैं। क्यों न तैयारी करें; क्योंकि फिर ग़रीबों का ख़ून किस तरह चूसेंगे।

कुछ पूँजीवादी मुल्कों की आगामी युद्ध की तैयारी का प्रमाण यों है:—

मैशीनगन्स

	सन् १९२३	सन् १९३१
फ़ान्स	... ७,०००	... ८,०००
इङ्गलैण्ड	... ७,०००	... ९,०००
अमेरिका	... १६,०००	... २०,०००

२—हवाई जहाज़

फ़ान्स	... ३,०००	... ४,५००
इङ्गलैण्ड	... ३,०००	... ४,५००
अमेरिका	... २,५००	... ६,०००

३—विषैली वस्तुएँ

फ़ान्स	... ४,०००	... १०,०००
इङ्गलैण्ड	... ४,०००	... १०,०१०
अमेरिका	... १०,०००	... ४०,०००

बहुत से हवाई जहाज़ ऐसे बनाए हैं, जोकि एक हज़ार गोले (Bombs) ले जा सकते हैं, और बहुत से जहाज़ ऐसे हैं कि अगर उनको गोली का निशाना बनाया जाय तो उनके ज़मीन पर गिरने से नज़दीक जितनी भी आबादी होगी, वह सब विषैली वायु से, जो कि उस जहाज़ के फटने से निकलेगी, बरबाद हो जाएगी और सब जीव-जन्तु मर जायँगे! बहुत से बिना आवाज़ (Noiseless) के हवाई जहाज़ बनाए हैं, और जो एक घण्टे के अन्दर आजकल के हवाई जहाज़ों से कितना ही गुना रास्ता पूरा करते हैं।

मि० चर्चिल ने सितम्बर, १९२४ में एक अङ्गरेजी मासिक-पत्र 'Pall Mall Magazine' में लिखा था:—

"हमें एक ऐसा गोला (Bomb) तय्यार करना चाहिए, जो कि नारङ्गी से बड़ा न हो और जिसकी ज़हरीली शक्ति एक हज़ार कोरडाइट (Cordite) टन के बराबर हो, जो दुश्मन के सारे शहर को बरबाद कर दे। कुछ वैज्ञानिक मनुष्य ऐसी ईजाद कर रहे हैं, जोकि शत्रु के यहाँ ऐसे ज़हरीले कीड़े पैदा करेंगे, जोकि उसकी फ़ौज, जानवर, फ़सल, और दो प्रकार के जीव-जन्तुओं का नाश कर देंगे। वह फ़ौज इत्यादि का ही नाश नहीं करेंगे, बल्कि सारे मुल्क में दूर-दूर तक फैल कर मनुष्यों को या जो जीव-जन्तु हो, मौत के हवाले करेंगे। इसकी तय्यारी काफ़ी हो रही है।

यही नहीं, बल्कि इङ्गलैण्ड के एक बड़े फ़ौजी अफ़सर, जनरल मिलर ने ४ जुलाई, १९३१ के 'दी सन्डे रेफ़रेन्स' (The Sunday Reference) में लिखा है:—

"हम लड़ाई के लिए बिलकुल तय्यार हैं। हम किसी ख़ास अवसर को देख रहे हैं। जो मुल्क बोलशेविज़्म का नाम दुनिया से मिटाना चाहता है, उससे रुपए-पैसों से मदद चाहते हैं। हमारे पास बिल्कुल सुरक्षित फ़ौज है। जब कभी भी रूस कुछ शरारत करेगा, हम उसके मुल्क की सीमा पर पहुँच जायँगे। हमारे पास फ़ौज और नेताओं की कमी नहीं है। पेरिस, जोकि फ़्रान्स की राजधानी है, वहाँ हज़ारों आदमी फ़ौजी शिक्षा पा रहे हैं। जब यूरोप अपनी सङ्गठित शक्ति से कम्यूनिज़्म के ख़िलाफ़ जङ्ग शुरू करेगा, तब हम भी दूसरी फ़ौजों के साथ कन्धे से कन्धा लगा कर चलेंगे।"

फ़्रान्स भी ख़ूब तैयारी कर रहा है और मौक़ा देख कर वह भी युद्ध में शामिल हो जाएगा। एक अङ्गरेज़ी पत्र में लिखा था कि इङ्गलैण्ड से ६० आदमी 'रिगा' जोकि रूस का एक शहर है, वहाँ की हालत देखने और वहाँ की भाषा सीखने गए हैं।

लिखने का मतलब यह है कि रूस के साथ युद्ध की तैयारी ख़ूब ज़ोरों से हो रही है। परन्तु इस युद्ध से नाश होगा ग़रीबों का। वही लड़ाई में जायँगे, मौत के मुँह में प्रवेश करेंगे। कहने का मतलब यह है कि आगामी लड़ाई में ग़रीबों की ही तबाही होगी। सन् १९१४ की घमासान लड़ाई, जिसे यूरोप का महासमर कहते हैं, उसका परिणाम क्या हुआ। आज रूस ही ऐसा मुल्क है, जो मज़दूर और किसानों का भला चाहता है। परन्तु ग़रीबों का ख़ून चूसने वाले कब यह देख सकते हैं। उन्हें तो ग़ुलामों की ज़रूरत है। अगर ग़ुलाम न रहे तो फिर उनका काम कौन करेगा, और एक रुपए की मज़दूरी में से आठ आने या बारह आने के पैसे किसकी जेब में जायँगे। देखें, अब ज़माना क्या रङ्ग पलटता है, और आगामी संग्राम का क्या नतीजा होता है? और भारत क्या करता है?

❀ ❀ ❀

सम्राट पञ्चम जॉर्ज की उदारता

समस्त राज-परिवार ने अपना ख़र्च घटाया

लन्दन से ख़बर आई है, कि राष्ट्रीय व्यय-सङ्कोच-व्यवस्था में सम्राट पञ्चम जॉर्ज ने भी हाथ बँटाया है। उन्होंने इङ्गलैण्ड के प्रधान मन्त्री को तार द्वारा सूचित किया है कि जब तक ग्रेटब्रिटेन की आर्थिक अवस्था संशयापन्न रहेगी, तब तक के लिए वे अपने पारिवारिक ख़र्च में से ५०,००० पौण्ड कम कर देंगे।

१४ सितम्बर, सन् १९३१

राष्ट्रीय झण्डा

राष्ट्रीय झण्डा राष्ट्र के व्यक्तित्व का निदर्शक और राष्ट्रीय आत्मा का परिचायक चिन्ह है। वह संसार के राष्ट्रों के साथ स्थान पाने वाला कौन सा राष्ट्र है, जिसका अपना झण्डा नहीं? वह कौन सी जाति है, जो अपने झण्डे को सम्मान के साथ राष्ट्र-सङ्घ में देखना नहीं चाहती? झण्डा राष्ट्र की जान है, शान है, धर्म और ईमान है। संसार के समस्त जीवित जातियों और जाग्रत राष्ट्रों का एक झण्डा होता है। झण्डे के साथ बाह्य चिन्हों के सिवा कुछ आन्तरिक पवित्र भावनाएँ भी होती हैं। यही कारण है कि प्रत्येक स्वतन्त्र जाति अपना एक पृथक झण्डा रखती है।

बड़े-बड़े वीरों ने, अपने झण्डे के मान की रक्षा के लिए अपनी जानें दी हैं। बहादुरों के लिए तो झण्डा एक महत्वपूर्ण उपास्यदेव होता है। नैपोलियन ईसाई था, फिर भी जब उसे बलात् फ़्रान्स छोड़ना पड़ा, तो चलते समय उसने अपने प्यारे 'ईगिल' को मँगा कर छाती से लगाया और सम्मानपूर्वक देख कर उसके चिर-स्थायी और सुरक्षित रहने की कामना प्रकट की। हिन्दू-मुसलमान इतिहासों में भी झण्डे की प्रतिष्ठा का विधान पाया जाता है। लड़ाइयों में झण्डे के सामने पीठ देने वाले कायर को पहले भी दण्ड दिया जाता था और आज भी दण्ड का विधान है। प्राचीन काल में माताएँ समराङ्गण में जाते हुए बच्चों को शिक्षा देती थीं, कि शत्रु का हरेक वार छाती पर लेना, झण्डे को पीठ मत देना। यह झण्डे की महत्ता है।

हर एक जाति का झण्डा अलग-अलग होता है और जैसा हम कह चुके हैं, उसके बाहरी चिन्हों का अर्थ व्यक्तित्व का निदर्शक होता है। किन्तु उसके साथ भीतरी भावों का भी सम्बन्ध है। भारत का पहला तिरङ्गा झण्डा, लाल, हरा और श्वेत, अन्य देशीय झण्डों से विशेषता रखता था। ऐसा नहीं था, कि इन्हीं तीन रङ्गों का ऐसा ही झण्डा दूसरे राष्ट्र का पहले से मौजूद हो। इसकी आन्तरिक भावना में धार्मिक सम्प्रदायों का निदर्शन था। हिन्दू-धर्म, मुसलमान-धर्म और अन्य अल्प-संख्यक धर्मावलम्बियों के संयोग का भाव था। निस्सन्देह यह भाव वाञ्छनीय नहीं था। इन भावों से, जिस विषमय साम्प्रदायिकता को राष्ट्र के निमित्त विनष्ट करने की आवश्यकता है, उसकी परिपुष्टि होती थी। यही कारण था कि सिक्खों ने राष्ट्रीय झण्डे में अपने सम्प्रदाय का भी व्यक्तिकरण चाहा और इसके लिए बड़ा कोलाहल मचाया। कौन जानता है कि आगे चल कर हमारे प्यारे देशी ईसाई भाई, बौद्ध और जैन भाई आदि भी इसी प्रकार की माँग पेश न करते?

परन्तु राष्ट्रीयता का स्थान धर्मान्धता और साम्प्रदायिकता से कहीं अधिक ऊँचा है। फलतः राष्ट्रीय झण्डे में साम्प्रदायिक भावों का स्थान पाना राष्ट्र की जड़ में घुन लगना है।

नए झण्डे में जो तीन रङ्ग रक्खे गए हैं, उनमें एक का रङ्ग बदला गया है और शेष दो रङ्गों का स्थान बदला है।

इस बार नए झण्डे में सब के ऊपर केसरिया रङ्ग है, जो साहस, उत्सर्ग और त्याग का द्योतक समझा जाता है, इसके बाद श्वेत रङ्ग शान्ति और सत्य की प्रतिमूर्त्ति माना जाता है, तीसरा हरा रङ्ग विश्वास और शूरता का ज्ञापक है। श्वेत रङ्ग पर नीले रङ्ग का चर्ख़ा अङ्कित रहेगा।

इस नवीन झण्डे की अभ्यर्थना तारीख़ ३० अगस्त को सारे भारत में बड़े समारोह के साथ की गई। भविष्य में हमारे देश का राष्ट्रीय झण्डा इसी विशेष रूप में संसार के सब विभागों में पहचाना जायगा और भारतवासी इसके लिए जीना और मरना सीखेंगे। क्योंकि जैसा ऊपर कहा गया है, इससे केवल भारत के झण्डे की दूसरे झण्डों से पहचान कराना ही अभीष्ट नहीं है, जाति के अन्दर भी इसकी कुछ ज़रूरत है। वह ज़रूरत चर्ख़े के निशान से और पूरी हो जाती है। भारतवासियों में हरेक स्त्री, पुरुष, हिन्दू, मुसलमान और ईसाई मिल कर इस बात का अनेक बार विचार करके समझ चुके हैं कि भारत की पराधीनता का एक मात्र कारण अपने घर के बने वस्त्र का न होना है। भारत अन्न पैदा करता है, लेकिन लज्जा-निवारण करने के लिए अपनी पैदा की हुई रुई से कपड़ा नहीं बनाता।

हमारे देश में इतने कारख़ाने नहीं हैं कि देश की आवश्यकता के लायक़ कपड़ा बना सकें। राष्ट्रीय झण्डे पर चर्ख़े का निशान हमें प्रति क्षण अपनी इस कमज़ोरी को दूर करने की याद दिलाता रहता है। हमारा झण्डा खादी का होता है, उसका भी अर्थ यही है कि खादी जो अपने हाथ के कते सूत से तैयार हुई है वही हमारी प्रतिष्ठा की चीज़ है।

हमारे प्रत्येक गाँव में जिस तरह खेती होती है, अगर उसी तरह ग्राम के लोग सूत कातना और कपड़ा बनाना सीख लें तो उनकी वास्तविक स्वाधीनता उनमें आ जाती है। अगर कुछ बाक़ी रह जाती है तो बाहरी लोगों की ज़बरदस्ती। बाहरी लोगों से हमारा मतलब उन लोगों से है, जो श्रम नहीं करते और हमारी पैदावार हम से बलात् ले लेते हैं, और जितना जो चाहता है, ले लेते हैं।

चर्ख़े से एक ऐतिहासिक घटना यह भी हमें याद आती है कि हमें विदेशीय जुलाहों ने जीता है। अगर हम फिर अपनी चर्ख़े की चातुरी अपने घर में लौटा लावें और विदेशी जुलाहों के आश्रित न रहें तो हम शीघ्र ही स्वतन्त्र हो सकते हैं।

महात्मा गाँधी अपनी जाति किसान और जुलाहा बतलाते हैं। यह इसीलिए, कि देश को वास्तव में स्वतन्त्र करने की शक्ति किसी में है तो वह किसान और जुलाहों में ही है।

इसलिए हम समस्त भारतवासी उस झण्डे को, जो ३० अगस्त को सारे भारत में ऊँचा किया गया है, हृदय से सम्मान करें, उसे समझें और उससे शिक्षा ग्रहण करें। वह भारत की स्वतन्त्रता की मञ्ज़िल दिखलाने वाला एक बड़ा साधन है।

शौकत एण्ड को०

प्रत्यक्ष में मौलाना शौकत अली और उनके दल की विजय हो गई। गोलमेज़ के प्रथम अधिवेशन में मौलाना शौकत अली अपने छुटके भैया के पिछलग्गू बन कर इङ्गलैण्ड गए थे, परन्तु अब सरकार ने उनको तथा उनके मित्र शफ़ी दाऊदी जैसे कट्टर मुसलमान को निमन्त्रित करके सम्मानित किया है। मौलाना शौकत अली सत्याग्रह संग्राम के आरम्भ से ही इसके विरोधी हैं और अपने अनुयायी मुसलमानों को राष्ट्रीय उद्धार के प्रयत्न से अलग रखने के लिए प्राणपण से चेष्टा कर रहे हैं। भारतीय मुसलमान अपने को भारतीय मानने में अपना गौरव नहीं समझते और इसके उद्धार के लिए आत्मोत्सर्ग करने पर बहुत कम तैयार होते हैं। सन् १९१९ के संग्राम में ख़िलाफ़त के कारण मौलाना मोहम्मद अली और शौकत अली का दल सत्याग्रह संग्राम में सम्मिलित हो गया था, लेकिन ज्योंही टर्की के भाग्य का फ़ैसला हुआ और सुल्तान ख़लीफ़ा के विलीन-वैभव की पुनरावृत्ति की कोई आशा नहीं रही, त्योंही मौलाना मोहम्मद अली का उत्साह शिथिल होने लगा। मक्का और मदीना के गीत गाने वाले और दजला तथा फ़ुरात के स्वप्न देखने वाले मौलाना मोहम्मद अली भारतोद्धार की वेदी पर कैसे बलिदान होते, इसलिए जिस समय, अप्रैल, सन् १९३० में, महात्मा गाँधी ने शङ्खनाद किया, मौलाना साहब ने उनका साथ नहीं दिया। रणभेरी को सुन कर, कहते हैं, कायरों का ख़ून भी खौलने लगता है, परन्तु मौलाना साहब टस से मस नहीं हुए। इतना ही नहीं, बल्कि उन्होंने स्वातन्त्र्य-प्रिय और रणोत्सुक मुसलमानों को सत्याग्रह में सम्मिलित होने से रोका और अपना एक ख़ासा दल बना लिया, जिसका ध्येय रहा नौकरशाही की ख़ुशामद, सत्याग्रह-आन्दोलन का विरोध, तञ्ज़ीम-कार्य और हिन्दुओं के प्रति विष-वमन। नौकरशाही इससे बहुत प्रसन्न रही और मौलाना शौकत अली साहब को गोलमेज़ अधिवेशन में निमन्त्रित किया गया। मौलाना साहब ने एक निहायत दिलचस्प भाषण देकर गौराङ्ग-प्रभुओं को अपने प्राण अर्पण कर दिए। तब बड़े भैया को गद्दी पर विराजे। डॉ० अन्सारी ने मौलाना शौकत अली को राष्ट्रीय बनाने का बहुत प्रयत्न किया, पर सफलता नहीं हुई। होती भी कैसे? अगर अपनी जान को जोखिम में डाले बिना ही और किसी प्रकार के त्याग किए बिना ही, जीहरी बनी रहे और जहाँ जाएँ वहाँ पुलीस विभाग के मुसलमान

कॉन्स्टेबिल स्वागत करने में फूल वर्षाने को तैयार मिलें और फिर हो सरकार का माथे पर हाथ—तो सत्याग्रह संग्राम में सम्मिलित होने की आवश्यकता ही कहाँ रह गई? सरकार मौलाना के स्वर को बहुत पसन्द करती है इसलिए उनके साथ ताल देने वाले दो और साथियों को गोलमेज़ महफ़िल में बुलाया है। देखें मौलाना साहब अपने श्वेत-प्रभुओं को प्रसन्न रखने के लिए, अब कैसा तराना गाते हैं।

❀

हिंसावाद की बाढ़

पिछले कई सप्ताह से हिंसा और हिंसा के प्रयत्नों के समाचार बढ़ रहे हैं। कई जगह अङ्गरेज़ अफ़सरों पर गोलियाँ चलाई गई हैं, कुछ हत्याएँ हुई हैं और कई हत्याओं की तैयारी का पुलीस ने पता लगाया है। प्रत्येक देश के स्वतन्त्रता-संग्राम में राजनैतिक हत्याएँ, एक आवश्यक कार्यक्रम रहा है। फ़्रान्स, जर्मनी, रूस, इटली और आयर्लैण्ड सर्वत्र स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए इस प्रकार की हत्याएँ की गई हैं। मार-काट और रक्तपात स्वतन्त्रता-प्राप्ति का परम्परागत साधन है, लेकिन महात्मा गाँधी ने हमारे सामने एक ऐसा साधन उपस्थित किया है, जो संसार के इतिहास में नया है और जिस की सफलता में आज से एक वर्ष पहले तक संसार को विश्वास नहीं होता था। परन्तु पिछले वर्ष के सत्याग्रह संग्राम की सफलता ने सिद्ध कर दिया है कि महात्मा गाँधी का साधन सब दृष्टियों से सर्वोत्तम साधन है। नैतिक दृष्टि से तो इससे बढ़ कर कोई साधन हो ही नहीं सकता। प्रेम और सत्य के द्वारा विपक्षियों को अत्याचार स्वीकार करवाना और स्वयं अत्याचार सह कर अत्याचारियों को नृशंसता से रोकना, मानो एक प्रकार का धर्म-प्रचार है। मनुष्य के हृदय में जो बदला लेने की एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है, वह सत्याग्रह के कारण शान्त हो जाती है। क्योंकि सत्याग्रह विपक्षियों को हानि पहुँचाने का प्रयत्न नहीं है, बल्कि उनको सम्मान-प्रदर्शन द्वारा स्वयं अपने कष्टों को हटाने का साधन है। रक्तपात करने से विरोधियों में पाशविकता अधिकाधिक जाग्रत होती जाती है, और शत्रु सदैव शत्रु ही बने रहते हैं। लेकिन महात्मा गाँधी का सत्याग्रह दोनों पक्षों की पाशविकता को हटाता है, व्यावहारिक दृष्टि से भी सत्याग्रह ही एक सफलता का साधन हो सकता है। इस समय ब्रिटिश सरकार के पास नर-संहार के इतने भीषण शस्त्र और अस्त्र विद्यमान हैं कि बात की बात में लाखों आदमियों का उनके द्वारा विनाश किया जा सकता है। दस पाँच अफ़सरों की हत्या करने से उनके शासन का अन्त नहीं हो सकता और न अफ़सरों का अभाव ही हो सकता है। एक अफ़सर को मार कर षड्यन्त्रकारी क्षणिक शान्ति प्राप्त कर सकते हैं और अपने हृदय की कसक निकाल सकते हैं, किन्तु इससे हमारा देश आज़ाद नहीं हो सकता। बल्कि स्वतन्त्रता-संग्राम की कठिनाइयाँ और भी बढ़ती हैं और एक जान के पीछे हमको कितनी ही जानें देनी पड़ती हैं। इस समय जब सत्याग्रह की विजय हो रही है और सारा संसार हमारे अभूतपूर्व साधन की ओर एक टक से देख रहा है, तो जोश में आकर नवयुवकों को हिंसावाद की ओर नहीं झुकना चाहिए। हमारा और हमारी संस्कृति का कल्याण इसी में है कि हम तन से और मन से साबरमती के ऋषि का अनुसरण करें।

काश्मीर और मुसलमान

हमारे देश के राष्ट्रीय जीवन में हिन्दू-मुसलमानों के साम्प्रदायिक झगड़े बड़ी दुखदायी समस्या है। साम्प्रदायिक कट्टरता के आवेश में लोग उचित और अनुचित का विचार भूल जाते हैं और मुसलमान-मुसलमान एक तरफ़ और हिन्दू-हिन्दू दूसरी तरफ़ होकर झगड़ने लगते हैं। काश्मीर राज्य की ९५ प्रतिशत प्रजा मुसलमान है और शेष हिन्दू। १८वीं शताब्दी के आरम्भ से ही वहाँ हिन्दुओं का राज्य है, पर कभी किसी मुसलमान को यह शिकायत करने का मौक़ा नहीं आया था कि उसको मुसलमान की हैसियत से राज्य में कोई तकलीफ़ है। दुःख का विषय है कि कुछ अर्से से साम्प्रदायिक-विष भारतवर्ष में बहुत फैल गया है। इसके क्या कारण हैं, सो हम क्या बतावें? इस विषय में मौन धारण करना ही अच्छा है। अब यह विषय ब्रिटिश भारत की सीमा को लाँघ कर काश्मीर में भी पहुँच गया है। बाहर के ग़ैर-ज़िम्मेदार कट्टर मुसलमानों ने धर्म-प्रचारकों के वेश में काश्मीर जाकर तथा उत्तेजक व्याख्यान दे-देकर मुसलमानों को हिन्दुओं के विरुद्ध बहुत भड़काया और सदियों से भाइयों की तरह रहने वाले हिन्दू-मुसलमानों को एक दूसरे का घोर शत्रु बना दिया। इस प्रकार लोगों को उकसा कर और कुछ समय तक अपने दिन आनन्द से काट कर ये लोग वापिस अपने घर आए और काश्मीर में विषम स्थिति पैदा कर दी। जब इस प्रकार के व्याख्यानों की संख्या बढ़ने लगी तो एक बाहर के वक्ता को वहाँ की सरकार ने गिरफ़्तार करके जेल भेज दिया, जिसके फल-स्वरूप मुसलमानों ने मिल कर जेल पर धावा किया और सरकार को विवश होकर गोली चलाने का हुक्म देना पड़ा। इस घटना को रियासत का ज़ुल्म बतला कर मुसलमानों ने आन्दोलन शुरू किया। मुसलमानों का आन्दोलन यदि रियासत के अन्दर ही अन्दर होता तो कोई दुःख की बात न थी। प्रजा को अपने राजा से पुकार करने का और राजा उसके सुनने में उपेक्षा करे तो उसके विरुद्ध आन्दोलन करने का, बल्कि हम तो यहाँ तक कहेंगे कि नृशंस शासन का अन्त तक कर देने का प्रजा को अधिकार है। यदि काश्मीर के मुसलमानों को हिन्दुओं से तकलीफ़ है या सरकार के प्रति उनको कोई शिकायत है तो वे आन्दोलन करें और सरकार से विधिपूर्वक प्रार्थना करें। उनकी वास्तविक तकलीफ़ों के प्रति हमारी सहानुभूति होगी और उनकी सफलता के लिए हम भगवान से प्रार्थना करेंगे। ऐसी हालत में यह ख़्याल न रहेगा कि उत्पीड़ित प्रजा हिन्दू है या मुसलमान, बाहरी जगत केवल इसलिए सहानुभूति प्रगट करेगा और सफलता की कामना करेगा कि जनता उत्पीड़ित है। उत्पीड़न चाहे हिन्दू के प्रति हो, चाहे हिन्दू की ओर से हो, चाहे मुसलमान के प्रति हो, चाहे उसकी ओर से हो, प्रत्येक दशा में निन्दनीय है। ज़ुल्म और ज़्यादती की कोई क़ौम नहीं है। हमें दुःख इस बात का है कि कट्टर मुसलमानों ने काश्मीर में केवल इसलिए आग भड़काई है कि वहाँ हिन्दू राजा है और अब जो उसको सारे देश के मुसलमानों का प्रश्न बनाए जाने का यत्न किया जा रहा है, उसका भी कारण वही है। मुसलमानों के साथ न्याय या अन्याय जो कुछ हुआ है, वह काश्मीर में हुआ है और वह वहाँ की प्रजा होने के नाते से, न कि इसलिए कि वह मुसलमान हैं। फिर भी शिमला के होटलों में निठल्ले बैठे हुए जब और कुछ काम न सूझा तो सर ज़ुलफ़िक़ार ख़ाँ, मिस्टर शफ़ी दाउदी और उनके चन्द मित्रों ने यह सोचा कि महाराजा काश्मीर को त्रस्त करने के लिए अखिल भारतवर्ष के मुसलमानों द्वारा १४ अगस्त को काश्मीर दिवस मनाया जावे। इसके अनुकूल १४ तारीख़ को भारतवर्ष के प्रसिद्ध नगरों में मुसलमानों के जलूस निकले जिसमें इस्लाम ज़िन्दाबाद और काश्मीर स्टेट बर्बाद के नारे लगाए गए। सभाओं में काश्मीर सरकार के विरुद्ध भाषण दिए गए और अनेक प्रकार के कल्पित दुःखों का वर्णन किया गया। इन प्रदर्शनों में बहुत कम मुसलमानों ने साथ दिया, तो भी मुसलमानों में सनसनी फैल गई। इस आन्दोलन की निस्सारता इसी से प्रकट है कि शिमला के मुस्लिम नेताओं ने जो तक़लीफ़ें बतलाई हैं और जो सुधार सुझाए हैं, उनमें और काश्मीर राज्य का मुस्लिम डेपुटेशन जो अभी काश्मीर महाराजा से मिला, उसकी माँगों में बड़ा अन्तर है। काश्मीर के मुसलमान केवल हिन्दुओं की शिकायत करते हैं और सर ज़ुलफ़िक़ार ख़ाँ तथा रामपुर के मुटके भैया, सदियों पुराने हिन्दू रियासत के ज़ुल्मों की एक लम्बी फ़ेहरिस्त शाया करते हैं, फ़ुरसत के समय में कल्पना-शक्ति कितनी तीव्र हो जाती है, यह इसका प्रमाण है। इस समय सब से बड़ी मार्के की बात है, यह कि गवर्नमेण्ट हिन्द-प्रिन्सेज़-प्रोटेक्शन-एक्ट को कैसे भूले हुए है।

हम मुसलमान भाइयों से अपील करते हैं कि वे साम्प्रदायिकता को छोड़ कर राष्ट्रीयता की ओर बढ़ें। अगर इस ज़हर को फैलने दिया, तो यह काश्मीर में ही नहीं, न मालूम कहाँ-कहाँ पहुँचेगा। पाठक जानते हैं कि पालनपुर, रामपुर, भूपाल, टोंक, जावरा, जूनागढ़ और हैदराबाद में अधिकांश जनता हिन्दू है और शासक मुसलमान। देशी राज्यों में पिछले कुछ साल से पूर्व कोई साम्प्रदायिक झगड़े नहीं होते थे और जो गत दो-चार वर्षों के अन्दर हुए, वे वहाँ की सरकारों ने शान्त कर दिए। यह पहला ही मौक़ा है कि एक देशी राज्य के अन्दरूनी साम्प्रदायिक झगड़े को सार्वदेशिक रूप देने का प्रयत्न किया जा रहा है। ताज़े समाचारों से प्रकट है कि काश्मीर का झगड़ा शान्त हो रहा है और सर ज़ुलफ़िक़ार ख़ाँ आदि ने जो आन्दोलन किया उसका काश्मीर राज्य पर कोई असर नहीं पड़ा। लेकिन आशङ्का इस बात की है कि इस प्रकार की साम्प्रदायिकता की कहीं आवृत्तियाँ न होने लगें और छोटे-छोटे स्थानीय मामले सार्वदेशिकता का रूप धारण करके भयङ्कर स्थिति को और भी भयङ्कर न बना दें!

❀ ❀

इङ्गलैण्ड की नई सरकार

वाणिज्य की शिथिलता और आर्थिक सङ्कट इस समय समस्त संसार को घेरे हुए है। क्या यूरोप, क्या अमेरिका और क्या एशिया, सर्वत्र आर्थिक सङ्कट ने विषम रूप धारण कर रक्खा है। बड़े-बड़े धुरन्धर अर्थ-शास्त्रियों की अक़्ल हैरान है कि इस विश्व-व्यापी आपत्ति का निवारण कैसे हो। इङ्गलैण्ड में कई साल से बेकारी का प्रश्न अत्यन्त भयङ्कर हो उठा है और सरकार के सामने निरन्तर यही समस्या है कि उसको कैसे हल किया जाय। जिस समय इङ्गलैण्ड का शासन-सूत्र कञ्ज़रवेटिव सरकार के हाथ में था और बेकारी का प्रश्न उससे हल नहीं हो सकता था, तो मज़दूर-दल उसका विरोध करते हुए, हमेशा यह कहा करता था कि यदि शासन हमारे हाथ में होता तो हम बेकारी को अवश्य हटा देते। आज से लगभग ३ वर्ष पूर्व पार्लियामेण्ट का चुनाव हुआ तो बेकारी की विषमता मज़दूर नेताओं का निर्वाचन-मन्त्र था। आख़िर मज़दूर लोग बहुसंख्यक रूप में निर्वाचित हो गए और मज़दूर सर-

कार इङ्गलैण्ड का शासन करने लगी। इसी अर्से में रूस ने पञ्चवर्षीय आयोजन आरम्भ किया। चीन, पैलेस्टाइन और ईरान में अङ्गरेज़ी माल की खपत बहुत कम हो गई और भारत में स्वातन्त्र्य-संग्राम के साथ ही साथ विदेशी माल का बहिष्कार होने लगा। इसके अतिरिक्त अन्य कई विश्वव्यापी आर्थिक कारणों से इङ्गलैण्ड के व्यापार में शिथिलता बढ़ती गई और बेकारी ने चिन्ता-जनक रूप धारण करके विश्व में खलबली पैदा कर दी। ट्रेड-यूनियन कॉङ्ग्रेस नामक मज़दूरों की एक विशाल संस्था ने जब देखा कि सरकार की नीति से इङ्गलैण्ड की बेकारी घटती नहीं, बल्कि दिन-दिन बढ़ती जाती है तो उसने सरकार की तीव्र आलोचना करना आरम्भ कर दिया। पार्लिमेण्ट की मज़दूर पार्टी के बहुसंख्यक मज़दूर-प्रतिनिधि सरकार के विरोधी हो गए। लिबरल और कञ्ज़रवेटिव विरोधी पहिले से ही थे। इसे देख कर मन्त्रिमण्डल का सिंहासन हिल उठा और प्रधान मन्त्री श्री० मेकडॉनल्ड ने अपने पद से इस्तीफ़ा दे दिया।

परन्तु मि०मेकडॉनल्ड फिर भी अन्य नेताओं से बाज़ी मार ले गए। उन्होंने अन्य दलों से मिल कर यह तय कर लिया कि भविष्य के लिए राष्ट्रीय सरकार की रचना की जाय। इङ्गलैण्ड में राष्ट्रीय सरकार उसको कहते हैं; जिसके मन्त्रि-मण्डल में पार्लिमेण्ट की सब पार्टियों के सदस्य सम्मिलित हों। इस समय जो मन्त्रि-मण्डल बना है, उसके प्रधान-मन्त्री मि० मेकडॉनल्ड ही हैं। लेकिन भारत-सचिव सर सेम्युएल होर हुए हैं। भारत के भूतपूर्व वॉयसरॉय लॉर्ड-रीडिङ्ग पर-राष्ट्र-सचिव नियत हुए हैं और कञ्ज़रवेटिव दल के नेता मि० बाल्डविन। नई सरकार का उद्देश्य शासन के सब विभागों में ख़र्च की कमी करना और आर्थिक सङ्कट का निवारण करना है। पार्टी-नेताओं ने मिल कर यह तय कर लिया है कि जब वर्तमान विषम स्थिति हट जाएगी तो पार्लिमेण्ट के अलग-अलग दल अपनी पूर्व-नीति को पुनः ग्रहण कर लेंगे।

सरकार के स्वरूप का परिवर्तन इङ्गलैण्ड में एक महत्वपूर्ण घटना है। परन्तु हम लोगों को इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता नहीं। महात्मा गाँधी ने व्यङ्ग रूप में एक समाचार पत्र के प्रतिनिधि से कहा है कि यह बात एक गहन राजनैतिक विषय है, जिस पर मैं अपनी सम्मति नहीं दे सकता और पण्डित जवाहरलाल जी ने यह कहा है कि जब भारत का प्रश्न उपस्थित होता है तो किसी भी पार्टी का शासन हो, वह राष्ट्रीय शासन के बराबर है। उनके कथन का अभिप्राय यह है कि भारत के विषय में पार्लियामेण्ट की हमेशा एक ही नीति रहती है। शासन-सूत्र किसी भी दल के हाथ में क्यों न हो, भारत के प्रति पार्लिमेण्ट की नीति-परम्परा कभी नहीं बदलती। पाठक जानते हैं कि मज़दूर दल आर्थिक विषमता को हटाने के लिए और आज़ादी के लिए प्रयत्न करता रहता है, परन्तु उसके यह प्रयत्न वास्तव में इङ्गलैण्ड के लिए हैं, अन्य देशों के लिए नहीं। मज़दूर-दल के शासन-काल में ही भारत के सत्तर हज़ार नवयुवक और नवयुवतियाँ देशभक्ति के अपराध में जेलों में ठूँसे गए। हज़ारों सत्याग्रहियों को लाठियों और गोलियों से घायल किया गया। कितने ही गाँवों के कृषकों को लगान देने पर मजबूर करके नितान्त अकिञ्चन बनाया गया और कई स्थानों पर स्त्रियों का घोर अपमान किया गया। जो दल आर्थिक विषमता को हटा कर मज़दूरों का कल्याण करने का दावा करता है, उसके शासन-काल में ही महात्मा गाँधी, पूज्य मालवीय जी, त्यागमूर्ति स्वर्गीय पं० मोतीलाल नेहरू और प्रेज़िडेण्ट पटेल आदि ऋषि-तुल्य नेता जेलों में बन्द किए गए थे। देखें अब राष्ट्रीय सरकार क्या-क्या लीलायें दिखाती है?

❀ ❀ ❀

बर्मा के लिए गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स

ब्रिटिश सरकार ने अभी हाल ही में घोषित किया है कि अगले सितम्बर में बर्मा के भावी शासन-विधान का स्वरूप निश्चित करने के लिए इङ्गलैण्ड में एक गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स की जायगी। यह तो स्पष्ट ही है कि इस कॉन्फ्रेन्स में गवर्नमेण्ट उन्हीं बर्मी नेताओं को बुलाएगी, जो उसकी नीति के पोषक होंगे, या जिन में गवर्नमेण्ट की नीति का खुल्लमखुल्ला विरोध करने का साहस न होगा। इस प्रकार गवर्नमेण्ट अपने ध्येय की पूर्ति कर सकेगी।

एक अर्से से गवर्नमेण्ट यह चाह रही है कि बर्मा को भारत से पृथक कर दिया जाय। सरकार-भक्त समाचार पत्रों में पार्थक्य नीति के लिए निरन्तर आन्दोलन हो रहा है। गवर्नर और अन्य उच्च कर्मचारी अपने भाषणों में किसी न किसी प्रकार पृथकता के लाभ प्रदर्शित करने का अवसर ढूँढ़ लेते हैं। सरकार ने अपनी नीति के सन्तोषक अनेक दब्बू और अदूरदर्शी बर्मी नेता भी खड़े कर लिए हैं। बर्मा में निवास करने वाले भारतवासियों के प्रति बर्मियों में द्वेष उत्पन्न करने के लिए अनेक साधनों का उपयोग किया जा रहा है। पिछली गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स में बर्मा का नामधारी प्रतिनिधि जिसे गवर्नमेण्ट ने इङ्गलैण्ड भेजा था, वह भी पार्थक्य नीति का पोषक है। सरकार की तरफ़ से वर्त्तमान बर्मी बलवे के जो समाचार प्रकाशित किए जाते हैं, उनमें भी हम प्रायः यह पढ़ते हैं कि बर्मी लोग भारतीयों से घृणा करते हैं और उनका बर्मा में निवास उनको अनधिकार चेष्टा मालूम देती है। पाठकों ने हाल ही में पढ़ा होगा कि कई गाँव के बर्मियों ने भारतीयों के विरुद्ध लड़ाई लड़ी और कई स्थानों पर उनको खदेड़ भगाया।

हमारी समझ में यह बात नहीं आई कि बर्मा और भारत का सम्पर्क कई हज़ार वर्ष से है, परन्तु ऐसी स्थिति पिछले चन्द साल से ही क्यों उपस्थित हुई? भारत-सरकार को इस बात का अभिमान है कि भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्त उसकी न्याय-नीति और अप्रतिभ-सत्ता के कारण ही एक राज्य में मिले हुए हैं। और जिस दिन यहाँ से गोरे प्रभु बिदा हो जाएँगे उस दिन फिर भारत उन्हीं भागों में विभक्त हो जायगा। यदि यह दावा सच है तो अत्यन्त नम्रता और सम्मान के साथ सरकार से हम पूछते हैं कि साठ-सत्तर वर्ष तक बर्मा भारत के साथ रह कर अब क्यों अलग होना चाहता है? शान्ति और एकता की हिमायती सरकार इतने वर्ष तक एक विस्तृत प्रान्त को भारत के साथ रख कर अब क्यों अलग करना चाहती है? बर्मा में राष्ट्रीय दल के नेता और अनुयायी लोग पृथकता के विरुद्ध हैं। कई सभाओं में इसका विरोध किया जा चुका है। अभी हाल में इस राष्ट्रीय दल का एक डेपुटेशन महात्मा गाँधी की सेवा में उपस्थित हुआ था और निवेदन किया था कि बर्मा को भारत से पृथक करना राष्ट्रीय दृष्टि से बर्मा के लिए अहितकर है। परन्तु सरकार ने पृथकता के विषय में अन्तिम निश्चय कर लिया है, यह बर्मा सम्बन्धी गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स के एलान से स्पष्ट है। वास्तव में बर्मा को भारत से अलग करने में सरकार की एक गहरी चाल है। सरकार-भक्त-बर्मियों को अभी इसका पता नहीं लगता, परन्तु शीघ्र ही उन्हें पछताना पड़ेगा। भारत-जैसे विशाल और विस्तृत देश के साथ रह कर बर्मा राजनैतिक स्वतन्त्रता शीघ्र ही प्राप्त कर सकता था, परन्तु पृथक हो जाने पर उसको दबाने में सरकार को कोई हिचक तथा कठिनाई नहीं होगी।

❀ ❀ ❀

काले क़ानून की सृष्टि !

हम कई दिनों से जिस प्रेस और सम्बाद-पत्र-घातक क़ानून की चर्चा सुनते थे, वह व्यवस्थापिका परिषद में होम-मेम्बर मिस्टर केरार द्वारा गत ७ सितम्बर को उपस्थित हो गया। मिस्टर केरार ने बतलाया कि पहले जो बिल बना था, उसकी मार बहुत लम्बी थी, लेकिन इसकी मार कम दूर की है। यह क़ानून हिंसाओं को उत्तेजना देने वाले कार्यों के विरुद्ध प्रयुक्त होगा। मिस्टर बी० दास ने बिल के पेश करने का विरोध किया, परन्तु बिल पेश हो ही गया।

तुर्रा यह है कि ७ तारीख़ को बिल पेश हुआ और ११ सितम्बर शुक्रवार को एक विशिष्ट समिति को सौंप दिया गया और इस प्रतिबन्ध के साथ सौंपा गया कि समिति सात दिन के भीतर ही अपनी रिपोर्ट परिषद के सामने उपस्थित कर दे!

साधारणतः नियम यह है कि जब किसी नए क़ानून के लिए पाण्डु-लिपि (बिल) तैयार होती है तो वह अच्छी तरह सम्बाद-पत्रों में प्रकाशित कराई जाती है, जिससे जिस जनता के हित की दृष्टि से क़ानून बनाया जाता है, वह अच्छी तरह मसविदे को समझ कर, उस पर अपने विचारों को प्रकट कर सके। परन्तु इस मारात्मक क़ानून के लिए सरकार ने ज़रूरी नहीं समझा कि उसकी पाण्डुलिपि पूरी तरह पर प्रकाशित की जाय। शायद इसका यही कारण है कि प्लेग या हैज़े की बीमारी भी रोगी को दवा करने का काफ़ी समय नहीं देती, फिर उसी प्रकार के क़ानून की चाल-ढाल उसी के समान होना उचित है।

इस क़ानून पर विचार करने के लिए ५-६ दिन काफ़ी हैं या नहीं और इस विशिष्ट-समिति में कौन-कौन लोग होंगे, इस पर ध्यान देना व्यर्थ है। वर्तमान व्यवस्थापिका परिषद में राष्ट्रीय पक्ष के स्पष्टवादी सदस्य इने-गिने ही हैं, शेष सब 'हाँ-हज़ूर' दल के लोग हैं, उनसे चतुर मिस्टर क्रेरार ने पहले ही सलाह कर ली है या अनुमति ले ली है।

हमें आज से ही यह समझ लेना चाहिए कि सिवा सरकारी, अर्द्ध सरकारी, गोरे, अधगोरे और हाँ-हज़ूरी देशी पत्रों के, अब किसी का गुज़र होने वाला नहीं है।

दुनिया का दस्तूर है कि वह शत्रु के भी सच्चे वार की सराहना करती है, चोरों और डाकुओं के भी साहस और बहादुरी की प्रशंसा करती है। लेकिन इसका यह अर्थ कभी नहीं होता कि सराहना करने वाला चोरी और डाके को पसन्द करता है, चोर और डाकुओं को उनकी दुष्कृतियों के करने को प्रोत्साहन देता है। शत्रु की सराहना से क्या यह मतलब होता है कि वह जीत जाय और ऐसे ही तन-तन कर हमारे ऊपर वार करे, जिससे हम जल्दी हार जायँ? अगर इस प्रकार की प्रशंसा का अर्थ है शत्रु और पापात्माओं को प्रोत्साहन देना तो निस्सन्देह ऐसे अर्थ करने वाले के अन्तःकरण से वीर्य्य और शौर्य्य का लोप हो गया है, वह गन्दा हृदय कायरता-तमाच्छादित संसार को विशुद्ध रूप से समझने में सर्वथा असमर्थ है।

हम बतला देना चाहते हैं कि इस प्रकार एक क्या, एक सहस्र क़ानून सरकार क्यों न बनावे, मनुष्य-स्वभाव जो कल्पान्तर से बना है वह क़ानूनों से कदापि नहीं बदल सकता, संसार कुत्ते को कुत्ता और बिल्ली को बिल्ली कहना नहीं छोड़ सकता।

आज पर्य्यन्त जो कुछ भी सम्बादपत्रों में लिखा गया, जिनमें से कुछ उद्धरण पुस्तक के रूप में एसेम्बली में बाँटे भी गए हैं और जिन्हें हमारे साहित्याचार्य्य

मि० क्रेरार होम-मेम्बर ने बड़े ग़ौर से पढ़ा और एसेम्बली के मेम्बरों को, सम्भवतः बड़े लाट को भी पढ़ाया है, उनमें से एक में भी यह न मिलेगा कि 'सरदार भगतसिंह ने जो किया ठीक किया, ऐसा ही होना चाहिए था और दूसरे देश के नवयुवकों को भी इसी पथ का पथिक और इसी व्रत का व्रती होना चाहिए।'

यह हो भी कैसे सकता था, जबकि देश भर का सिद्धान्त अहिंसात्मक है। अगर सरकार की या होम-मेम्बर की धारणा ठीक होती तो पिछले आन्दोलन में सारे देश में लट्ठ बज उठना चाहिए था। हम लोग दूर-दूर ग्रामों में फिरते थे, जहाँ चौकीदारों का पुतला तक भी नहीं होता था और हमारे सामने सुनने वाले बे-पढ़े ग्रामीण होते थे, जिन्हें लट्ठ चलाना, मरना-मारना खेल है, उस समय हम उनको प्रोत्साहन दे सकते थे—कह सकते थे कि उठो, रक्तपात के लिए तैयार हो जाओ। पर ऐसा करना न हमें अभीष्ट था, न हमारे प्रधान नेता को पसन्द था।

बमबाज़ बच्चों के लिए न रास्ते बन्द हैं, न उनके पहचानने के लिए अभी तक सरकार ने किसी ऐसे औज़ार का आविष्कार ही किया है जिससे वे राह चलते पकड़े जा सकें। यह लोग चाहे जहाँ जाकर अपनी विद्या और अपने मनोभावों को स्वतन्त्रता से फैला सकते थे। लेकिन नहीं, जनता को महात्मा जी का सन्देश इनकी बातों के सुनने से बराबर निश्चेष्ट करता रहा।

जब इङ्गलैण्ड और जर्मनी में गत महासमर काल में देश-घाती लोग पैदा हो सकते हैं, जो धन के लिए अपना भेद दुश्मनों को दे दें तो भारत की ३२ करोड़ की आबादी में ऐसे मुट्ठी भर आदमियों का होना अनहोनी बात नहीं है, जो यह समझते हों कि अपने विरोधी को प्यार करना कायरता है और उसका रक्तपात करना वीरता है। इनमें से किसी की जब सराहना की जाती है तो उनकी कृति की सराहना नहीं होती, किन्तु उनके त्याग के भावों की सराहना होती है, साहस की सराहना होती है।

अगर हमारी तरफ़ से हिंसा द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्त करने में पक्षपातियों के प्रति देश का हार्दिक और वास्तविक प्रेम होता या सम्वाद-पत्रों की मनोवृत्ति उन लोगों के अनुकूल होती तो भारतवर्ष कब का ही आयर्लैण्ड बन गया होता। लेकिन हमारी यह सब दलीलें बेकार हैं, भेड़िए के आगे बेचारी बकरी की एक भी दलील न चल सकी और आख़िर उसने बकरी को उदर-दरी में धर ही लिया!

❀

"समझौता नहीं, युद्ध का वातावरण"

"आत्मरक्षात्मक सत्याग्रह शुरू करना पड़ेगा"

देश की स्थिति पर कॉङ्ग्रेसी नेताओं की राय

अहमदाबाद, १० सितम्बर

कॉङ्ग्रेस की वर्किङ्ग कमिटी के सम्बन्ध में आए हुए कॉङ्ग्रेसी नेताओं ने देश की वर्तमान स्थिति पर विचार प्रकट करते हुए एसोसिएटेड प्रेस के प्रतिनिधि से कहा है—'परिस्थिति बदतर होती जा रही है, यह वातावरण समझौते का नहीं, युद्ध का है। अधिकारीगण समझौते की शर्तों का पालन नहीं कर रहे हैं। वे कॉङ्ग्रेस वालों को बराबर सता रहे हैं। पुलीस कॉङ्ग्रेस की साधारण कार्रवाइयों में हस्तक्षेप कर रही है। अनेक स्थानों पर आत्मरक्षात्मक सत्याग्रह आरम्भ करने का स्पष्ट अवसर उपस्थित है, परन्तु हम लोग यह सत्याग्रह आरम्भ करने की आज्ञा माँगने में केवल इस बात से हिचकिचा रहे हैं कि हम सब लोगों की इच्छा है कि इस समय, जब कि गाँधी जी लन्दन में हैं, कोई अरुचिकर परिस्थिति न उत्पन्न हो जाय। यदि यह स्थिति असह्य हो गई, तो हम लोगों को किसी भी क्षण आत्मरक्षात्मक सत्याग्रह शुरू करने पर बाध्य होना पड़ेगा।'

इसके बाद अनेक सदस्यों ने स्थान-स्थान पर अधिकारियों द्वारा समझौते की शर्तें तोड़ी जाने वाली घटनाओं का वर्णन किया। एक सदस्य ने कहा कि मद्रास प्रान्त में चित्तूर के कलेक्टर ने सभाएँ नहीं होने दीं, राष्ट्रीय झण्डों के फहराने की मनाही कर दी और शान्तिपूर्ण पिकेटिङ्ग रोक दी। दूसरे सदस्य ने यह कहा कि अमृतसर ज़िले में अतिरिक्त पुलीस अभी तक क़ायम है और बड़ी सख़्ती से उसका टैक्स वसूल किया जाता है।

ख़र्च में कमी की ज़रूरत

ब्रिटेन में पार्लियामेण्ट के सदस्यों और मन्त्रि-मण्डल के सदस्यों तथा और-और विभाग के कर्मचारियों के वेतन में कमी करने की तजवीज़ हुई है और इस आर्थिक कष्ट के समय ऐसा होना उचित ही है। इङ्गलैण्ड की आर्थिक दशा बहुत शोचनीय है, बेकारी बढ़ रही है, सरकार के सिर पर ऋण का भार भी कम नहीं है, नया कर लगाने से जनता में कोलाहल मचेगा, चीत्कार फैलेगा!

लेकिन अभागे भारत में भूख से मरने वालों, बेकारों का तो न कोई लेखा है न पूछने वाला है, ऋण भी सर से ऊँचा हो गया है। किसानों की हड्डियों को फोड़-फोड़ कर ज़मींदारों द्वारा लगान वसूल होता है, फिर भी लगान पूरी तरह नहीं मिलता। नया कर लगाने का अर्थ मरते को मारना होगा? इतने पर भी हम देखते हैं कि थोड़ी-थोड़ी तनख़्वाह वाले नए नौकर निकाले जाते हैं, कहीं रेलवे में आदमियों की कमी की जाती है, कहीं भूख से मरते छोटे नौकरों के वेतन पर दृष्टि डाली जाती है।

अच्छा होता, जो बड़े लाट साहब का वेतन, छोटे लाटों की तनख़्वाह, कमिश्नरों, कलेक्टरों, डिप्टी कलेक्टरों, जजों इत्यादि-इत्यादि का मासिक वेतन आधा कर दिया जाता। इस तरह भारत के १७ सूबों में काफ़ी बचत हो सकती थी और किसी को कष्ट भी प्रतीत न होता। क्योंकि हम देखते हैं कि ये ही मोटी-मोटी तनख़्वाह पाने वाले इज़ारात लम्बी-लम्बी रक़में बैङ्कों में जमा करते हैं, ज़मींदारी ख़रीदते और अनाप-शनाप ख़र्च करते हैं। अगर यह लोग ५-७ वर्ष में धनवान होने के बदले १५-२० वर्ष में धनवान होंगे, या दस लाख के धनी होने के स्थान में पाँच लाख के ही धनी होंगे तो इतना बुरा न होगा, जितना कि अगणित आदमियों के अन्न और वस्त्र की कमी से मर जाने से होता है।

१०००) पाने वाले का काम ५००) में चल सकता है, किन्तु ३०), ४०) या १००) पाने वाले का काम १५) २०), ४०) से या बिल्कुल पैसा न होने से नहीं चल सकता।

जब तक कोई आदमी ख़र्च का नियन्त्रण नहीं करता, वह चाहे जितना पैदा करे, कभी भी धनवान और सुखी नहीं हो सकता। गवर्नमेण्ट को भी समझना चाहिए कि वह कम से कम दाम के नौकर रक्खे और कम से कम जनता पर कर लगाए और जो कर लगाएँ उसका भार धनवानों पर अधिक पड़े, ग़रीब उसके नीचे न दबें। इससे गवर्नमेण्ट को चिन्तित न होना पड़ेगा, जनता सुखी रहेगी और सरकार पर मुसीबत पड़ने के समय स्वतः धन, जन से सहायता तैयार मिलेगी। आजकल तो सरकार और जनपद में शत्रुता का भाव देखा जाता है, इसका एकमात्र कारण जनता का सरकार द्वारा लूटा जाना है।

❀ ❀

पुलीस से पीड़ित युवक!

हमारे पास श्री० जगमन्दिर दास जैन देहलीनिवासी का एक पत्र आया है, हम उसका सार नीचे देते हैं:—

"मैं दिल्ली षड्यन्त्र केस के अभियुक्त विमलप्रसाद का भाई हूँ। 'भविष्य' में नोटिस देख कर नौकरी की तलाश में ७ सितम्बर को इलाहाबाद पहुँचा। मुझे 'चाँद' कार्यालय में लेखक की जगह भी मिल गई।

"जैसे ही मैं इलाहाबाद जङ्क्शन स्टेशन पर उतरा कि ख़ुफ़िया पुलीस ने मेरा पीछा किया। दिन-रात जहाँ मैं रहा, पुलीस स्थान को घेरे रही। ६ सितम्बर को 'चाँद' कार्यालय में भी जाँच की गई थी। यह परिस्थिति देख, श्री० सहगल जी ने मुझे नौकरी से अलग कर दिया।

"६ ता० को मैंने सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलीस को एक दरख़्वास्त दी कि मुझे ख़ुफ़िया पुलीस रात-दिन घेरे रहती है। या तो आप पुलीस हटा कर मुझे नौकरी करने दें या मुझे गिरफ़्तार कर लें। इसका उत्तर सु० पुलीस ने ज़बानी कह दिया कि दिल्ली से ख़बर मँगा कर ठीक जवाब दिया जायगा।

"अन्त में सु० पु० की आज्ञानुसार दो सिपाहियों के साथ मैं धर्मशाले से अपना असबाब लेकर कर्नलगञ्ज पुलीस थाने गया। वहाँ मेरी तलाशी हुई। तलाशी के समय सिवा मेरे साथ के दो सिपाहियों और एक पुलीस स्टेशन के सब-इन्स्पेक्टर के और कोई नहीं था। तलाशी में कोई दोषारोपक चीज़ मेरे पास नहीं निकली। श्री० बिमल प्रसाद के दो फ़ोटो मेरे पास थे। उन्हें पुलीस ने ले लिए। बाद में २००) का मुचलका लेकर मुझे ता० ११ को छोड़ा और दोनों फ़ोटो लौटा दिए, इसलिए मैं आज घर वापस जा रहा हूँ।"

हमको श्री० जगमन्दिर दास की बातों पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं जान पड़ता। दिल्ली के 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में छपे एक सम्वाद से भी हमको विदित होता है कि पिछले शनिवार को वे जेल में अपने भाई से नौकरी के लिए बाहर जाने के सम्बन्ध में सम्मति लेने गए थे, पर भेंट करने की आज्ञा नहीं दी गई, इस तरह पर नौजवान बेकार लड़के को सताना और नौकरी से वञ्चित रखने से न पुलीस की प्रतिष्ठा बढ़ती है और न वही अर्थ सिद्ध होता है, जिसके लिए पुलीस दौड़-धूप करती है। पढ़े-लिखे बेकार लड़के ही ज़्यादा बमबाज़ी में भाग लेते हैं, अगर यह सब काम में लग जायँ तो बहुत कुछ सरकार की इस ओर की चिन्ता कम हो जाय। मगर पुलीस और सरकार सब उलटी ही चाल चलते हैं—इसका कोई इलाज नहीं!

❀
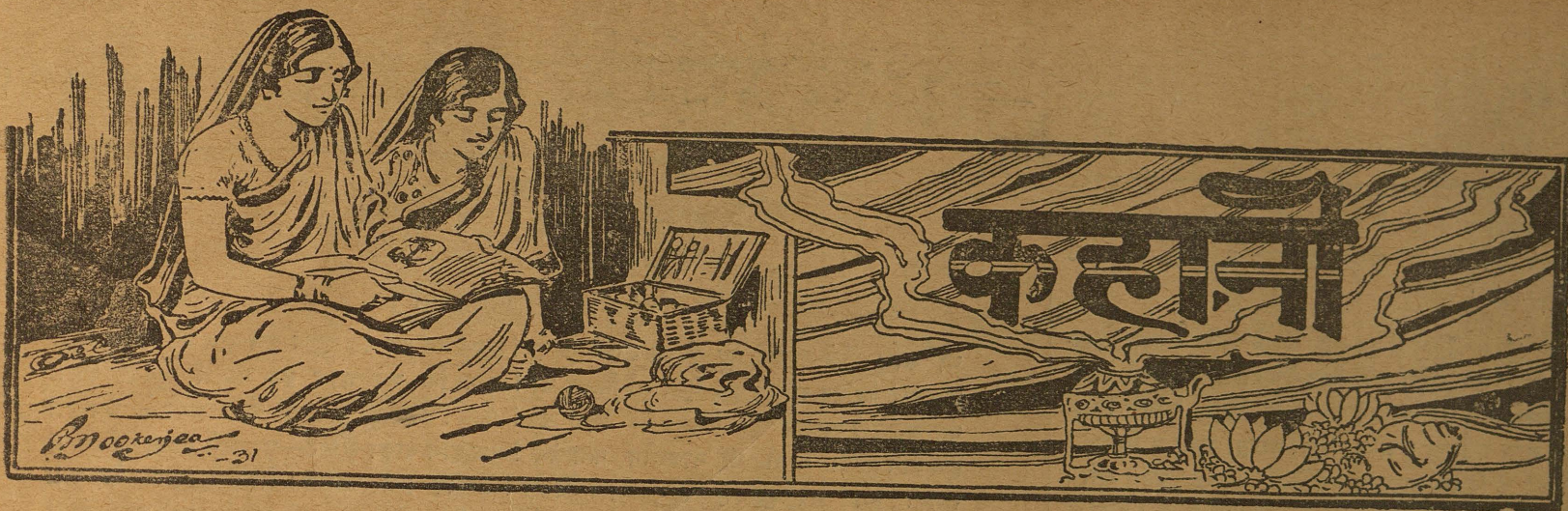
उसके द्वार पर

[श्री० हरिश्चन्द्र जी वर्मा, विशारद]

मलीला में फ़साद हो जाने का समाचार सारे नगर में फैल ही चुका था। घर-घर में स्त्रियाँ और बूढ़े आदि अपने पति, पुत्रों तथा बच्चों आदि के सकुशल लौट आने की चिन्ता में व्याकुल हो रहे थे। घड़ी-घड़ी पर मेले से प्राण बचा कर लौटे हुए लोग आते थे और उनकी ज़बानी नई-नई अफ़वाहें सुनाई देती थीं। कोई कहता था कि मुसलमान पिट रहे हैं, हिन्दू ज़बर हैं और कोई कहता हिन्दू पिट रहे हैं, मुसलमानों की बन आई है। पल-पल पर हल-चल बढ़ती जा रही थी। ऐसा प्रतीत होता था, मानो लड़ाके इधर ही को बढ़ते चले आ रहे हैं। दूकानदार शीघ्रता से दूकानें बन्द करके घरों को भागने लगे। जिसे देखो, वही एक-दूसरे को अन्दर हो जाने को कह रहा था।

देखते-देखते 'अल्लाहो अकबर' और 'बजरङ्गबली की जय' के नारों से आकाश गूँज उठा। क्षण भर में एक बड़ी भीड़ हो-हल्ला मचाती हुई सामने वाली सड़क पर से निकल गई। तड़ातड़ लाठियाँ बज रही थीं और घायल सड़क पर गिर रहे थे। स्थान-स्थान पर रक्त से भूमि लाल हो रही थी। थोड़ी देर के बाद सड़कों पर सन्नाटा छा गया और उधर आकाश में सूर्य भगवान ने भी अपनी स्वर्णमयी किरणों के जाल को पूर्णतया समेट लिया। कदाचित वे एक ही परमेश्वर की बनाई दो जातियों के, जिन्हें आपस में प्रेम तथा ऐक्य से रहना चाहिए, साम्प्रदायिक झगड़े को देखना नहीं चाहते थे। अन्धकार का आरम्भ हो गया; आकाश में कहीं-कहीं एकाध तारा अपनी क्षीण ज्योति से टिमटिमा आया था।

इस समय पुलीस के सिपाही तथा सेवा-समिति के स्वयंसेवक गिरे और आहत मनुष्यों को अस्पताल पहुँचा रहे थे। मृतकों के शव खोज-खोज कर उनके संरक्षकों को सौंपे जा रहे थे।

ख

गिर्जे की घड़ी 'टन-टन' करके दो बजा चुकी थी। रामलीला के मैदान से नगर को आने वाली राह पर एक पतली गली के भीतर पूर्ण सन्नाटा था। केवल आकाश के एक भाग से चन्द्रदेव संसार पर अपनी शान्तिमयी किरणों का जाल फैलाए उसकी दयनीय दशा का अवलोकन कर रहे थे। एक छोटे अथवा कच्चे मकान के बाहरी कमरे में एक दीपक अपनी मन्द ज्योति से जल रहा था। कमरे में एक चारपाई पर एक ४२-४३ वर्षीया प्रौढ़ा बैठी थी। उसके सम्मुख एक दूसरी चारपाई पर एक बाईस-तेईस वर्षीय युवक तुर्की टोपी लगाए बैठा था। दोनों में कुछ बातचीत हो रही थी।

वृद्धा ने कहा—बेटा अनवार! अभी ऐसी जल्दी क्या है? जब झगड़ा शान्त हो जाय तो चले जाना। देखो चारों ओर कुहराम मचा है, क्षण-क्षण पर धावे हो रहे हैं, स्थान-स्थान पर मार-काट मची है। भगवान ही मालिक हैं।

अन०—नहीं माँ! अब कोई डर की बात नहीं है। अब मैं चुपके से अपने घर चला जाऊँगा। दिन में जाने में ज़्यादा ख़तरा था, उधर मेरे घर पर भी सब लोग घबराते होंगे, इसलिए जाना ज़रूरी है।

वृद्धा—अच्छी बात है, जाओ, भगवान तुम्हारी रक्षा करेंगे।

अन०—शुक्र है, उस परवरदिगार का माँ, जो तुमने ऐन मौक़े पर मुझे अपने घर में जगह दी, वरना अगर वे हिन्दू मुझे इस घर में घुसते देख लेते तो कभी ज़िन्दा न छोड़ते।

वृद्धा—हाँ बेटा, वही भगवान ठीक समय पर सब की रक्षा करता है।

अन०—अच्छा माँ! अब इजाज़त दो।

वृद्धा—जाओ बेटा, परमेश्वर तुम्हें कुशल से घर पहुँचा दें।

वृद्धा ने उठ कर द्वार खोला, अनवार बाहर निकला। उसने वृद्धा को प्रणाम किया, वृद्धा ने आशीर्वाद दिया।

अनवार देखते-देखते आँखों से ओझल हो गया। वृद्धा ने द्वार बन्द कर लिए।

ग

नगर में कर्फ़्यू ऑर्डर लग चुका था। पुलीस ज़ोर शोर से झगड़े को शान्त करने का प्रयत्न कर रही थी परन्तु कुछ विशेष फल होता दिखाई न देता था। धावे तथा चढ़ाइयाँ होना अब बन्द हो चुकी थीं, परन्तु क़त्ल अभी तक जारी थे। एक्का-दुक्का कोई हिन्दू मुसलमानों के घात में या मुसलमान हिन्दुओं के घात में पड़ जाता तो क़त्ल कर दिया जाता था। गुण्डे गुट्ट बाँधे छिपे बैठे ताका करते थे और अवसर पा, हाथ साफ़ कर, चम्पत हो जाते थे। स्टेशन पर पुलीस का पहरा था। वहाँ से कोई आदमी शहर में न आने पाता था।

परन्तु 'सेविन-अप-ट्रेन' से उतरे हुए मुसाफ़िरों में से एक युवक शीघ्रतापूर्वक सबकी दृष्टि बचा कर स्टेशन की दूसरी ओर से नगर की ओर चल दिया। उसके शरीर पर केवल एक मोटी धोती, एक खद्दर की कमीज़ तथा कोट और एक गाँधी टोपी थी। गले में एक लम्बा गाढ़े का अँगोछा भी पड़ा था। उसके मुख पर चिन्ता तथा व्यग्रता के चिन्ह स्पष्ट थे। वह तेज़ी से डग बढ़ाए एक फेर-फार की राह से चला जा रहा था। सारी सड़क पर सन्नाटा छाया हुआ था। मार्ग प्रायः बस्ती से बाहर होने के कारण वहाँ कोई मनुष्य आता-जाता दिखलाई न देता था। क़रीब दो फ़र्लाङ्ग आगे पूर्व की ओर एक गली थी। युवक इसी गली में घुस गया।

पक्के फ़र्श की शब्द-शून्य गली में युवक के जूतों की खट-खट निकट के मकानों की दीवारों से टकरा कर प्रतिध्वनि पैदा कर रही थी। युवक भी इसी ध्वनि में मस्त जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाए चला जा रहा था। सहसा बराबर के एक मकान की खिड़की से एक दाढ़ी वाले पुरुष ने झाँक कर देखा। युवक उस समय तक कोई दस क़दम आगे जा चुका था। क्षण भर में निकट के घर का द्वार खोल कर एक युवा पुरुष नङ्गे पैर निकला और तेज़ी से युवक के पीछे दौड़ा। उसके दाहिने हाथ में एक चमचमाता छुरा था। इसी समय कई और लोग निकल कर उसकी ओर देखने लगे। कुछ दूर आगे चल कर गली एक दूसरी सड़क से मिलती थी। युवक उस समय गली समाप्त कर सड़क पर आने वाला ही था कि पीछे से किसी के पैरों की ध्वनि सुनाई दी। वह रुका, घूम कर देखा, परन्तु घूमने के पूर्व ही छुरा उसके वक्षस्थल के पार हो चुका था। वह 'आह' कर पृथ्वी पर गिर पड़ा। ख़ून की धारा बह चली, शरीर तड़पने लगा।

सौभाग्य से पुलीस के चार सिपाही उधर से आ निकले। उन्होंने यह हत्याकाण्ड देखा। वे दौड़े, परन्तु मारने वाला तब तक घर में घुस चुका था। वे उसे पकड़ न सके। उसने उनके पहुँचने के पूर्व ही भीतर घुस, द्वार बन्द कर लिया। अब सिपाहियों ने आपस में सम्मति की। दो ने आहत युवक को सँभाला, तीसरा द्वार पर रहा, चौथे ने जाकर थाने में ख़बर दी। गारद आई, आहत को अस्पताल पहुँचाया गया। मकान की तलाशी हुई। घातक भागने का प्रयत्न करने पर भी गिरफ़्तार कर, थाने भेजा गया। पाँच पुरुष और भी गिरफ़्तार हुए।

कुछ देर में गली में पुनः सन्नाटा छा गया।

घ

अस्पताल पहुँच कर मृतप्राय युवक का बयान लिया गया। उसने बताया कि "उसका नाम दीनानाथ है। वह चार-पाँच दिन से कहीं बाहर गया हुआ था। शहर में दङ्गे का समाचार सुन कर वह तुरन्त अपनी वृद्धा माता के पास लौटा आ रहा था। उसके केवल एक वृद्धा माता ही है।" इससे अधिक वह और कुछ न कह सका। उसके मुख और आहत-स्थान से रक्तपात होने लगा। वाक्शक्ति बन्द हो गई। निर्जीव शरीर पीला पड़ गया।

युवक की जीवनाशा क्षण-क्षण पर निराशा के रूप में परिणत होती जा रही थी, वह अब केवल कुछ मिनटों का ही अतिथि था। पुलीस ने उसकी माता को उसकी दशा का समाचार दे दिया था। यह बतलाना आवश्यक नहीं कि उसकी माता वही वृद्धा थी, जिसने आज से तीन दिन पहले एक मुसलमान युवक की प्राण-रक्षा की थी। अभागिनी ने यह हृदय-विदारक समाचार सुना तो उसके प्राण सूख गए! कलेजे पर पत्थर सा गिर पड़ा। तुरन्त अचेत हो गई। चेत आने पर पुलीस उसे अस्पताल ले गई। बड़ी कठिनता से वह अस्पताल पहुँची। दीनानाथ की साँस तीव्रता से चल रही थी। उसके नेत्र बन्द थे। माता ने पुत्र को देखा, तो चाख़ कर उससे लिपट गई। उसके नेत्रों से झर-झर अश्रु-धारा बह रही थी। मुख से एक शब्द भी न

निकलता था। उसने उसके मुख की ओर देखा, प्रेम के आवेग में झट मुँह बढ़ा कर उसने पुत्र के ओष्ठ चूम लिए।

युवक की मूर्च्छा टूट गई। उसने अन्तिम बार, केवल अन्तिम बार, अपने उन्मीलित नेत्र खोले, माता को देखा, टकटकी बँध गई, बोलने का प्रयत्न किया, परन्तु जिह्वा ने साथ न दिया। ओष्ठ हिले, परन्तु शब्द न निकले। हृदय के विचार घुल-घुल कर नेत्रों की राह बहने लगे। उसने उठने का प्रयत्न किया, परन्तु निष्फल! वृद्धा ने उसे सँभाला उसने हाथ बढ़ा कर जननी के पैर छुए, अन्तिम बार निराशा भरी दृष्टि से संसार की ओर देखा और सदा के लिए नेत्र बन्द कर लिए।

वृद्धा विस्फारित नेत्रों से यह सब देख रही थी। उसके नेत्रों की पुतलियाँ अचल थीं, नेत्रों में आँसू न थे। उनसे तो निकल रही थीं किरणें—केवल दारुण विक्षिप्ति की।

५

दङ्गे के मुक़दमे ज़ोर-शोर से चल रहे हैं। प्रति दिन दस-पाँच केस पेश होते हैं और जुर्माना, क़ैद तथा अन्य प्रकार के दण्डों के साथ फ़ैसले सुना दिए जाते हैं। इधर कई दिनों से अनवार हुसेन नामक युवक पर दीनानाथ की हत्या का मुक़दमा चल रहा था। यथार्थ में उस दिन दीनानाथ को छुरी मारने वाला था भी वही। प्रति दिन पेशी होती है, घण्टों बहसें होती हैं और तारीख़ बदल दी जाती है। अदालत हर रोज़ खचाखच भरी रहती है। लोग फ़ैसला सुनने को टूटे पड़ते हैं। परन्तु सन्ध्या को निराश होकर लौट आते हैं। अन्त में आज मुक़दमे का फ़ैसला सुना दिया गया

अनवार को फाँसी और उनके साथियों को नौ-नौ मास का कठिन कारावास का दण्ड मिला। अनवार का कलेजा बैठ गया, कर्मों के पश्चात्ताप का भूत उसके सिर पर सवार हो गया। मृत्यु-भय से उसका रोम-रोम काँप उठा। अदालत से भीड़ छँट चुकी थी। लोग भाँति-भाँति की चर्चा करते, अपने घरों को जा चुके थे। अनवार उस समय पुलीस के साथ जेलख़ाने जा रहा था। अदालत के बरामदे से निकल कर सीधे सड़क से न जाकर पुलीस के सिपाही उसे निकट की पगडण्डी से ले चले। उस समय कुल कचहरी बन्द हो चुकी थी। केवल बचे-खुचे अमले दफ़्तरों को बन्द कर, अपने-अपने घरों की ओर लपक रहे थे।

बरामदे के अन्त सीढ़ी पर एक पगली बैठी थी। उसका सिर खुला था। सन-जैसे श्वेत-केश सिर से कन्धे तक फैले हुए थे। शरीर पर केवल एक धोती थी। वह दीनानाथ की वृद्धा माता थी। अनवार ने उसे पहचान लिया। क्षण-भर में किसी पूर्व-घटना की याद ने अनवार को नख से शिख तक कँपा दिया। इसी वृद्धा ने एक दिन उसके प्राण बचाए थे। उसके हृदय में एक विकट चीत्कार सा मच गया। आह! प्राण-रक्षा का क्या यही बदला है? क्या इसी के लिए वृद्धा ने उस दिन उसके प्राण बचाए थे? तुरन्त ही मन ने कहा—परन्तु मुझे यह तो नहीं ज्ञात था कि यह मेरी प्राणरक्षक माँ का पुत्र है। जो कुछ हुआ, धोके से......।।

आत्मा ने बात काट कर कहा—हिश! तनिक-तनिक सी बात पर धर्म का नाश समझने वाले, धर्मान्ध धर्म के ठेकेदारों की उत्तेजना से प्रेरित हो, क्या इस प्रकार आपस में कट-मरना चाहिए था? यदि मैं उस उत्तेजना में न पड़ता तो क्या यह सब होता?

(शेष मैटर १६वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम के नीचे देखिए)

घण्टा नहीं बजेगा!

[श्री० इन्द्रजीत शर्मा]

था शाम रोज़े-मातम का गिरने वाला परदा! इङ्गलैण्ड का वह सूरज लबे-बाम जा लगा था!!
उस वक़्त का वह मञ्ज़र कुछ ऐसा जाँ-फ़िज़ा था! गोया कि रूहे-ताज़ा हर शै में फूँकता था!!
वह आख़िरी शुआएँ दो बेबसों के दिल पर! ऊफ़्! क़हर ढा रही थीं बोसे ज़बीं के लेकर!!
इक होने वाली बीबी थी नाज़नीन कमसिन! एक होने वाला शौहर—था मरने वाला लेकिन!!
ग़मगीं था सर झुकाए महुए-ख़्याल बेबस! तस्वीरे ग़म सरापा बेक़ीलो-क़ाल बेकस!!
बारे अलम से उसके उठते क़दम नहीं थे! भारी बने हुए थे पड़ते कहीं-कहीं थे!!
बिखरे थे नाज़नीं के चमकीले बाल सर पर! और यह सदा लबों से आती थी लड़खड़ा कर!!
"घण्टा नहीं बजेगा—घण्टा नहीं बजेगा!!"

इक मजिस कुहिन वह जिसमें जवाँ मुक़ैयद! दीवारें काली-काली और काले-काले गुम्बद!!
वहशत बरस रही थी दीवार और दर पर! दोज़ख़ का था नमूना वह ख़ौफ़नाक मञ्ज़र!!
ज़िन्दाँ की सिम्त करके घड़याली से इशारा! करने लगी हसीं वह यों राज़ आशकारा—
बेचारा मेरा आशिक़ उस जेल में पड़ा है! जिसको सेशन जजी से यह हुक्म हो चुका है!!
"जब शब को तेरे घण्टे का होगा शोर महशर! खींचेंगे उसको क़ातिल उफ़्! दार पर चढ़ा कर!!
तेरे सिवा जहाँ में हामी मेरा न यावर! फूटा मेरा मुक़द्दर अफ़सोस! यह मुक़द्दर!!
जब तक न आसमाँ पर ज़ुलमत हो आज तारी! घण्टा न बजने पाए क़ुरबान जाऊँ वारी"!!
आई वही सदा फिर शीरीं दहन से बाहर! भूरे लबों से रुक-रुक कर और लड़खड़ा कर—
"घण्टा नहीं बजेगा—घण्टा नहीं बजेगा!!"

घण्टा बजाने वाला कहने लगा कि "घण्टा—बजता रहा है मग़रिब के वक़्त यह हमेशा!!
अब तक नहीं हुई है मुझसे नमकहरामी! इस फ़र्ज़ की बदौलत पाई है नेक-नामी!!
काटी है उम्र सारी घण्टा बजा-बजा कर! क्यों फ़र्ज़ें मन्सबी से हो जाऊँ आज बाहर?
दामाने आक़बत पर धब्बा न मैं लगाऊँ! यह ज़िन्दगी का जौहर क्यों मुफ़्त में गवाऊँ?
घण्टा तो यह बजेगा—घण्टा तो यह बजेगा!!"

सुन कर जुनूँ समाया यह नाज़नीं के सर में! चेहरा बदल गया वह, बहशत-भरी नज़र में!!
बेदर्द जज ने होकर जो हुक्म दे दिया था! रह-रह के नाज़नीं के दिल में वह गूँजता था!!
आता था ध्यान जिस दम—बढ़ती थी बेक़रारी! घण्टा बजेगा फाँसी 'बेसिल' को जब लगेगी!!
सीने में उसके ग़म का शौला भड़क रहा था! और यों लबों पै मिसरा आकर अटक रहा था—
"घण्टा नहीं बजेगा—घण्टा नहीं बजेगा!!"

कुछ दिल में ग़ौर करके उसने कुलाँच मारी! हिम्मत के दर की यानी बन कर चली भिखारी!!
घण्टा बजाने वाले को रस्ते ही में छोड़ा! बढ़ती रही वह आगे, पीछे को मुँह न मोड़ा!!
बेकार एक लमहा खोने नहीं वह पाई! मीनार ही पै चढ़ने की सिर में धुन समाई!!
नज़रों से उसके बच कर ज़ीने पै चढ़ गई वह! और जानिबे-दरा फिर जल्दी से बढ़ गई वह!!
चमकीली उसकी आँखें होठों पै थी सुफ़ेदी! और यह सदा बराबर मुँह से निकल रही थी—
"घण्टा नहीं बजेगा—घण्टा नहीं बजेगा!!"

ऊपर की सीढ़ियों पर चढ़ कर पहुँच गई जब! आने लगा था मञ्ज़र इक और ही नज़र तब!!
क़ासिद अजल का बन कर घण्टा लटक रहा था! ज़ीना अजल का खोले मुँह नीचे तक रहा था!!
बेख़ौफ़ी से उचक कर लटकन को उसने पकड़ा! गोया अजल को दोनों हाथों से अपने जकड़ा!!
घड़ियाली था वह बहरा, खींचा जो उसने रस्सा! समझा कि मौत का यह बजने लगा है घण्टा!!
पकड़े रही वह लेकिन गुम्बद में सर पटकती! लटकन से वह झटकती घण्टे से वह अटकती!!
दिल में समझ लिया था—लटकन अगर यह छोड़ा! मिल ही नहीं सकेगा मेरा जहाँ में जोड़ा!!
गो हिल रहा था घण्टा बाँगे-दरा न निकली! लड़की ग़ज़ब की निकली—निकली बला की पुतली!!
धड़की-सी लग रही थी गो दिल में उसके अकसर! लेकिन सदा यह मुँह से आती रही बराबर—
"घण्टा नहीं बजेगा—घण्टा नहीं बजेगा!!"

बजने का वक़्त घण्टे का जब गुज़र गया था—और झूमता हुआ वह लटकन ठहर गया था!!
आहिस्तगी से लटकन को छोड़ कर वह उतरी! ज़ीने से नीचे आई बेचारी गिरती-पड़ती!!
ज़ुल्मत-कुदा बना था तारीक ऐसा ज़ीना! सदियों वहाँ बशर ने पहले क़दम न रक्खा!!
जो काम कर गई वह विरदे-ज़बाँ रहेगा—और इश्क़ के कशिश का सदियों खिंचेगा ख़ाका!!
मग़रिब के वक़्त जब वह ख़ुर्शीद की शुआएँ—करके फ़लक को रौशन इन्साँ का दिल लुभाएँ!!
बूढ़े पिदर सुनाएँ बच्चों को यह कहानी! घण्टे ने रौशनी की शब को सदा न दी थी!!
आया 'क्रॉम्वेल' तो नक़्शा इक और देखा! गिरजे में नाज़नीं को देखा बग़ौर देखा!!
जिसकी जबीं से ज़ाहिर फ़रहत के कुछ निशाँ थे! रञ्जो-अलम के सामाँ मस्तूर बेगुमाँ थे!!
क़दमों में गिर के बोली—"क़िस्सा हुज़ूर है यह—घड़ियाली बेख़ता है—मेरा क़ुसूर है यह!!
यह हाथ मेरे रस्से से आह! ख़ूँ चकाँ हैं! कुचली हुई पड़ी हैं जो इनमें हड्डियाँ हैं!!"
यों मुल्तजी हुआ था ग़मगीं रूए-ज़ेबा—वह प्यारा-प्यारा चेहरा-वह भोला-भोला चेहरा!!
डाला असर यकायक ऐसा 'क्रॉम्वेल' पर—धुँधली-सी रौशनी में उन आँखों ने चमक कर!!
कहने लगा कि—"शैदा ज़िन्दा तेरा रहेगा! और हुक्म रात भर यह नाक़िद मेरा रहेगा—
"घण्टा नहीं बजेगा—घण्टा नहीं बजेगा!!" *

* अङ्गरेज़ी के सुप्रसिद्ध कवि मिस्टर रोज़ हार्टविक थॉर्प की एक कविता का उर्दू-अनुवाद।
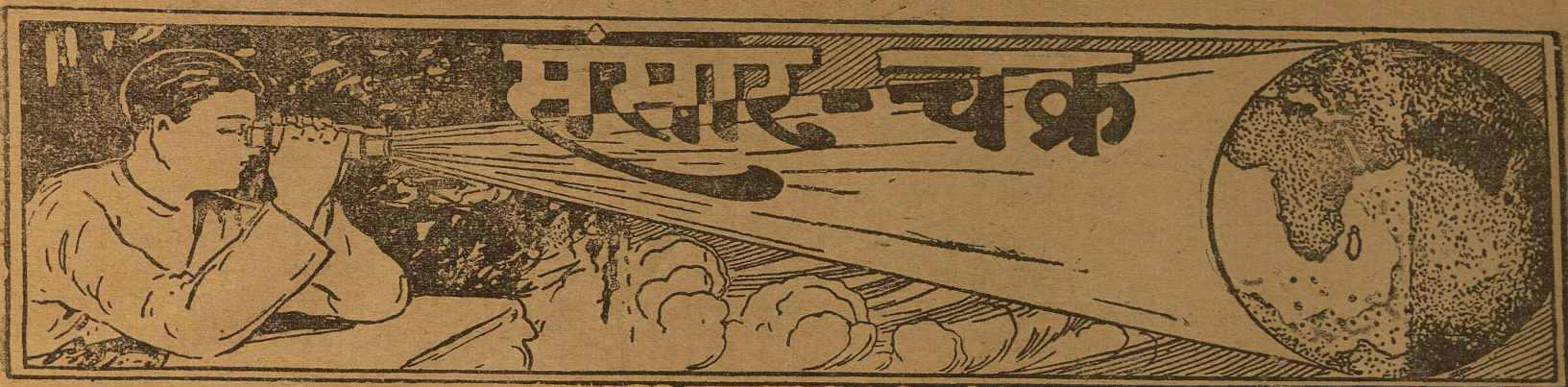
बर्मा की संक्षिप्त इतिवृत्ति

[श्री० राधामोहन गोकुल जी]

वर्तमान बर्मा ब्रिटिश भारत का सबसे बड़ा प्रान्त है। इसकी उत्तर-दक्षिण की लम्बाई तिब्बत से मलाया प्रायद्वीप तक १,१०० मील है। इसके पश्चिम में बङ्गाल, आसाम, और बङ्गाल की खाड़ी है और पूर्व में यूनम, फ़ान्सीसी, लेग्रोस तथा स्याम देश हैं।

बर्मा का क्षेत्रफल २,३१,००० वर्गमील के लगभग है, किन्तु अभी तक ठीक सर्वे नहीं हो सकी। बर्मा के उत्तर में एक विस्तीर्ण पहाड़ी प्रदेश है और वहाँ पर कई पहाड़ों और जङ्गलों में निवास करने वाली जातियाँ बसती हैं। पूर्व में 'वा' नाम की एक जाति रहती है, जो मनुष्यों के सरों का लक्ष्य-वेध करने में बड़ी निपुण है। इसके अलावा वहाँ और भी कई बहादुर जातियाँ हैं, जिनके सबब से ब्रिटिश सर्वे पार्टी उस प्रान्त का नाप नहीं करने पाती।

बर्मा सदृश बृहत् देश का जलवायु सर्वत्र एक सा होना असम्भव है। इरावदी नदी के दहाने की ओर वर्षा अधिक होती है। प्रति वर्ष १०० से ३०० इञ्च तक पानी बरसता है। नदी के मध्यवर्ती प्रदेश में २०-२५ इञ्च वर्षा होती है और पूर्व की ओर ६०-७० इञ्च वर्षा का मध्यांश अनुमान किया जाता है। नीची धरती में, जहाँ पानी बहुत ज़्यादा बरसता है, बीमारी भी अधिक होती है। यहाँ भी भारत के समान जाड़ा, गर्मी और बरसात तीन ऋतुएँ होती हैं

ब्रह्मदेश की जन-संख्या अनुमानतः डेढ़ करोड़ है। इसके निवासी प्रायः सबके सब बौद्ध धर्मानुयायी हैं। यह मांस-मछली आदि ख़ूब खाते हैं, परन्तु अपने हाथ से जीव-हत्या करना पाप समझते हैं। बर्मी लोग स्वभाव के उग्र और लड़ाकू होते हैं। किन्तु इनका सङ्गठन भारत की तरह ढीला है। बर्मा में सिक्खों तथा गोरखों आदि की यथेष्ट हिन्दुस्तानी सेना ब्रिटिश सरकार बर्मी लोगों पर अपना आतङ्क बनाए रखने के निमित्त सदैव तय्यार रखती है।

ब्रह्मदेश पहले बहुत सम्पन्न था, अब भी वहाँ की उर्वरा और रत्नगर्भा भूमि सब प्रकार के फल, फूल, लकड़ी, चावल, रूई, तमाकू, चाय, लाल, नीलम आदि के लिए प्रसिद्ध है। मिट्टी के तेल की भी एक बहुत बड़ी खान है, जो एक अङ्गरेज़ी कम्पनी के हाथ में है, जिसका नाम है बर्मा आयल को०।

बर्मा की एक स्वतन्त्र भाषा है, परन्तु इधर बौद्ध-संस्कृत और पाली भाषा का उस पर विशेष प्रभाव देखा जाता है। अङ्गरेज़ी का भी प्रचलन बहुत बढ़ गया है। भारत की भाँति यहाँ भी अनेक स्कूल हैं, जिनमें सरकारी नौकरियों और वकालत के लिए उपयुक्त छात्र ढाले जाते हैं।

जनवरी सन् १८८६ में अङ्गरेज़ सरकार ने, जिसकी छेड़-छाड़ बर्मा के साथ १९ वीं सदी के आरम्भ से ही शुरू हो गई थी, बर्मा के राजा थीबा को गिरफ़्तार करके उसका राज्य भारत में मिला लिया।

बर्मा के साथ अङ्गरेज़ों की पहिली लड़ाई सन् १८२४ ई० में और दूसरी सन् १८५१ ई० में हुई थी। इस तरह अध्यवसायी अङ्गरेज़ों ने कल, बल और छल से जिस तरह भी हो सका, अनुमानतः ७५ वर्ष की अनवरत चेष्टा से बर्मा को बर्मियों से छीन कर अपनी भोग्य-भूमि बना ली।

बर्मा का प्राचीन इतिहास हम सूक्ष्मरूप में यहाँ एक प्रसिद्ध अङ्गरेज़ की ज़बानी पाठकों के मनोरञ्जन और जानकारी के लिए उपस्थित करते हैं।

यों तो बर्मा के प्राचीन इतिहास पर विद्वानों के लिखे बहुत से ग्रन्थ हैं, लेकिन साधारण लोगों के जानने योग्य सार बातें बहुत थोड़ी हैं, उन्हीं को हम यहाँ लिपिबद्ध करते हैं। बर्मा के प्राचीन इतिहास लिखने वालों को अधिकतर सामान चीन से मिला है, दूसरे साधनों से जो ऐतिहासिक मसाला मिलता है, वह बहुत अनिश्चित, अस्पष्ट और असन्तोषजनक है। भारत और बर्मा अथवा चीन का बहुत पुराना सम्बन्ध है। फिर भी भारत में बर्मा के इतिहास के सम्बन्ध में कोई ऐतिहासिक पुस्तक अद्यावधि नहीं मिली। यह समझना भूल है कि जिस तरह शान, ताई और स्यामी चीन की संस्कृति को अस्वीकार करने के कारण चीन से निकल कर दूसरी जगह आ बसे हैं, वैसे ही बर्मी भी हैं। वर्मा एक बहुत प्राचीन काल की स्वतन्त्र जाति है। यद्यपि बर्मी भाषा पर जैसा हमने ऊपर कहा है, पाली का बहुत प्रभाव पड़ा है, फिर भी भाषा का मूलाधार प्रस्तुत है। इस भाषा में छोटे-छोटे एक ही बार में बोले जाने वाले शब्द पाए जाते हैं, जो इस भाषा की प्राचीनता के द्योतक हैं।

पौराणिक गाथा

भारतीय दन्त-कथा चली आती है कि कुछ क्षत्रिय-राजकुमार मणिपुर के रास्ते से बर्मा पहुँचे और वहाँ तीन विभिन्न उपजातियों को मिला कर एक किया, जिसका नाम 'पाइव' या 'पायो' पड़ा। यही बर्मा का सब से पहला राज्य हुआ। इस बात का पूरा-पूरा समर्थन चीन के ऐतिहासिक विवरण से भी होता है। प्राचीन चीन वालों ने 'प्याव' वा 'प्यू' नाम के देश का वर्णन किया है, जो कि शान-ताई-स्यामी जाति के अधिगत मसीही आठवीं शताब्दि तक रहा। इस शताब्दि में चीनियों ने शान-ताई-स्यामियों को यूँनन प्रदेश में छिन्न-भिन्न कर दिया और प्यू-सभ्यता और अभिनिर्माण को अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। इस तमसाच्छन्न मौलिक ऐतिहासिक गाथा के सम्बन्ध में जो विद्वत्तापूर्ण लेख हैं, उनका यहाँ समावेश नहीं हो सकता। हम बर्मा के इतिहास की कुछ बातें आज-कल की दृष्टि से लिपिबद्ध करने जा रहे हैं।

यहाँ प्रसङ्गवशात् एक बात बतला देने की है। तातारियों, तिब्बतियों और शान-ताई-स्यामियों के साथ चीनियों के अनेक युद्धों के पीछे चीन का साम्राज्य स्वतः दो भागों में विभक्त हो गया था। तातारी उत्तर में राज्य करने और वास्तविक चीनी कहलाने वाले लोग दक्षिण के शासक थे। दसवीं शताब्दि मसीही के मध्य से १३वीं शताब्दि के मध्य तक अनुमान ३०० वर्ष पर्यन्त दक्षिणी महाराजाओं ने एक विभाजक रेखा खींच कर कह दिया था कि हम इसके उत्तर के लोगों अर्थात् रेखा के दक्षिण-पश्चिम के बर्बरों से कोई सम्बन्ध न रक्खेंगे।

तातारियों और मङ्गोलों की आदिम विजय

ईस्वी सन् १६१ और १८० के बीच में होने वाले मारकस औरीलियस के समय में किम्वा मसीही आठवीं शताब्दि में पुराने ज़माने के चीनी बर्मा की बाबत चाहे जो कुछ जानते रहे हों, परन्तु १०० से १२०० शताब्दि तक का हाल उन्हें कुछ भी मालूम नहीं। इन दिनों चङ्गेज़ ख़ाँ और उसकी सन्तति ने दुनिया को जहाँ तक वश चला, जीतना आरम्भ किया। यहाँ तक कि उन्होंने प्रारम्भ काल के मञ्चुओं को भी जीत लिया था। इन तीन शताब्दियों में उत्तरी या तातारियों के राज्यवंश इस तरह झगड़ों में फँसे रहने के कारण दक्षिण-पश्चिम की ओर न बढ़ सके और दक्षिणी शासक-गण जाना ही नहीं पसन्द करते थे। इस तरह तिब्बती, बर्मी, स्यामी, भारतीय और कम्बोडी मनमानी करते रहने को स्वतन्त्र छूटे रहे। परन्तु उसी सीमा तक, जहाँ तक कि थल पर होकर आने-जाने का सम्बन्ध था। लेकिन जल-मार्ग से जावा, सुमात्रा और दक्षिण भारत के साथ गमनागमन का मार्ग खुला रहा। और भी कई चीनी समसामयिक लेखकों ने पूकान का सङ्केत किया है, जिसका अर्थ निश्चय ही 'पैगन' है, जिसको बर्मी लोग अपनी भाषा में 'पुगान' लिखते हैं।

बर्मा का देशीय इतिहास है, जो महा मजविन के नाम से प्रसिद्ध है। परन्तु उसमें लेखक ने राजवंश के विरुद्ध कुछ नहीं लिखा है, और या तो उन बातों को छोड़ गया है अथवा बातों को बदल दिया है। इस लिए अङ्गरेज़ इतिहासकारों ने इसको ध्यान में ही नहीं लिया। सन् १०१० में 'अनवरत' पैगन नगर की राजधानी में प्रतिष्ठित हुआ। उसका प्रपौत्र अलग सीथू राजा हुआ, जिसने दक्षिण चीन को, सन् ११०६ में कर भेजा था। इस समय से १५० वर्ष बाद तक, जब कि मङ्गोल जाति ने चीन को जीता, चीन और पूगन के बीच में इतने दिनों के भीतर जो कुछ भी प्रवर्तित हुआ होगा, वह अर्द्ध शान, अर्द्ध चीन वाली (यूँनन) राजवंश के साथ हुआ होगा। क्योंकि इस प्रान्त को सङ्ग राजवंश ने ९६० से १२६० तक जान-बूझ कर छोड़ दिया था। अन्तिम पूगन राजा नरसिंहपति राज्य करता था, जब 'कुबलई' ने 'मञ्जी' को पराजित किया।

मिंग वंश के अन्तिम राजपुत्र को बर्मा में शरण लेनी पड़ी थी। परन्तु बर्मा के राजा ने उसे चीनी क्षत्रप के हवाले कर दिया। यह क्षत्रप मञ्चुओं की तरफ़

का था; बाद में इसी क्षत्रप* ने यूँनन में अपना निज का राज्य स्थापित करना चाहा था और ऐसा ही करने के लिए उसने काण्टन और फूचाऊ के क्षत्रपों (गवर्नरों) को भी उकसाया था।

इस तरह मालूम होता है कि ३०० वर्ष पूर्ववर्ती मङ्गोलों की भाँति मञ्चू भी दक्षिण चीन को पुनः हस्तगत करने के लिए उद्योग करने लगे। अभी तक इन्होंने बर्मा और नेपाल आदि अपनाने का दावा नहीं किया था। सन् १७३१ के बाद मञ्चुओं का बर्मा और शानताई स्याम पर आक्रमण आरम्भ हुआ। लेकिन जलवायु के कारण और पहाड़ों, जङ्गलों के मार्गों की अनभिज्ञता के कारण १७६७ के खुले समर में मञ्चू हार गए। जैसे बर्मा की पहली लड़ाई में अङ्गरेज़ों की बड़ी हार हुई थी। बर्मी लोगों को यह नहीं मालूम हुआ कि इस लड़ाई में मञ्चुओं का सेनापति मिंग ज्वाई मारा गया। इसलिए विजयी होने पर भी दूसरी लड़ाई के भय से उन्होंने चीन से सन्धि कर ली। सन्धि की शर्त यह हुई कि बर्मा चीन को और चीन बर्मा को भेंट भेजा करे। इसका मतलब यह था कि चीन राज अपनी प्रजा से कहे कि हमें बर्मा ने कर भेजा है, और बर्मा राज अपनी प्रजा से कहे कि चीन हमारा करद है, उसने हमें कर भेजा है।

सन् १८८६ ई० में ब्रिटेन के बर्मा जीत लेने के बाद चीन के मारक्वीस टिसंग को लन्दन में इसको सिद्ध करने में तनिक भी कठिनाई नहीं हुई कि एक बार चीन ने भामो ले लिया था और बर्मा से दश वर्षीय कर अब चीन को लेना है।

बर्मा के राजवंश का अन्तिम राजा थीबा के साथ अन्त हुआ। इस महाराज को १८८६ में अङ्गरेज़ों ने गिरफ़्तार करके हिन्दुस्तान में क़ैद कर रक्खा था, जैसे बहादुर-अली शाह को दिल्ली से बर्मा भेजा था। इस घराने का प्रथम पुरुष अलोम्परा अलौंगप्या था, इसी ने १८५५ ई० में अपने घराने की बुनियाद डाली थी। यह बात सन् १७४० ई० में पुराने पेगू वंश के पतन पर प्रतिस्पर्धी घराने के पारस्परिक झगड़ों के बाद की है। अलोम्परा १७६० में, जब कि स्याम से लड़ाई हो रही थी, मरा। कई घरू मार-काट के पीछे अलोम्परा का चौथा लड़का मेंग तारागाई, जिसका दूसरा नाम 'वोदावपाया' था, गद्दी पर बैठा। इसने १७८३ ई० में अपनी राजधानी 'अबा' से हटा कर इरावदी के पूर्वी तट पर अमरपुरा में बनाई और १७९३ ई० में स्याम के साथ सन्तोषजनक सन्धि हो गई।

सन् १७९५ ई० में ही ब्रिटिश इण्डियन सरकार और बर्मा में अराकान व चटगाँव को लेकर झगड़ा उठा। बात यह थी कि अराकान, आसाम; जो बर्मा के राज्य में था और भारत से मिला हुआ था; यहाँ पर अङ्गरेज़ों ने बहुत अत्याचार करना शुरू कर दिया। अफ़सर अङ्गरेज़ लोग अपना माल बर्मा के इलाक़े में ले जाते और चुङ्गी का कर देने से इन्कार करके झगड़े कर बैठते। इसी बात को लेकर एक बार बर्मा के हाकिमों और अङ्गरेज़ों से झगड़ा हो गया, जिसमें एक अङ्गरेज़ सरदार मारा गया। इसी झगड़े के सम्बन्ध में अङ्गरेज़ों ने अपना एक दूत बर्मा भेजा, जिसका नाम मेजर साइम्स था। इस समय ब्रिटिश भारत सरकार का जो बर्ताव बर्मा के साथ हुआ, उसका पता श्री० बसु महोदय के भारतीय इतिहास से मिल सकता है। इस लेख में इन बातों का विस्तृत लिखना असम्भव है।

इसके अन्तर अङ्गरेज़ी सरकार ने बर्मा के राजा 'बगइदा' पर मनीपूर होकर बङ्गाल पर आक्रमण करने का दोष लगाया और झगड़ा ख़रीदने पर उतर पड़े।

फलतः सन् १८२४ ई० में अङ्गरेज़ों ने बर्मा पर चढ़ाई की। पहले तो अङ्गरेज़ी सेना बुरी तरह से हारी। इस हार से सारे भारत और ब्रिटेन में कोलाहल मच गया। लेकिन अङ्गरेज़ बड़े अध्यवसायी होते हैं। इन्होंने अराकान के और बर्मा के शक्ति-सम्पन्न लोगों को और कई सरकारी नौकरों को मिला कर अपना झगड़ा जारी रक्खा। बर्मा वास्तव में घरू भेद-भाव के कारण भीतर ही भीतर जर्जर हो रहा था। १८२५-२६ में बर्मा को झुकना पड़ा। यही पहला बर्मा-युद्ध था। इस युद्ध की सन्धि में रङ्गून तो अङ्गरेज़ों ने हरजाना लेकर छोड़ दिया, बाक़ी आसाम, अराकान और त्रिनाश्रम भारत में मिला लिए गए।

इस प्रकार १८३७ से १८४६ पर्यन्त चला, परन्तु जब बर्मा राज 'बगइदा' के मरने पर 'पेगन मिन' गद्दी पर बैठा तो बहाना ढूँढ़ कर अङ्गरेज़ों ने १८५१ में दूसरे बर्मा-युद्ध का आयोजन किया। और १८५३ में 'पेगन' को गद्दी से उतार कर उसके छोटे भाई 'मिनदन मिन' को गद्दी पर बैठाया, साथ ही 'पीगू' को भारत में मिला लिया। यह दूसरे बर्मा-युद्ध का परिणाम है।

अङ्गरेज़ों ने यह सब लीला लगातार लगभग ५०-५० वर्ष के अध्यवसाय और चेष्टा से की। दूसरी लड़ाई के बाद बर्मा का एक अंश अङ्गरेज़ों ने ब्रिटिश बर्मा के नाम से विघोषित किया और कर्नल पायरे को उसका चीफ़ कमिश्नर बनाया। यह कर्नल साहब माण्डले को राजधानी बना कर वहीं रहने लगे। १८६७ में पायरे की बिदाई पर बर्मा के साथ अङ्गरेज़ों की नई सन्धि हुई। इसके द्वारा अनेक व्यापार सम्बन्धी शर्तें तय हुईं और बर्मा के विरोधियों को अङ्गरेज़ों ने बर्मा के हवाले कर दिया और बर्मा ने अङ्गरेज़ी राज्य-विरुद्ध लोगों को इनको सौंप दिया।

मिनदन ने अङ्गरेज़ों के अनुग्रह से २६ वर्ष बर्मा में शासन किया। १८७९ में उसके मरने के बाद 'थीबा' बर्मा की लुटी-कुटी गद्दी पर बैठा। अङ्गरेज़ों की दाढ़ को बर्मा का मज़ा मिल चुका था, यह बर्मा की रत्नगर्भा भूमि को अधिकृत करने को १७९५ से लालायित थे।

अब अवसर पाकर नवयुवक थीबा को कोंचने लगे और अनेक प्रकार के दोषारोपण के बाद १८८५ में, जब भारत में लॉर्ड डफ़रिन वायसराय थे, बर्मा भारत में मिला लिया गया। यह हम ऊपर कह चुके हैं।

१ जनवरी १८८६ से बर्मा ग्रेटब्रिटेन की पैतृक सम्पत्ति बन गया। लेकिन बर्मा के लोग बड़े लड़ने वाले और देश-प्रेमी थे। अब तो भारत की तरह उनके भी मन में ग़ुलामी का महत्व समा गया है। अगर भीतरी कलह न होती तो बर्मा ख़ूब लड़ता, हार-जीत की बात दूसरी है। थीबा के बन्दी होने के बाद भी बर्मा ३ वर्ष तक अङ्गरेज़ों से लोहा लेता रहा। इन बहादुर देशभक्तों को अङ्गरेज़ों ने इतिहास में डाकू की उपाधि दी है। अन्त में ३-४ वर्ष के बाद सब दब कर बैठ गए। यही बौद्ध बर्मा का दुखमय सूक्ष्म इतिहास है।

अब फिर बर्मा ने स्वतन्त्रता के लिए सिर उठाया है। देखिए क्या होता है—

यह कह कर मर गई बुलबुल कफ़स में।
न हो बन्दा किसी बन्दे के बस में।

❀

* अंग्रेज़ी शब्द Satrap फ़ारसी का है और फ़ारसी की प्रकृति संस्कृत है। संस्कृत में गवर्नर को क्षत्रप और गवर्नर-जनरल को महाक्षत्रप कहते हैं। फ़ारस में भी यह शब्द इसी अर्थ में व्यवहृत होता है। —लेखक

नए फ़ैशन की बीबी मिल गई है

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

इस ख़्याले नेक पर मरते हैं हम,
यानी "बिसकुट" "केक" पर मरते हैं हम!

❀

यह बन्दा इसलिए दरबार में है,
कि मेरी पूछ-गछ सरकार में है!

❀

हमारा दिल यह सुन कर रो रहा है,
जहाँ देखो "रिडक्शन"[1] हो रहा है!

❀

कली यों दिल की देखो खिल गई है,
नए "फ़ैशन" की बीबी मिल गई है!

❀

दिन हैं साहब के, रात साहब की,
है ज़माने में बात साहब की!

❀

न हरम[2] से न दैर[3] से मतलब,
है "रसिक जी"[4] को सैर से मतलब!

❀

क़द्र भी, और इसमें ख़्वारी[5] भी,
एक तमाशा है पेशकारी भी!

१—काट-छाँट, २—काबा, ३—मन्दिर, ४—प्रयाग के मशहूर फ़ोटोग्राफ़र बाबू रसिकबिहारी लाल विश्वकर्मा से मतलब है, ५—निरादर।

❀

उसके द्वार पर

(१४वें पृष्ठ का शेषांश)

वृद्धा के सम्मुख पहुँचते ही अनवार एकदम धरती पर बैठ गया। उसके नेत्रों से जल-धारा बह रही थी। उसने हाथ जोड़ कर कहा—'माँ!......।' उसका कण्ठ रुँध गया। वह आगे कुछ न कह सका।

पगली ने दृष्टि उठा कर अनवार को देखा। क्रोध और घृणा से उसके नेत्र लाल हो गए। उसने मुँह फेर लिया।

अनवार ने अत्यन्त कष्ट से कहा—क़-सू-उ-र...... मा-आ-फ़ माँ! उसके नेत्रों की धारा ने कण्ठ को रोक दिया।

पगली ने फिर मुँह फेर कर उसकी ओर देखा। इस बार उसके नेत्रों से भी गङ्गा-यमुना बह रही थीं। उसने दोनों हाथ ऊपर उठा कर कहा—'जा! तेरा अपराध अब वही क्षमा करेगा।'

परन्तु अनवार न हिला। उसके नेत्र वहीं गड़ गए। पुलीस वाले उसे उठाने का व्यर्थ प्रयत्न कर रहे थे।

❀ ❀ ❀

पूँजीवाद और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता

[श्री० राधेश्याम शर्मा, बी० ए०]

ऐसा मालूम पड़ता है कि साम्यवाद की लहर जो पश्चिम से उठी है, इसके थपेड़े में शीघ्र ही सारा संसार आ जायगा। कुलीन, अकुलीन, धनी-निर्धन बड़े-छोटे सबको समान नागरिक अधिकार प्राप्त हैं, न्याय और क़ानून की दृष्टि में सब बराबर हैं। आज निम्न से निम्न श्रेणी के अङ्गरेज़ मज़दूर को भी इस बात का अभिमान है कि शासन की बागडोर जिस सरकार के हाथ में है, उसके भाग्य-विधाता श्रमजीवी ही हैं, जिनमें उसका भी अपना एक विशेष स्थान है और अपनी योग्यता और शक्ति के अनुसार वह भी राज्य-सञ्चालन में योग देता है। उसकी स्वातन्त्र्य-भावना उस समय और भी गौरवमयी हो जाती है, जब वह अनन्त जन-समुदाय के बीच खड़ा हुआ, किसी राष्ट्रीय त्योहार या उत्सव के उपलक्ष्य में, लैनिक बैण्ड में अपना राष्ट्रीय-गान सुनता है। उस समय क्षण भर के लिए वह सब कष्ट भूल जाता है और सोचने लगता है कि मेरे नागरिक अधिकार देश के किसी भी व्यक्ति से कम नहीं हैं—मैं पूर्ण स्वतन्त्र हूँ। किन्तु अपने दैनिक जीवन में वह अपने को कैसा पाता है? क्या राष्ट्र के सभी नागरिक समान रूप से स्वतन्त्र होते हैं? आज हमें इसी प्रकार विचार करना है।

कुछ लोगों का ख़याल है कि दासत्व का अभाव ही स्वतन्त्रता है। यदि यह मान लिया जाय तो सहारा रेगिस्तान में भूख-प्यास से व्याकुल यात्री—और काम की तलाश में मारा-मारा फिरने वाला अमेरिकन मज़दूर दोनों ही स्वतन्त्र हैं और दोनों ही किसी को स्वामी मानने को तैयार नहीं। किन्तु इस तरह की स्वतन्त्रता तो उन्हें केवल मरने के लिए स्वतन्त्रता देना है। उद्योग और धन्धे के युग में कोई व्यक्ति अपनी सभी आवश्यकताओं को अकेले पूरी नहीं कर सकता। अस्तु, आजकल स्वतन्त्र वही है, जो अन्य व्यक्तियों द्वारा बनाई हुई वस्तुओं और उनके द्वारा की गई सेवाओं का उचित रूप से लाभ उठा सके। दूसरे शब्दों में वही स्वतन्त्र है, जो अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए काफ़ी भोजन, वस्त्र और एक अच्छा सा मकान पा सके—जो अपने मस्तिष्क की उन्नति के लिए उचित मात्रा में शिक्षा प्राप्त कर सके। और इतनी आवश्यकताएँ पूर्ण होने पर भी उसके पास इतना धन रहना चाहिए कि समय-समय पर अपने मित्रों को दावतें दे सके, अपने मनोरञ्जन के लिए सिनेमा और थियेटर आदि देख सके तथा देश-विदेशों में घूम सके। थोड़े शब्दों में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता अपनी नैसर्गिक शक्तियों के उन्नत करने और अपनी इच्छाओं को पूर्ण करने के सुयोग को कह सकते हैं। किन्तु यह सुयोग किसी को कम है और किसी को अधिक। एक धनी व्यक्ति अधिक से अधिक वस्तुएँ और अगणित व्यक्तियों की सेवा पाने का हक़दार, बिना कुछ परिश्रम किए ही, केवल कुछ धन देकर हो सकता है और इसकी उसे स्वतन्त्रता है। दूसरी ओर एक ग़रीब मज़दूर भी स्वतन्त्र है, पर उसकी स्वतन्त्रता रात-दिन पसीना बहा कर, आधा पेट भोजन करके जीवनमृत दशा में रहने की है। अस्तु, हम कह सकते हैं कि जो जितना धनवान है, वह व्यक्तिगत रूप से उतना स्वतन्त्र है।

अभी हाल ही में सर मालकम हेली ने अपनी स्पीच में कॉङ्ग्रेस को उत्तर देते हुए कहा था कि यदि ज़मीन्दार किसानों पर अत्याचार करते हैं तो किसानों को भी उनके विरुद्ध क़ानूनी कार्रवाई करने का अधिकार है। भारत सरकार की तरह अन्य देशों की सरकारें भी इसी सिद्धान्त का दम भरती हैं कि All are equal before the law अर्थात् क़ानून के सामने सभी समान हैं। किन्तु यदि हम इसकी तह में जाकर देखें, तो इसकी नींव बालू के क़िले की नींव से अधिक मज़बूत नहीं होगी। न्यायालयों का उद्देश्य है कि जो लोग फ़ौजदारी, चोरी और धोकेबाज़ी इत्यादि करके दूसरों की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता नष्ट करते हैं, उन्हें दण्ड दें, किन्तु फिर भी असंख्य मूक-हृदयों की करुण-पुकार वहाँ तक नहीं पहुँचती। वे दीन-हीन व्यक्ति, जिन्हें क़ानून की शरण जाने की सब से अधिक आवश्यकता है, जो रात-दिन ज़मीन्दारों और पूँजीपतियों द्वारा पीड़ित किए जाते हैं, कभी क़ानून की शरण नहीं जाते। इसलिए नहीं कि उन्हें मारा-पीटा नहीं जाता, इसलिए नहीं कि ग़ैर-क़ानूनी चालों से उनका सर्वस्व अपहरण नहीं किया जाता, किन्तु इसलिए कि न तो उनमें अपने मालिकों के विरुद्ध खड़े होने का साहस है और न उनके पास अदालत का भारी ख़र्च बरदाश्त करने के लिए धन ही। न्यायालय में एक धनी और निर्धन की परिस्थिति में ज़मीन-आसमान का अन्तर हो जाता है। सिवा प्राण-वध के अन्य अपराधों के लिए अमीर आदमी को केवल सम्मन से ही बुलाया जाता है, परन्तु बेचारा ग़रीब आदमी उन्हीं दोषों के लिए पकड़ कर विचाराधीन क़ैदियों में रख दिया जाता है। फिर अमीर आदमी मुचलका देकर छूट सकता है, वह साम, दाम, दण्ड-भेद आदि उपायों से गवाही तैयार करा कर अपनी निर्दोषिता प्रमाणित कर सकता है; वह अच्छे से अच्छे वकील द्वारा अपनी पैरवी करा सकता है, मुक़दमा एक कोर्ट से दूसरे कोर्ट में भिजवा सकता है। अन्त में यदि न्यायालय उसे जुर्माने का दण्ड देता है, तो धनिक के लिए यह कुछ भी नहीं। पर बेचारे निर्धन को जुर्माना न देने के अपराध में जेल जाना ही पड़ेगा और यदि किसी तरह जुर्माना भी दे, तो अपने और अपने परिवार के पेट पालने को उसके पास कुछ नहीं रह जाता। यही ग़रीबों की क़ानूनी स्वतन्त्रता है।

ग़रीब और अमीर को व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का यह भेद इतने अधिक काल से चला आया है कि वे सोचने लग गए हैं, संसार ऐसा ही है, जिसमें अमीरों का काम ग़रीबों को लूटना-खसोटना है, और ग़रीबों को इन सब अत्याचारों को चुपचाप सहना है। ज़मीन्दार और पूँजीपतियों के हाथ में किसान और मज़दूर केवल 'उत्पादन के औज़ार' (Instruments of Production) रह गए हैं, उनके जीवन का उद्देश्य अपने मालिकों के लिए ऐश्वर्य और सुख की सामग्री जुटाना है। अमीर आदमी और उसकी स्त्री और बच्चे जब चाहते हैं, तब सोकर उठते हैं, अपने इच्छानुसार खाते-पीते हैं, जो चाहे करते हैं, या खेलते हैं—तात्पर्य यह है कि दिन भर का कार्यक्रम उनकी इच्छा पर निर्भर है—वे सब कुछ करने के लिए स्वतन्त्र हैं। दूसरी तरफ़ एक मज़दूर को सुबह से शाम तक अपने मालिक के आज्ञानुसार जीवन बिताना पड़ता है। मिल की ह्विसिल सुनते ही वह काम पर आ जाता है, जैसा और जितना काम मालिक देता है उसे करना पड़ता है। दूसरे शब्दों में अपनी इच्छा से कुछ भी करने को वह स्वतन्त्र नहीं है—उसके मालिक की आज्ञा ही उसकी इच्छा है।

अब प्रश्न यह उठता है कि इन ज़मीन्दारों, मिल-मालिकों और बैङ्करों आदि को क्या अधिकार है कि वे अपने लाखों भाइयों का जीवनक्रम अपनी इच्छा के अधीन कर लें, उन्हें क्या अधिकार है कि उनसे जीवन का आनन्द और सुख छीन लें, और उन्हें अपने बिना दाम के ख़रीदे हुए दास बना लें। यहाँ हमारा विरोध अधिकार से नहीं है—अधिकार तो एक कॉन्स्टेबिल को भी होता है। उसके हाथ उठा देने से मोटर, गाड़ी, साइकिल आदि सबको रुकना पड़ता है, पर कॉन्स्टेबिल के इस अधिकार को कोई अनुचित नहीं बताता। सेनेटरी इन्स्पेक्टर गन्दी मिठाई को हलवाई की दूकान से फेंकवा देता है, रेलवे-गार्ड आज्ञा देता है, अपनी जगह पर बैठ जाओ। इन सब आज्ञाओं को लोग इसलिए मानते हैं कि ये आज्ञाएँ उनके ही भले के लिये हैं, इनसे व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की क्षति नहीं, वरन् रक्षा ही होती है। दूसरे जनता जानती है कि यह उनका जन्मसिद्ध अधिकार थोड़े ही है और न इसमें उनकी कोई स्वार्थ-कामना ही होती है, वरन् इनकी योग्यता के कारण सरकार ने उनको यह काम दिया है, जिसे वे निःस्वार्थ भाव से करते हैं। यदि हममें से किसी के साथ कोई सरकारी कर्मचारी अभद्र व्यवहार करे तो हमें उसकी शिकायत करने का पूर्ण अधिकार है, और यदि सरकार की यह नीति हमको पसन्द नहीं, तो व्यवस्थापक सभा आदि में प्रश्न द्वारा हम उसको प्रभावित कर सकते हैं। जो अधिकार जनता ने सरकार को दिया है, उसे वह ले भी सकती है—पर किसानों और मज़दूरों को अपने आर्थिक शासकों के विरुद्ध आवाज़ उठाने की इतनी स्वतन्त्रता नहीं है। जनता की तरह अपने शासकों को निर्वाचन करने की शक्ति न रहने के कारण ये लोग ज़मीन्दार और पूँजीपतियों के उत्तरदायित्व से रहित और स्वार्थपूर्ण अधिकारों का विरोध नहीं कर सकते। फिर चुपचाप अत्याचार सहते-सहते पीढ़ी दर पीढ़ी उनमें आत्म-सम्मान और उत्थान की भावना इतनी कम रह जाती है कि व्यक्तिगत स्वतन्त्रता में इस ज़मीन आसमान के अन्तर को वे प्रकृति का एक स्वभाव समझने लगते हैं।

पूँजीवाद ने जिस वातावरण को जन्म दिया है, उसमें मज़दूर, कृषक आदि लोगों की तो आफ़त आती ही है, पर अन्य व्यक्ति भी इसके नाशकारी प्रभाव से अछूते नहीं रह सकते। स्कॉटलैण्ड और वेल्स के जिन रमणीक स्थानों में गड़रिए भेड़ें चराते थे, जहाँ किसी दिन खेत

बधाई

श्री० जी० एस० पथिक, बी० ए०, बी० कॉम लिखते हैं—

'भविष्य' हिन्दी में उच्च कोटि का पत्र है। उसके प्रकाशन से आज सभी हिन्दी साप्ताहिकों का जीवन सङ्कट-जनक हो गया है और वे अपना कलेवर 'भविष्य' के रूप में बदलने के लिए बाध्य हुए हैं। हिन्दी के अत्यन्त प्राचीन और प्रभावशाली पत्र भी 'भविष्य' के प्रकाशन से दब गए हैं। मैंने अपने इस भ्रमण में देखा कि हिन्दी जनता 'भविष्य' को चाहती है। कहना न होगा कि 'भविष्य' ने हिन्दी साप्ताहिकों की दशा ही बदल दी। इसके लिए आपको अनेक साधुवाद!

लहलहाते थे, आज वहाँ घने, धुवाँधार नगर बस गए हैं, जिनमें लोग यदि न रहें तो जायँ कहाँ? आराम-तलब अमीर लोग, जिनकी स्वार्थपरता ही इस सत्यानाशी हलचल की जड़ है, तो विज्ञान द्वारा आविष्कृत नवीन उपायों से इस गन्दगी और कष्ट से बच जाते हैं, पर ग़रीबों का जीवन बड़ा ही दुःखदायी हो जाता है। वे छोटे-छोटे मकानों में रहते हैं, जहाँ शुद्ध वायु कभी पहुँच ही नहीं सकती, उनको पवित्र भोजन और जल तक मिलना एक तरह से असम्भव हो जाता है। यदि कभी कोई कारख़ाने का मज़दूर नगर के बाहर जाता है, तो नदी, वन और पर्वत आदि के मनमोहक दृश्यों को आँखें फाड़-फाड़ कर देखता है और सोचता है कि परमात्मा ने जो प्रकृति का यह अनन्त सौन्दर्य मनुष्य-मात्र के लिए दिया है, पूँजीपतियों को इससे हमें वञ्चित करने का क्या अधिकार है?

इस पूँजीवाद के युग में यदि केवल स्वतन्त्रता ही नष्ट होती तो भी ग़नीमत थी, पर पूँजीपतियों ने तो हमसे हमारी आन्तरिक स्वतन्त्रता भी छीन ली है। उनका तो मानो यह कहना है कि करने दो धर्माचार्य और सुधारकों को, कितना प्रयत्न करते हैं; जब तक सिनेमाघर, नाट्यघर और नृत्यालयों पर हमारा अधिकार है, तब तक जनता की मानसिक प्रवृत्ति पर तो हमारा अधिकार रहेगा ही। जब तक हमारे हाथ में दो-दो पैसे में बिकने वाले पत्र हैं, तब तक हम चाहे जो कर सकते हैं, जब चाहें जैसे जनता के विचारों में परिवर्तन कर सकते हैं।

कुछ लोग कहेंगे कि जब पूँजीपतियों का जनता पर इतना कड़ा शासन है, तो सरकार किस मर्ज़ की दवा है? किन्तु वास्तव में सरकार तो इन्हीं के इशारे पर नाचती है। क्योंकि जनता की रुचि जब पूँजीपतियों के हाथ में है तो सरकार, जो जनता द्वारा ही निर्वाचित होती है, उस पर पूँजीपतियों का प्रभाव होना अनिवार्य है। बड़े-बड़े बैङ्कों, मिलों, जहाज़ों और व्यापारी-कम्पनियों के गुट्टों का प्रान्तीय और देशी सरकारों पर प्रभाव पड़ना अनिवार्य है। और यदि कहीं सरकार विदेशी हुई, तब तो पूँजीपतियों की बन ही आती है। यहाँ हमारे पास भारत सरकार की सर्वदेशीय व्यापार सम्बन्धिनी एक्स्चेञ्ज और शिपिङ्ग की पक्षपातपूर्ण नीति (Policy) को बताने के लिए स्थान नहीं है, नहीं तो यह और भी स्पष्ट हो जाता कि प्रभावशाली पूँजीपतियों के गिरोह के हाथ में बड़ी से बड़ी सरकारें किस तरह खिलौने बन जाती हैं। जनता के निर्वाचित सदस्य यदि व्यवस्थापक सभा में सरकार से प्रश्न पर प्रश्न करते हैं, तो पहले तो सरकार कोई बहाना बना कर मामले को टाल देना चाहती है, पर जब देखती है कि अब कोई छुटकारे का मार्ग नहीं है, तो विवश होकर एक जाँच-कमीशन बैठा कर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेती है और विदेशी पूँजीपति सदा की भाँति जनता का धन-शोषण अबाधित गति से करते रहते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि पश्चिम में—और किसी हद तक भारत में भी—इस स्वतन्त्रता के युग में (मज़दूर और किसानों की तो बात ही जाने दीजिये) वकील, बैरिस्टर, सम्पादक, इञ्जीनियर और मैनेजर तक सब इन विशालोदर धनिकों के वश में हो गए। विद्या और बुद्धि धन की उँगलियों पर नाचते फिरते हैं। सेठ जी की मिल में यदि एक क्लर्क की आवश्यकता है, तो पचासों मध्यम श्रेणी के योग्य व्यक्ति उसे पा जाने में अपना सौभाग्य समझेंगे। और जब नौकर ही हो गए तो स्वतन्त्रता कहाँ रही, तब न तो स्वतन्त्रता से आप कोई कार्य ही कर सकते हैं और न स्वतन्त्र विचार ही रख सकते हैं। यदि आपके सेठ जी सरकार-भक्त हैं, तो आपको न, मन चाहे जैसा कपड़ा पहनने की स्वतन्त्रता है, और न राजनैतिक विचारों ही की। यदि आप किसी समाचार-पत्र के कर्मचारी हैं तो आप को प्रधान सम्पादक की नीति से सहानुभूति रखनी होगी और प्रधान सम्पादक को अपने अन्नदाताओं के विचारों को पत्र के कॉलमों में रखना होगा, चाहे स्वतन्त्र रूप से उनके व्यक्तिगत विचार कुछ भी क्यों न हों। यह इस युग की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता है।

❀ ❀

महात्मा गाँधी के चरणों में—

[श्री० व्योहार राजेन्द्रसिंह जी, भूतपूर्व एम० एल० सी०]

हमारे प्रान्त के सौभाग्य से महात्मा जी प्रतिवर्ष दिसम्बर मास में वर्धा के आश्रम में कुछ दिन आकर विश्राम लेते हैं। विश्राम क्या लेते हैं, अपने कर्ममय जीवन को आश्रम की शान्ति में छिपाने का प्रयत्न करते हैं। क्योंकि उस जागरूक तथा सतत कर्मशील पुरुष को इस जीवन में शान्ति नहीं, उनके कर्म की धारा शान्तिमय आश्रम के प्रशान्त वातावरण में भी उसी प्रकार प्रवाहित रहती है, अथवा कहना चाहिए कि इस वातावरण को पाकर वह एकान्त में और भी निभृत रूप से प्रवाहित हो उठती है। यद्यपि बाहर से देखने में उसका प्रवाह मन्द दीख पड़ता है, किन्तु अन्तर में उसका वेग और भी प्रखरतर हो जाता है। यदि देश के क्रिया-कलाप में इधर-उधर दौड़ते समय उसका बाहरी प्रवाह प्रबल दीख पड़ता है, तो भी आश्रम की निभृत छाया में उसका आन्तरिक प्रवाह प्रबलतर हो जाता है और इस प्रवाह का अशान्त वेग अथवा बाहरी शान्ति के भीतर से आन्तरिक प्रवाह की प्रबलता ऐसे ही समय में दीख पड़ती है। कर्मयोगमय जीवन बिताने वाले महापुरुषों की विशेषता यही है कि बाहरी कर्मधारा में भी वे अपनी आन्तरिक शक्ति को विचलित नहीं होने देते और ऐसे कर्मशील शान्तात्माओं में आज भारत में क्या, संसार में महात्मा जी का स्थान अग्रगण्य है।

कर्मशीलता और शान्ति जो परस्पर विरोधिनी बातें समझी जाती हैं, उनका उचित सम्मिश्रण यदि देखना हो तो वह गाँधी जी की मूर्ति में मिल सकता है। वे आज इन विरोधी गुणों के उचित सङ्कलन के जीते-जागते उदाहरण बन रहे हैं। यही बात उन लोकोत्तर बातों में से एक है, जिनके कारण भारत ही के नहीं, बल्कि संसार के विचारशील स्त्री-पुरुष इस तीन पसली के मनुष्य की ओर आकर्षित होकर उसके दर्शनों को सात समुद्र पार कर आते हैं।

आज यूरोप और अमेरिका के विद्वान लोग महात्मा जी के विचारों से जितने प्रभावित होकर उनकी ओर आकर्षित हो रहे हैं, उतने शायद हमारे यहाँ के लोग नहीं। बहुत से तो उनकी अर्धनग्न वेश-भूषा को असभ्यता की निशानी समझते होंगे। किन्तु इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि संसार की विचार-धारा तथा भारतवर्ष के धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, और आर्थिक सभी अङ्गों पर इस एक महापुरुष का जितना प्रभाव पड़ा है, उतना दूसरे का नहीं।

सब से पहिले दक्षिण अफ़्रिका के सत्याग्रह के समय से उनका नाम देश के सामने आया। उसके बाद खेड़ा तथा चम्पारन आदि आन्दोलनों की सफलता ने उन्हें और भी प्रकाश में लाया। उनके व्यक्तित्व का सब से अधिक प्रकाश असहयोग आन्दोलन के समय से संसार और भारतवर्ष के सामने आया। किन्तु उनके व्यक्तित्व की आन्तरिक सुन्दरता का शान्त प्रकाश उसके बाद हमारे सामने प्रगट हुआ है और उसके उत्तरोत्तर बढ़ने का क्रम जारी है। किन्तु महापुरुष अपने जीवन-काल में बहुत कम समझे जाते हैं। प्रत्येक देश के लिए यह नियम लागू होता है। अभी हम लोगों ने भी महात्मा जी की महत्ता को अच्छी तरह नहीं समझ पाया है। यद्यपि महात्मा जी अपने जीवन-काल ही में इतने अधिक पूज्य हो गए हैं, जितने कि बहुत कम महापुरुष होते हैं। किन्तु तो भी मेरी तुच्छ सम्मति में उनका असली महत्व हम तब समझेंगे, जब उन्हें पार्थिव रूप से समझने का अवसर पाएँगे।

व्यक्तिगत रूप से लेखक पर महात्मा जी तथा उनके सिद्धान्तों का प्रभाव असहयोग के समय से पड़ना प्रारम्भ हुआ। नागपुर कॉङ्ग्रेस के समय उनके दर्शन करने का प्रथम सौभाग्य जब से प्राप्त हुआ, तभी से उनके व्यक्तित्व तथा सिद्धान्तों की ओर अधिकाधिक आकर्षण होता गया तथा उनसे व्यक्तिगत समीपत्व में आने की इच्छा प्रबलतर होती गई। इसी भावना के अनुकूल सत्याग्रह-आश्रम साबरमती की यात्रा की थी। किन्तु उस समय पुनीत दर्शनों से वञ्चित रहना पड़ा, क्योंकि वह मूर्ति उस समय महात्माओं के उचित पुरस्कार में मिलने वाले यरवदा जेल के घनान्धकार को दूर कर रही थी। उसके बाद बिना प्रत्यक्ष परिचय प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त किए ही उनके 'यङ्ग इण्डिया' और 'नवजीवन' पत्रों तथा 'हिन्द स्वराज्य' आदि पुस्तकों तथा उनके विषय में लिखी हुई स्वदेशी व विदेशी लेखकों की लिखी हुई पुस्तकें पढ़ने से वह श्रद्धा और भक्ति उत्तरोत्तर बढ़ती ही गई। फ़्रान्स के महामति रोम्याँ रोलाँ की "महात्मा गाँधी" नामक पुस्तक सब से पहिली थी, जिसने हृदय पर असर किया। उसके बाद प्रसिद्ध जर्मनी लेखिका रेनी फुलप मिलर (Rene Fullop Miller) की 'Lenin and Gandhi' (लेनिन और गाँधी) ने तो चित्त और मस्तिष्क में उथल-पुथल मचा दी। अन्तिम, किन्तु महत्वपूर्ण महात्मा जी के क्रमशः प्रकाशित आत्म-चरित्र ने, तो उनके व्यक्तित्व के अनेक रहस्यों पर प्रकाश डाल कर हृदय, बुद्धि तथा आत्मा तीनों पर पूर्ण अधिकार जमा लिया। इस प्रकार सन् १९२० से इस महापुरुष के जीवन और सिद्धान्तों का अध्ययन बराबर चलता रहा।

वैसे तो महात्मा जी के दर्शन कॉङ्ग्रेसों के अवसर पर प्रायः प्रति वर्ष हो जाया करते थे, किन्तु उससे सन्तोष बिल्कुल नहीं हो पाया। कार्य-भार में व्यस्त रहने के कारण, इन अवसरों पर चन्द मिनटों के लिए उनके दर्शन हो जाना बड़े सौभाग्य की बात है। फिर वहाँ इस प्रकार के हज़ारों दर्शनार्थियों के कारण उनके कार्य में बहुत व्याघात पड़ता है—सब काम छोड़, दर्शन देना ही मुख्य कार्य हो जाता है। उसके ऊपर जय-जयकार, पुष्प-वर्षा और चरण-स्पर्श की बौछारें त्रिशूल की

तरह उनकी शान्ति भङ्ग कर, वेदना पहुँचाती हैं। अतः ऐसे समारोहों के समय व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित करना तो दूर रहा, दो बातें करना या उनके शान्त रूप के दर्शन कर पाना भी दुर्लभ हो जाता है। समीप से उनके व्यक्तिगत आन्तरिक जीवन को अध्ययन करना, व्यक्तिगत परिचय प्राप्त करना तथा शङ्का-समाधान आदि कर अपने जीवन को पवित्रतर बनाने का अवसर प्राप्त करने की लालसा बनी ही रही। उसकी पूर्ति आश्रमों के शान्त और अवकाशमय वातावरण में ही हो सकती है। इच्छा रहते हुए भी साबरमती में कुछ काल रहने का अवसर न मिला, किन्तु वर्धा के आश्रम में उसकी कुछ-कुछ पूर्ति हुई। पूर्ण सन्तोष और कल्याण तो कुछ काल रह कर प्रणिपातेन, परिप्रश्नेन और सेवया के त्रिविध उपाय से ही हो सकता है। अस्तु।

अब भूमिका को अधिक न बढ़ा कर, अपनी वर्धा-यात्रा का वर्णन तथा उसके प्रभावों का वर्णन करना ही उपयुक्त होगा। गत वर्ष और इस वर्ष दोनों समय यह अमूल्य अवसर प्राप्त हुआ। ज्योंही महात्मा जी विश्राम लेने के विचार से वर्धा-आश्रम पधारे, मैं भी सेठ जमनालाल जी से तय कर, इस अवसर से लाभ उठाने के लिए वहाँ पहुँच गया। यद्यपि एक सप्ताह से अधिक रहने का अवसर नहीं मिला, किन्तु इतने थोड़े समय ही में जो लाभ हुआ, वह वर्णनातीत है।

आश्रम में पहुँचने के पूर्व जो विचार-तरङ्गें और उमङ्गें, हृदय में लहरें मारने लगीं, उनका वर्णन करना असम्भव है। ज्यों-ज्यों महात्मा जी की आत्मा और कार्यों से अपनी तुलना करते हैं, हृदय में अत्यन्त ग्लानि होती है कि किस प्रकार उनके सामने उपस्थित होकर उनकी पवित्र हृदय-वेधी दृष्टि का सामना करेंगे।

आश्रम, महात्मा जी के सच्चे भक्त और अनुगामी सेठ जमनालाल जी की कृति है तथा उनके त्याग का उदाहरण है। जब से सेठ जी महात्मा जी के प्रभाव में आए हैं, तब से उनका सारा जीवन बदल गया है। उन्होंने जो भी राष्ट्र-सेवाओं में दान और व्यक्तिगत त्याग किए हैं, उनका वर्णन करने का यहाँ अवसर नहीं। इतना ही कह देना काफ़ी है कि वे सब महात्मा जी के हृदय-स्पर्शी प्रभाव के कारण हुए तथा आश्रम भी उनमें से एक प्रधान है।

वर्धा स्टेशन से लगभग दो मील की दूरी पर यह आश्रम स्थित है। आचार्य विनोबा जी की अध्यक्षता में यह राष्ट्रीय तथा खादी-शिक्षा का कार्य सन् १९१९ से करता आता है। सपाट मैदान पर कुछ पक्के भवन ही इस आश्रम में सब कुछ हैं। इन भवनों में से कुछ में तो आश्रमवासी निवास करते तथा एक में बुनाई, कताई आदि कार्य होते हैं। समीप ही एक दुमंज़िले भवन के ऊपर के छोटे से कमरे में उस महात्मा का स्थान है, जिसने उससे भी छोटे से शरीर, किन्तु सबसे बड़ी आत्मा से सारे संसार को हिला दिया है।

किन्तु सुनने या देखने वाले को सचमुच सन्देह होता है कि संसार पर इतना भारी प्रभाव डालने वाली, ब्रिटिश सरकार सरीखी प्रबल सरकार को दहलाने वाली तथा सारे देश में क्रान्ति पैदा कर देने वाली आत्मा, क्या इतने छोटे से जीर्ण-शीर्ण शरीर की सूखी हड्डियों में क़ैद है? सचमुच सन्देह होता है, परन्तु सचमुच देख रहे हैं। तब सन्देह को स्थान कहाँ? सचमुच उस शरीर में कोई ऐसी वस्तु नहीं, जो उसके भीतर छिपी हुई आत्मा की महानता और उच्चता का परिचय दे। किन्तु एक वस्तु अवश्य है। एक नहीं दो हैं, और वे हैं, उस वृद्ध चेहरे पर भीतर घुसी हुई तेज आँखें, जो उसके भीतर की आत्मा का प्रकाश बाहर लाती हैं। ऐसा मालूम पड़ता है कि वह उनके द्वारा हमारे हृदय तक प्रवेश कर, उसे टटोल रहा है। इसी कारण उनसे आँख मिलाने की हिम्मत नहीं पड़ती, छिप जाने को जी चाहता है। किन्तु एक बार सामने जाने पर फिर लुका-छिपी नहीं चल सकती। जो कुछ भीतर हो, बाहर आ जाता है—"मायापति सेवक सन माया" करना असम्भव हो जाता है।

प्रथम दर्शन चर्ख़ा चलाते समय हुए। यही समय आगन्तुकों से मिलने या बातचीत करने का रहता है। ४ से ५ तक चाहे जो कोई आकर दर्शन तथा बातें कर सकता है। यदि अन्य समय मिलना हो तो ख़ास समय नियत कराना पड़ता है; जोकि कठिनाई से होता है। अस्तु।

An Appreciation

Pro. H. S. Nanjundiah, M.A., writes from Lakshmipuram, Mysore City, in his letter dated August 24, 1931.

I am a regular reader of CHAND and though my knowledge of Hindi must necessarily be very limited, I know enough to appreciate the fine vignettes that you contribute to that magazine. Permit me to congratulate you on this excellence both of matter and of styles. Your stories are always pitched in a somewhat emotional key but there is nothing cheap about the sentiments and though "love" is the permanent motive I have never seen your catering to the grosser tastes of your reader. The stories are characterised by a fine delicacy and deep psychological insight, which we rarely come across in our "vernacular" journals. As regards style you seem to strike a very happy medium between the pedantic and the colloquial. Not being a Hindi Scholar myself I do not know how far my estimate is valid and it is only as a love of fine literature, I am writing you this letter. Wishing you many years of happiness and fruitful literary activity and requesting you to accept my humble tributes.

❋ ❋ ❋

प्रथम दृष्टि पड़ते ही जो चित्त पर असर हुआ, वह था बाहरी और भीतरी स्वच्छता तथा निर्मलता। शुभ्र खादी की आधी ढँकी हुई हड्डियों के भीतर से विशुभ्र आत्मा का प्रकाश निकलता है। मानो सफ़ेद मोटी खादी आन्तरिक निर्मलता का बाह्य चिह्न-मात्र है। ऐसी पवित्र मूर्ति का चरण स्पर्श करने में भी हिचक लगती है। किन्तु इसके बिना सन्तोष भी नहीं होता। जमनालाल जी ने एक एम० एल० सी० कह कर मेरा परिचय कराया। इसमें भी मुझे सङ्कोच हुआ तथा धक्का-सा लगा। आज अधिक बातचीत नहीं हो सकी, अनेक दर्शनार्थी बैठे थे। उनसे एक-दो बातें करने में ही चर्ख़ा चलाने का समय समाप्त हो गया। पाँच बजते ही भोजन की घण्टी बज गई और सब लोगों को उठ आना पड़ा।

पहले आश्रम में महात्मा जी की दिनचर्या का वर्णन कर देना अच्छा होगा। प्रातःकाल ४ बजे के कुछ पहिले उठने की पहली घण्टी बजती है। १५ मिनट बाद दूसरी घण्टी होते ही सब आश्रमवासी प्रार्थना के लिए महात्मा जी की कोठी के सामने छत पर जमा हो जाते हैं और प्रार्थना आरम्भ हो जाती है। सब लोग एक साथ मिल कर :—

प्रातः भजामि स्मरामि हृदि सम्फुरदात्म तत्वंभू
सच्चित्सुखं परमहंसगतिंतुरीयम्।
यत् स्वप्न जागर सुषुप्तमवैति नित्यम्
तद् ब्रह्म निष्कलमहं न च भूत सन्धः॥

आदि प्रार्थना के श्लोकों की आवृत्ति करते हैं। तत्पश्चात् "श्रीराम जय राम जय जय राम" आदि की ध्वनि होती है। फिर आश्रम के आचार्य विनोबा जी या और कोई तानपूरे पर, तुलसी, कबीर, तुकाराम, रामदास या नरसी मेहता आदि का कोई भजन गाते हैं और सब उसके पीछे अनुसरण करते हैं। इसके बाद फिर राम-ध्वनि होती है। अन्त में सब मिल कर गीता के एक अध्याय का पाठ करते हैं। इस प्रकार आध घण्टा से लेकर पौन घण्टा तक में प्रार्थना समाप्त हो जाती है। उषा-काल की पुण्य बेला में सुमधुर सङ्गीत तथा प्रातः-स्मरण का आनन्द वे ही अनुभव कर सकते हैं, जिनको इसमें भाग लेने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ है।

इसके बाद नित्य-कर्म से निवृत्त होकर महात्मा जी ६½ बजे घूमने को निकल पड़ते हैं। जिसको साथ जाना होता है वे साथ चले जाते हैं। इस समय बातचीत आदि करने का अच्छा अवसर मिल जाता है। लगभग एक घण्टा में वे दो मील का चक्कर लगा कर लौटते हैं। एक घण्टा अध्ययन आदि करते रहते हैं। ९ बजे भोजन की घण्टी बजती है, और सब लोग भोजनशाला में एकत्र हो जाते हैं। भोजन व विश्राम के बाद दोपहर में महात्मा जी 'यङ्ग-इण्डिया' आदि के लिए लेख लिखने तथा पत्रों का उत्तर आदि लिखवाने में लगे रहते हैं। ३॥ या ४ बजे से ५ बजे तक चर्ख़ा चलाने का समय है। इस समय कोई भी जाकर दर्शन या बातचीत कर सकता है। ठीक पाँच बजे भोजन की घण्टी होती है और ६ बजे भोजनादि कर, फिर टहलने को निकल पड़ते हैं। इस समय फिर लोग साथ हो लेते हैं तथा बातचीत आदि होती जाती है। लौट कर ७॥ बजे फिर सब लोग प्रार्थना के लिए एकत्रित होते हैं। सुबेरे के अनुसार सन्ध्या-प्रार्थना के बाद भजन-गायन तथा रामध्वनि के बाद गीता के दूसरे अध्याय के श्लोकों का पारायण होता है। दोनों प्रार्थनाओं में महात्मा जी बराबर उपस्थित रहते हैं। इस समय उनकी प्रशान्त मुद्रा से जान पड़ता है कि वे गीता के उक्त श्लोकों के मूर्तिमान अवतार बने हुए हैं। उन्हें प्रत्यक्ष अपने जीवन में उतार कर बता रहे हैं। इन प्रार्थनाओं में सम्मिलित होना, सचमुच बड़े सौभाग्य तथा लोकोत्तर आनन्द देने वाली बात है।

इसी दिनचर्या के अनुसार नियमित रूप से काम होता है। रविवार की रात्रि से लेकर सोमवार के दिन भर महात्मा जी मौन धारण करते हैं और इस दिन 'नवजीवन' और 'यङ्ग-इण्डिया' के लिए लेख लिखा करते हैं। शेष कार्य उसी प्रकार होते हैं। गत वर्ष जब मैं आश्रम में गया था तब महात्मा जी कच्चे अन्न के प्रयोग में लगे हुए थे। बहुत से दूसरे लोग भी उनके साथ इस प्रयोग में लगे हुए थे। कुछ समय बाद स्वास्थ्य ख़राब हो जाने पर उन्हें यह प्रयोग बन्द कर देना पड़ा—यह बात सभी को प्रगट है।

❋ ❋ ❋
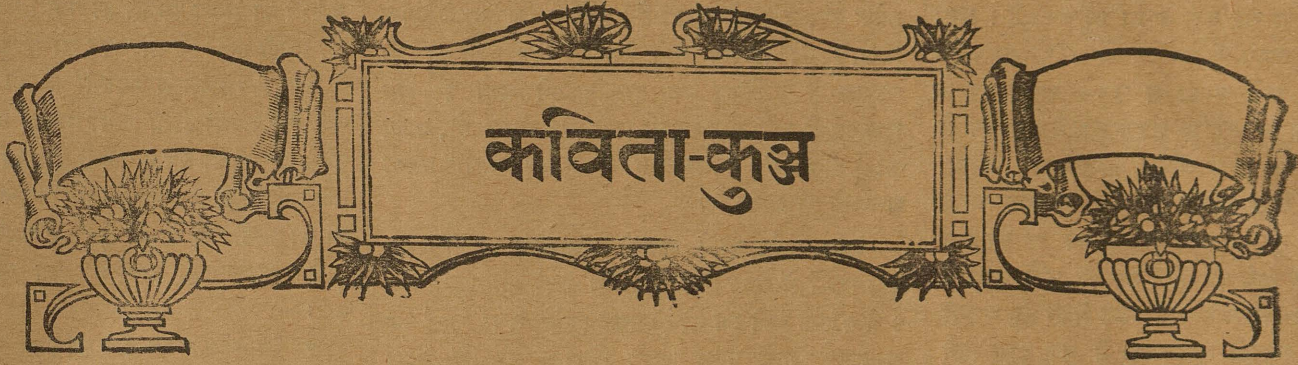
क़ब्रिस्तान

[श्री० जैतली रमाशङ्कर जी]

चाँदनी के पूर्ण रूप विकाश में,
अर्द्ध रात्रि व्यतीत थी जब हो चुकी।
स्तब्ध शीतल वायुमण्डल में खड़े,
देवदार विशाल, क़ब्रिस्तान पर—
थे तनिक आतङ्क सा फैला रहे।

चुप रहो, लेटो हुई कितनी यहाँ
हैं हृदय की दग्ध आतप कामना !
तरल आँखें आज भी किस लालसा—
से रही हैं देख नीलाकाश को।

❀

कुछ मिला कर पञ्च तत्वों में स्वयं,
फेंक देते अस्थियों औ' राख को !
और कुछ भावुक हृदय पवि-भार से,
हैं दबा देते स्वजन को आप ही !

❀

समय की गम्भीर सरिता की लहर,
एक को विस्मृत क्षितिज की ओर ले—
आप ही जाती बहा, औ' एक को—
बन्द जल पर एक कोने में सदा।

स्तब्ध कम्पन पर झुलाती हो सदय,
हाथ ढीले पड़ गए, जिनसे न जल
जीर्ण नौका का उलीचा जा सका।
ज्वार-भाटा दुःख औ' सुख का जहाँ,
झुर्रियाँ है डाल देता गाल पर,
खीज जाते आप हैं जो भाग्य से
और जाता खीज जिनसे भाग्य है,
स्तब्ध थे वे एक ओर पड़े हुए।

कुछ हृदय उद्दाम आकांक्षा लिए,
भूल सीधी राह, अल्हड़ जलधि की
अर्ध निमीलित किसी चट्टान से,
लाख बचने पर स्वयं टकरा गए।

कुछ सदा जो फूँक रखते पैर थे
पड़ गए दुर्भाग्य भीषण भँवर में,
कूल पर आत्मज खड़े लखते रहे,
लुप्त पर जल-राशि में वह होगए !

चुप रहो ! सोई हुई पीड़ा कहीं,
जाग जावे दग्ध हृदयों की नहीं।
छू न जावें यह पके व्रण अवनि के। ❀

* मसूरी क़ब्रिस्तान पर लिखी हुई कविता।

❀ ❀ ❀

'वह'

[श्री० गङ्गाप्रसाद जी गौड़]

स्वप्न-राज्य की देवी थी वह,
या ऊषा की लाली थी।
मानवता की अबुझ पहेली,
या यौवन-मद-प्याली थी॥
पावन-प्रेम-पुजारिन थी वह,
प्रेम-सुधा-मतवालिन थी।
मेरे हृद्योद्यान मात्र को,
वह सुप्रवीणा मालिन थी॥
आज वही उद्यान-शून्य है,
मालिन उसकी रूठ गई।
रूठ गई, पर कौन कहे यह—
प्रेम-रज्जु है टूट गई।

❀ ❀ ❀

प्रेमी

[श्री० गङ्गाविष्णु पाण्डेय विद्याभूषण "विष्णु"]

अपने-बिगाने की उसे न सुध रहती है,
होती उसकी है चित्त-वृत्ति ज्यों चलित की।
निन्दित समझ के न पास में बिठाता कोई,
मानते उसे हैं लोग श्रेणी में दलित की।
लाख समझाने से भी ध्यान में न असर कुछ,
भूल जातीं बातें सब गणित-फलित की।
लाज शर्म का न ख़्याल उसे रहता है,
कोर गड़ जाती जिसके है लोचन-ललित की।

❀ ❀ ❀

ओ ! घूँघट वाली

[श्री० रामकर्ण जी द्विवेदी]

मेरे मन की यह अभिलाषा, करके पूर्ण मिटा दे।
रुक जा, रुक जा, तन्वि ! तृषित नयनों की प्यास बुझा दे

इस घूँघट के पट के भीतर
छिपे इन्दु की छटा, छहर कर
मेरे मन को पुलकाती है
नाना भाँति भावनाएँ भर
खोल-खोल, अपना सुधांशु सा प्रिय मुखड़ा दिखला दे
तरुणि लटक से, अखिल विश्व में, प्रेम-सुधा बरसा दे

यह तेरा पट बना निराला
करता है मन को मतवाला
मुग्ध विश्व लख खड़ा हुआ है
तेरे निकट हृदय को ला-ला
जिसका पट ही लहर-लहर कर, मन में आग लगा दे
तो उसके सुन्दर आनन का कवि किससे उपमा दे

❀ ❀ ❀

यमुने !

[श्री० सोहनलाल जी द्विवेदी]

यमुने, कलकल क्या करती हो,
रोती हो या गाती हो ?
बही जा रहा कहाँ मौन बन,
क्यों कुछ नहीं बताती हो ?

❀

कहाँ तुम्हारी सखी राधिका,
कहाँ तुम्हारे प्यारे श्याम ?
कहाँ गोप-बधुएँ जाती हैं,
भरने को अब नीर ललाम ?

❀

पनघट पर अब भीड़-भाड़—
क्यों वैसी नहीं दिखाती है ?
वह उल्लास हिलोर कहाँ अब,
किस तट पर टकराती है ?

❀

कहाँ आजकल मुरलीधर की,
सुमधुर मुरली बजती है ?
कहाँ ग्वालबालों की अनुपम,
प्यारी टोली सजती है ?

❀

कहाँ तुम्हारे लता-भवन हैं,
कहाँ तुम्हारे सघन निकुञ्ज ?
कहाँ भृङ्ग गुञ्जार कर रहे,
कहाँ कञ्ज के मञ्जुल पुञ्ज ?

❀

पहिले के आनन्द-विभव की,
रही न एक निशानी है।
मूक व्यथा उर उपजाने को,
बाक़ी रही कहानी है।

❀

इठलाता था सदन तुम्हारा,
जो पहिले शुचि स्वर्ग समान।
वहीं विकलता नृत्य कर रही,
आज बना वह नग्न मसान।

❀

जो थे पहिले नन्दन बन से,
हरित पल्लवित कुसुमित कूल।
हैं झाड़ी-झङ्खाड़ वहीं पर,
उड़ती रेत भयानक धूल।

❀ ❀ ❀

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

गुरुदासपुर का १३ वर्षीय षड्यन्त्रकारी बालक—महन्त नरेन्द्रनाथ, जो दफ़ा ३६२ और दफ़ा १२० के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं।
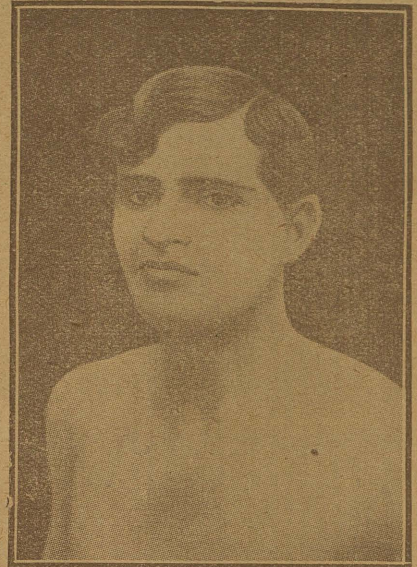
सुप्रसिद्ध विप्लवकारी नवयुवक—चौधरी शेरजङ्ग—जो आजीवन कारावास दण्ड भोग रहे हैं।
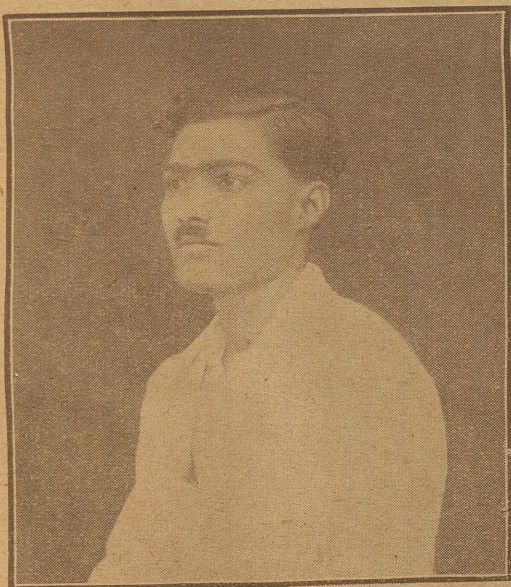
'चाँद' तथा 'भविष्य' के प्रतिभाशाली चित्रकार—श्री० एच० बागची

ट्रावङ्कोर की सीनियर महारानी साहिबा—जो आगामी नवम्बर में बालिग़ होने पर सारा राज्य-भार राजकुमार को सौंप देंगी।

यदि अवसर दिया जाय तो स्त्रियाँ क्या नहीं कर सकतीं ?
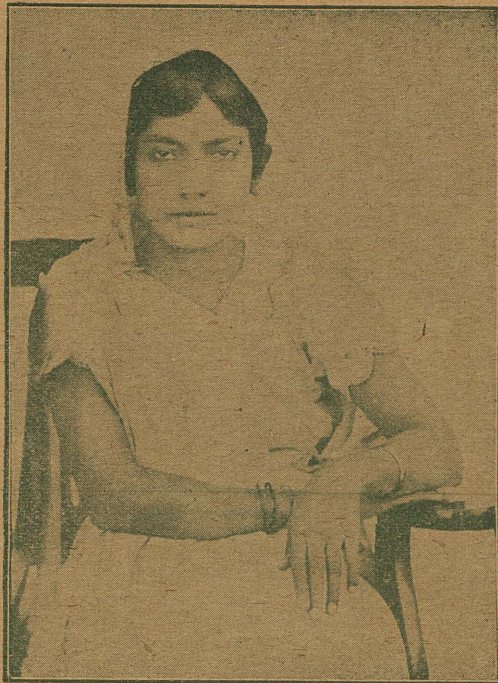
बेज़वाड़ा (आन्ध्र प्रान्त) प्रान्त की सुप्रसिद्ध रमणी-रत्न—श्रीमती ए० आर० लक्ष्मीपति, बी० ए०—जो कई शिक्षा-सम्मेलनों का नेतृत्व ग्रहण कर चुकी हैं।

सुप्रसिद्ध देशभक्त और आदर्श-नरेश—राजा कालाकाँकर की धर्म्म-पत्नी—जिन्होंने आजीवन स्वदेशी वस्तुओं तथा खादी ही के व्यवहार का व्रत लिया है।

डॉक्टर एम० नरोहा—जो वियना में होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय महिला सङ्घ में भारतीय महिला-प्रतिनिधि की हैसियत से पधारी थीं।

मैसूर राज्य की मुकुट-मणि—श्रीमती अलम्मा, आप समस्त राज्य में अपनी धर्म-परायणता के लिए विख्यात हैं। मैसूर नरेश ने कुछ दिन हुए आपको "धर्मपरायणा" की उपाधि से विभूषित भी किया था।

मध्य-प्रान्त के सुप्रसिद्ध नागरिक माननीय श्रीपद बलवन्त ताम्बे (जो कुछ दिनों तक स्थानापन्न गवर्नर भी रह चुके हैं) की धर्मपत्नी—श्रीमती ताम्बे जो अपनी सामाजिक सेवाओं के लिए विख्यात हैं।

कराची के कन्या महाविद्यालय की व्यवस्थापिनी—श्रीमती हरदेवी बाई—जो मज़दूर जाँच कमिटी की मनोनीत सदस्या भी नियुक्त हुई थीं।

श्रीमती मृणालदास गुप्त, एम० ए०, जो गत वर्ष ढाका (बङ्गाल) विश्वविद्यालय की संस्कृत एवं बङ्गला की परीक्षा में सर्वोच्च रही थीं—आपके पिता स्वर्गीय रायबहादुर कमलनाथ दास गुप्त भी स्त्री-शिक्षा के बड़े पक्षपाती थे।

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

कोरिया के नव-विवाहित दम्पति

तिब्बत के उच्च घराने की एक युवती

एन्यू द्वीप की कन्याएँ—जिनकी कष्ट-कहानी भारतीय स्त्रियों से भी अधिक दारुण है।

टोंगा द्वीप की कन्या कौमारकेश और चटाई के सहित

'भविष्य' की व्यङ्ग-चित्रावली का एक पृष्ठ
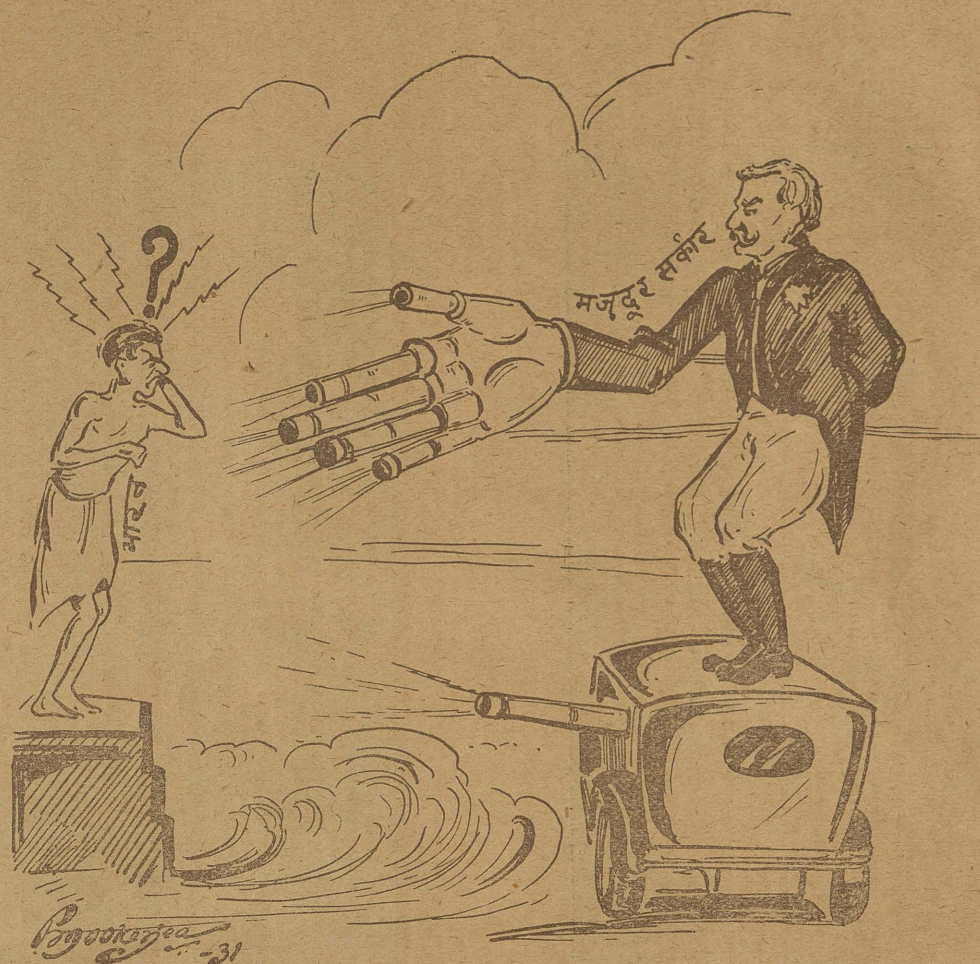
'मज़दूर सरकार' का फ़ौलादी पञ्जा !
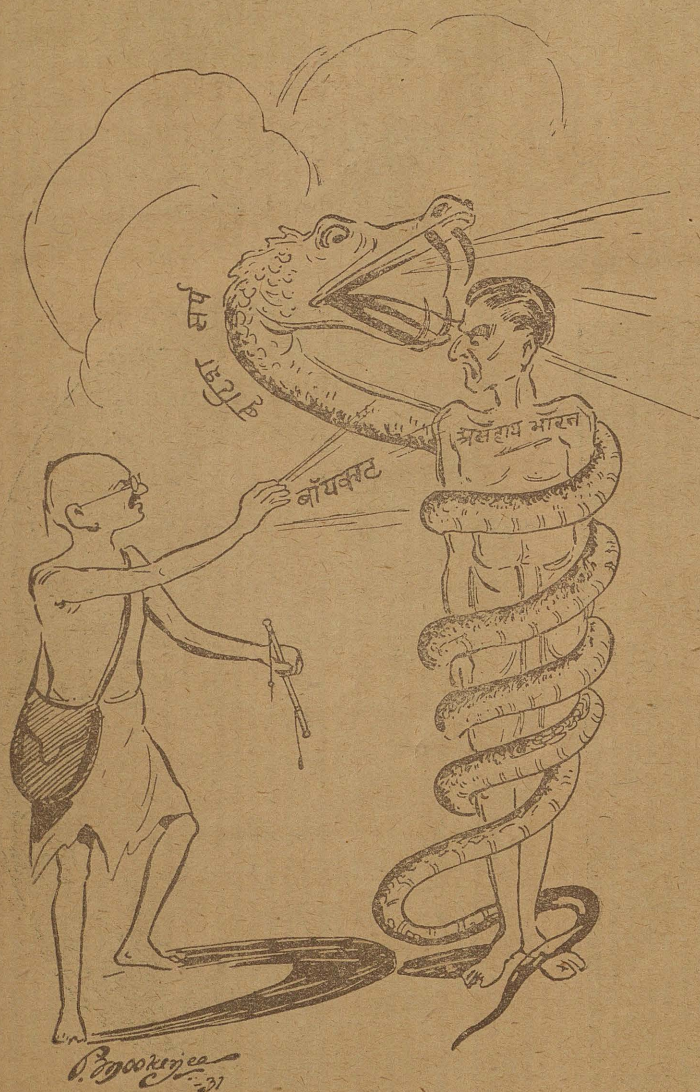
'अर्द्ध-नग्न फ़क़ीर' का जादू !

जॉनबुल का टकसाल

प्यारी रुत, ठण्ढी हवा, काली घटा बरसात की, क्या भली मालूम होती है फ़िज़ा बरसात की।
हाय यह रुत और यह काली घटा बरसात की, मुझको तड़पाने लगी एक-एक फ़िज़ा बरसात की।

साथ देगी क्या मेरा रोने में सावन की झड़ी,
सोज़िशे[1] दिल से नहीं गरमी सिवा बरसात की!

—"आतिश" लखनवी

मोर नाचे, कोयलें कूकीं, पपीहे बोल उठे,
वस्ल[2] के दिन आगए फ़स्ल आई क्या बरसात की।
क्या तेरी ज़ुल्फ़ें सियह को देख कर शर्मा गईं,
भींगी-भींगी रात है ऐ महलक़ा[3] बरसात की।
मैकशों[4] के दिल में दाग़ आँखों में साक़ी के ख़ुमार,
यह निशानी रह गई है, जा-बजा बरसात की।
चलती है ठण्ढी हवा नज़दीक है दौरे शराब,
मुज़दा[5] मस्तों को ख़बर लाई सबा[6] बरसात की।
हिज्र[7] में सब बेमज़ा है, वस्ल में सब बामज़ा,
फ़स्ल गर्मा की हो, या जाड़े की, या बरसात की।
टक्करें लीं अब्र से मस्तों ने पी-पीकर शराब,
क्या बला होती है मस्ती साक़िया बरसात की।

—"अमीर" लखनवी

उग रहा है हर तरफ़ सब्ज़ा दरो दीवार पर,
इन्तेहा गर्मी की है, और इब्तेदा बरसात की।
नाज़ हो जिसको बहारे मिस्रो शामो रूम पर,
सर ज़मीने हिन्द में देखे फ़िज़ा[8] बरसात की।

—"चकबस्त" लखनवी

प्यारी रुत ठण्ढी हवा, काली घटा बरसात की,
क्या भली मालूम होती है फ़िज़ा बरसात की।
मैं हूँ वह मैख़्वार[9] ऐ साक़ी कि मेरे वास्ते,
शर्त है क्या फ़स्ले गुल की क़ैद क्या बरसात की,
रञ्जो ग़म अन्दोहो[10] हिरमाँ दर्द आज़ार इज़्तेराब[11]
इक मेरे दिल पर इनायत है बराबर सात की।
क्या कहूँ क्या रात है, क्या दिन है, क्या अय्याम है
हाय यह बरसात के, बरसात का, बरसात की।
"नूह" तुमको फिर वही तूफ़ाँ उठाना चाहिए,
लोग करते हैं शिकायत जाबजा बरसात की।

—"नूह" नारवी

वह उठे बादल वह चमकी बर्क़[12], वह पानी गिरा,
हर किसी को फ़िक्र थी बेइन्तेहा बरसात की!
उससे पूछो जिसने लूटे हों मज़े बरसात के,
क़द्र क्या जानेगा कोई दूसरा बरसात की।
चन्द टुकड़े अब्र[13] के हैं, चाँद को घेरे हुए,
देखते बनती है यह प्यारी फ़िज़ा बरसात की।

मेरे साक़ी मस्त हो कर झूम उट्ठूँ एक बार,
वह पिला मुझको जो खींची हो ज़रा बरसात की।

—"ग़ाफ़िल" इलाहाबादी

क्यों न हो हर शख़्स के लब पर सना[14] बरसात की
रुत है सारे मौसमों में दिलकुशा बरसात की।
क़ुदरती मञ्ज़र पे क्यों आलम न हो जाए फ़िदा,
जज़्ब[15] करती है नज़र को हर अदा बरसात की।
ज़िन्दगी मुरदा दिलों में आ गई है "आफ़ताब",
हैं हवाएँ ठण्ढी-ठण्ढी जाँ फ़िज़ा बरसात की।

—"आफ़ताब" पानीपती

अब्र हो, माशूक़ हो, हाथों में हो जामे शराब,
यह मिले सामान तब देखें फ़िज़ा बरसात की।
आज वह नामे ख़ुदा सर गर्म आराइश[16] हुए,
हो गई नाज़िल बला हम पर यह क्या बरसात की

—"आनन्द" रामपूरी

मैकदे पर छाई है प्यारी फ़िज़ा बरसात की,
मैकशो का दिल बढ़ाती है घटा बरसात की।
सूए मैख़ाना चला हूँ लेके ज़ौक़े[17] मैकशी,
गुञ्चए[18] दिल को खिलाएगी हवा बरसात की।

—"आनन्द" सहारनपूरी

आस्माँ पर छा गई काली घटा बरसात की।
ठण्ढी ठण्ढी ख़ुल्द[19] से आई हवा बरसात की।
क्यों तरोताज़ा न हों बरसात में ज़ख़्मे[20] कुहन,
कर गई सब को हरा काली घटा बरसात की।

—"इन्द्रजीत शर्मा" मछरवी

यूँ तो छाई है ज़माने पर घटा बरसात की
दीदनी[21] है बाग़ में लेकिन फ़िज़ा बरसात की।
जोश पर हैं दीदये तर भी हमारे आजकल।
इसके आगे क्या हक़ीक़त है भला बरसात की।

—"ज़ाहिद" इलाहाबादी

देख कर रङ्गीनियाँ हद से सिवा बरसात की।
धूम है बाग़े जहाँ में जा-बजा बरसात की।

—"अख़्गर" लखनवी

तोबा करने के लिए तैयार जब होते हैं हम।
दिल बढ़ा जाती है आ-आकर घटा बरसात की।

—"आशुफ़्ता" साहब

चल रही है तीर बन-बन कर हवा बरसात की।
ख़ूँ मुझे रुलवा रही है यह घटा बरसात की।
हसरतें बर आयेंगी निकलेंगे सब अरमाँ तेरे।
रुत दिले बेतर्ब[22] आने दे ज़रा बरसात की।

—"ज़ार" रामपूरी

पत्ता-पत्ता डाली-डाली हुस्न से मामूर[23] है।
नूर बरसाती है गुलशन में घटा बरसात की।

—"शैदा" देहलवी

आज रह जाए न साक़ी आरज़ू बाक़ी कोई।
झूम कर क़िब्ले[24] से उट्ठी है घटा बरसात की।

—"शैदा" अमरोहव

बिजलियाँ दिल पर तबस्सुम[25] से गिराने आगईं,
जान की लेवा बनी है हर अदा बरसात की।

—"सिद्दीक़" देहलवी

किस लताफ़त[26] से है अब निखरी फ़िज़ा बरसात की
आई है धुल-धुल के पानी से हवा बरसात की।

—"दिलावर" अज़ीमाबादी

देखिए क्या-क्या गुहर-बारी[27] करे काली घटा।
आई है वह ज़ेब तन कर के क़बा[28] बरसात की।

—"दास" मुरादाबादी

कैफ़ियत[29] क्या-क्या दिखाती है वह बरसात की,
जोश पर मस्ती को लाती है घटा बरसात की।
है रवाँ बारह महीने मेरे आँखों की झड़ी।
चश्मे-तर[30] से पानी-पानी है घटा बरसात की।

—रतनलाल "राज़"

रङ्ग लाई है चमन में आज क्या फ़स्ले बहार।
गुल खिलाती है नया बादे सबा बरसात की।
आजकल "बेबाक" मौसिम माँगता है और कुछ।
किस तरह बरदाश्त की जाए जफ़ा[31] बरसात की

—"बेबाक" पीलीभीतवी

दौर मस्ती चल रहा है सदक़े में बरसात के।
क्यों न लें हम भी बलायें साक़िया बरसात की।

—"बहर" मुज़फ़्फ़रनगरी

हाय यह रुत और यह काली घटा बरसात की,
मुझको तड़पाने लगी एक-एक फ़िज़ा बरसात की
दिल पसन्दे ख़ल्क़[32] है एक-एक अदा बरसात की,
हश्र[33] तक यों ही रहे यारब फ़िज़ा बरसात की।
कहती है दुनिया जिसे काली घटा बरसात की,
है हक़ीक़त में वही ज़ुल्फ़े[34] दुता बरसात की।
पीने वाले जाम[35] उड़ाओ ख़ुम[36] सँभालो मैं पियो,
यह समाँ बरसात का, ऐसी फ़िज़ा बरसात की।

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

१—जलन, २—मिलन ३—चाँद सी सूरत वाला, ४—शराबियों, ५—ख़ुश-ख़बरी, ६—हवा, ७—बिरह, ८—रौनक़, ९—शराबी १०—रञ्ज, ११—बेक़रार, १२—बिजली १३—बादल,

१४—तारीफ़, १५—खिंचाव, १६—सिंगार, १७—शराब पीने का शौक़, १८—कलियाँ, १९—बैकुण्ठ, २०—पुराने घाव, २१—देखने लायक़, २२—बेचैन,

२३—आबाद, २४—काबे से, २५—हँसी, २६—मज़ा, २७—मोती बरसाना, २८—कपड़ा, २९—हालत ३०—आँसू भरी आँख, ३१—ज़ुल्म, ३२—संसार, ३३—प्रलय, ३४—केश, ३५—प्याला, ३६—मटका।

'धर्म और भगवान् मृत्यु-शय्या पर'

[श्री० विश्वम्भरसहाय जी 'विनोद', बी० ए०, एसिस्टैण्ट एडिटर 'टुडे' बनारस]
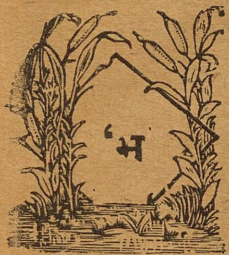
'भविष्य' में 'धर्म और भगवान् मृत्यु-शय्या पर' शीर्षक कई लेख निकल चुके हैं। कुछ लेखकों ने पानी पी-पीकर ईश्वर को कोसा है और पाठकों को यह बतलाने का प्रयत्न किया है कि शीघ्र ही भारत में भी वह समय आने वाला है जब कि रूस की भाँति हमारे मन्दिरों, मस्जिदों और गिरजों में घण्टा-घड़ियाल, नमाज़ और प्रार्थना के बजाय सिनेमा दिखाए जाया करेंगे। तात्पर्य यह है कि कुछ समयान्तर भारत से ईश्वर को बस्ता-बोरिया बाँध कर कोई और स्थान तलाश करना पड़ेगा। इसके विपरीत दूसरे मित्रों ने, जिनमें श्री० वासुदेव कृष्ण ताटके, एम०ए० का नाम उल्लेखनीय है, दूसरे पत्रों में इस प्रकार के लेख लिखे हैं, जिनमें ईश्वर-विरोधी पक्ष की कड़ी आलोचना की गई है।

उपर्युक्त लेख के समर्थन में 'भविष्य' ३० जुलाई, १९३१ के अङ्क में श्री० कुमार सुरेशसिंह जी, कालाकाँकर ने अपने विचार प्रकट किए हैं। बजाय इसके कि आप विषय पर अपने भाव प्रकट करते, आपने ताटके जी को आड़े हाथों लिया है और जवानी के जोश तथा नई रोशनी के प्रभाव में ख़ूब खरी-खोटी सुनाई हैं। लेख को हमने आदि से अन्त तक पढ़ा, हमें कहीं भी यह पता नहीं चला कि आख़िर वह कौन सी युक्ति है, जो हमें क़ायल करे कि ईश्वर की सत्ता को मानना ढकोसला है। हाँ, यदि लेखक महाशय यही समझते हों कि केवल इतना ही लिख देना पर्याप्त है कि ईश्वर किस चिड़िया का नाम है, हम उसे क्यों मानें और बस संसार उनके मत का हो जाय, तो वह अभी गहरे स्वप्न में हैं! लेख के बीच में यह भी दुहाई दी गई है कि हमारे बहुत से नेता ऐसे हैं, जो नास्तिकता में विश्वास रखते हैं, इत्यादि। इसी प्रकार की और बहुत सी बातें सुयोग्य लेखक महाशय ने इधर-उधर से इकट्ठी कर ली हैं।

इससे पूर्व कि हम कुछ आगे लिखें, यह जान लेना आवश्यक है कि वास्तविक स्थिति क्या है, जिसमें से होकर हम गुज़र रहे हैं। बात यह है कि हमें नक़ल करनी ख़ूब आती है। इस कला में हम सिद्धहस्त हैं। चूँकि रूस यह कहता है कि ईश्वर कोई बला नहीं, हमने भी पूर्ण इरादा कर लिया कि बस ईश्वर को दफ़ना कर ही जल-पान करेंगे। चूँकि इङ्गलैण्ड के कुछ मनुष्य यह कहते हैं कि मूँछें रखना वहशीपन की निशानी है, बस हम तैयार हो गए कि ठीक तो है। चूँकि पैरिस का सभ्य समाज यह दावा करता है कि शराब न पीने वाले तो दहक़ानी होते हैं, इसलिए हमने भी इरादा कर लिया कि संसार में रहेंगे तो सभ्य बन कर ही रहेंगे। हम पेरिस वालों से पीछे क्यों रहें? यही हममें से बहुतों का सिद्धान्त है और यही अन्तिम ध्येय है। इस बात के ऊपर बहुत ज़ोर दिया जाता है कि रूस वाले गिरजों को तोड़-तोड़ कर सिनेमा-हॉल बनाते जा रहे हैं, क्या आख़िर उन्होंने घास खाई है, जो उन्हें यह ख़ब्त सवार हुआ है? तो फिर हम भी वैसा ही क्यों न करें? मैं यहाँ पर एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ कि माना, इसमें कुछ आपत्ति नहीं कि वह गिरजों को बायस्कोप या अजायबघर क्यों बनाते हैं, परन्तु क्या इसका अर्थ यह है कि ईश्वर गिरजे के अन्दर बन्द है और यदि गिरजे पर क़ब्ज़ा कर लिया गया तो ईश्वर को सदैव के लिए बाहर निकाल दिया?

हमारे मित्रों ने ईश्वर को न जाने क्यों कोई खिलौना या मिट्टी का बुत समझ रक्खा है, जिस पर आक्रमण करके वह उसकी सत्ता का नाश करना चाहते हैं। असल बात तो यह है कि हमारे यह स्वतन्त्र विचारवादी (Social customs and practices) सामाजिक प्रथाओं को ही ईश्वर का रूप समझ बैठे हैं। धर्म और सामाजिक प्रथाओं में बड़ा अन्तर है। सामाजिक प्रथाएँ देश-काल के अनुसार भिन्न-भिन्न होती हैं, परन्तु धर्म भिन्न-भिन्न नहीं हो सकता। जिसको हमारे मित्र धर्म का रूप समझे बैठे हैं, वह वास्तव में सामाजिक प्रथाएँ हैं। इसको समझने के लिए हमें कुछ उदाहरणों का आशय लेना पड़ेगा।

मुसलमानों के सर्व-प्रथम नेता हज़रत मुहम्मद ने अपने अनुयायियों को सङ्गठित करने के लिए उनके लिए एक क़ानून (Code) बनाया कि तुम पाँच समय नमाज़ पढ़ा करो, नमाज़ पढ़ते समय तुम इस प्रकार के आसन किया करो। वास्तव में देखा जाय तो यह केवल एक समुदाय को सङ्गठन में बाँधने के अतिरिक्त और किसी भी विशेष लाभ के पहुँचाने वाली बात नहीं। ईश्वर यदि कुछ वस्तु है और उसकी उपासना करनी उचित है तो चाहे हम मस्जिद में जाकर नमाज़ पढ़ें या रेल के प्लेटफ़ार्म पर, एक ही बात होगी। हम पाँच समय पढ़ें या एक समय, या कभी न पढ़ें, तो हमारे ऊपर कोई आपत्ति नहीं आ सकती। और भी इस प्रकार के कुछ नियम मुस्लिम समाज में प्रचलित हैं, जो उस समाज को एक सूत्र में बाँधने में सहायक होते हैं। अब यदि भूल व अविद्या के कारण इन सामाजिक नियमों को बिना देश-काल विचारे हुए यह समुदाय पालन करना अपना उद्देश्य बना ले, चाहे उससे लाभ की अपेक्षा हानि ही हो, तो इसमें धर्म और भगवान का क्या दोष?

इसी प्रकार से हम हिन्दू-समाज या आर्य-समाज अथवा किसी दूसरे समाज की सामाजिक प्रथाओं के उदाहरण ले सकते हैं। इन मित्रों ने इस बात पर बहुत ज़ोर दिया है कि धर्म के नाम पर बहुत अत्याचार होते हैं, मन्दिरों में तथा तीर्थ-स्थानों पर, जो धर्म के अड्डे समझे जाते हैं, खुल्लमखुल्ला धर्म के सिद्धान्तों की अवहेलना की जाती है। धर्म के नाम पर संसार में बड़े-बड़े युद्ध हुए हैं तथैव धर्म का नाम लेना ही छोड़ देना उचित है। यह तर्क बड़ा ही निस्सार है। हम पूर्णतया अपने मित्रों से सहमत हैं कि उन स्थानों पर, जो धर्म-स्थान माने जाते हैं, बड़ी-बड़ी कुचेष्टाएँ होती हैं, धर्म का नाम लेकर मनुष्यों ने एक दूसरे का ख़ून किया है, धर्म की दुहाई देकर ही आए-दिन सैकड़ों हिन्दू-मुसलमानों के सिर फूटते हैं; परन्तु क्या इसका अर्थ यह है कि हम असली बीमारी का निदान न सोच कर, ऊपरी बातों को ही बीमारी की जड़ समझ बैठें? हम ऐसा ही कर रहे हैं। हम अपने समाज में अनेक प्रकार की बुराइयाँ पाते हैं तो हमारा कर्तव्य है कि पूर्ण प्रयत्न से उन बुराइयों का सुधार करें, मन्दिरों का प्रबन्ध करने के लिए कमेटियाँ बनाएँ तथा वहाँ से अवाञ्छनीय व्यक्तियों को अलग करें। जिस कार्य के लिए मन्दिर और मस्जिदें बनाई गई थीं, उस कार्य के लिए ही उनका उपयोग किया जाय। मन्दिरों में स्कूल स्थापित कर सकते हैं, सार्वजनिक मीटिङ्ग के लिए मन्दिर व मस्जिद उपयुक्त स्थान हो सकते हैं। परन्तु नहीं, यदि आपने इसी पर कमर कस रक्खी है कि करना-धरना तो कुछ नहीं, हमें तो संसार के कोष से धर्म और ईश्वर का नाम मिटा देना है तो इसका कोई उपाय नहीं। माना, दो समुदायों में धर्म के नाम पर लड़ाई होती है, यदि धर्म का नाम मिट भी गया तो क्या वे समुदाय पार्टी के नाम पर नहीं लड़ सकते। राजनैतिक दलबन्दियों के कारण क्या कुछ कम युद्ध होते हैं? तो फिर आप यह कहेंगे कि 'पार्टी' शब्द या 'नैतिक विचारों' का ही संसार से ख़ातमा करना चाहिए, क्योंकि न तो भिन्न-भिन्न नैतिक विचार लोगों में रहेंगे, न यह आपस की कलह होगी। यदि यही सिलसिला चलता रहा तो इसका अन्त कहाँ होगा, आप ही सोचें। यह तो ऐसी ही बात हुई कि यदि किसी म्युनिसिपैलिटी में कुप्रबन्ध के कारण सड़कों की हालत ख़राब है, या म्युनिसिपैलिटी क़र्ज़दार होती जा रही है तो हम फ़ैसला दे दें कि म्युनिसिपैलिटी को तोड़ देना ही उचित है, न तो म्युनिसिपैलिटी रहेगी और न सड़कें इस बुरी दशा में होंगी। सड़कों की दशा या म्युनिसिपैलिटी का क़र्ज़ा तभी दुरुस्त हो सकता है, जब कि हम उसके प्रबन्ध को ठीक करें, न कि उस संस्था का अन्त करने से?

प्रश्न यह उठता है कि फिर धर्म क्या है, जिसको सामाजिक प्रथाओं से भिन्न बतलाया गया है। संस्कृत के एक कवि ने धर्म की व्याख्या बड़े सुन्दर ढङ्ग से की है। वह धर्म के लक्षण बतलाते हुए लिखता है :—

धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर विद्या सत्यमक्रोधो दशकंधर्मलक्षणम् ॥

धर्म के दश लक्षण बतलाए गए हैं। धैर्य, क्षमा, सहनशीलता, शुद्धताई, सत्य, इन्द्रियों पर क़ाबू, विद्या का ग्रहण, क्रोध का न होना, इत्यादि। इनके यहाँ लिखने का यह तात्पर्य नहीं कि हम इन दश लक्षणों को ही मान कर बैठ जाते हैं, केवल लिखने का आशय यह है कि जिसे धर्म कहा जाता है वह कोई ऐसी वस्तु नहीं, जिसे एक व्यक्ति कुछ माने दूसरा कुछ। मैं अपने उन भाइयों से पूछता हूँ जो अपने को नास्तिक कहने में गौरव समझते हैं कि उन्होंने धर्म को क्या समझ लिया है, जिसे वे मृत्यु-शय्या पर लिटाना चाहते हैं। क्या संसार से सत्य, मान-मर्यादा की सत्ता को मिटा कर वह धर्म का नाश कर देंगे? कर भी दिया तो क्या फल होगा?

दूसरा काँटा जो हमारे इन भाइयों की आँखों में खटकता है, वह ईश्वर का होना या न होना है। ठीक है, ईश्वर को किसी ने नहीं देखा। देखें तो तब, जब कि उसका कोई निश्चित रूप हो। इस पर भिन्न-भिन्न दलों में बड़े-बड़े वाद-विवाद हो चुके हैं कि ईश्वर कोई वस्तु है या नहीं। यदि है तो शरीरधारी या काया-रहित, सर्वव्यापक है या एकान्तर्यामी, इत्यादि। हम इन सब वाद-विवादों में पड़ना नहीं चाहते। हम तो केवल इतना ही लिख कर समाप्त कर देना चाहते हैं कि ईश्वर किसी विशेष पदार्थ को हम नहीं मानते हैं। वह एक शक्ति है, जिसकी सत्ता का ज्ञान हमें पग-पग पर होता है। जब मनुष्य कोई अनुचित कार्य करना चाहता है, तो उसके हृदय में एक भय उत्पन्न होता है, एक अज्ञात शक्ति उसको प्रेरणा करती है कि वह इस कार्य को न करे। इसी प्रकार मनुष्य को अपने नित्य के जीवन में इस अज्ञात शक्ति का परिचय पग-पग पर होता है, हम इसे ही ईश्वर की शक्ति मानते हैं।

अन्त में हम अपने नवयुवक समाज से अनुरोध करते हैं कि स्वतन्त्रता को स्वच्छन्दता का रूप न दें। स्वतन्त्रता के आवेग में हमारे नवयुवक-समाज ने यह समझ लिया है कि वह सब बातें, जो मनुष्य को नियम में बाँधती हैं, पाखण्ड हैं। यही रफ़्तार रही तो कुछ

(शेष मैटर २८ वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

श्री० मानवेन्द्रनाथ रॉय का बयान

पहली सितम्बर को श्री० मानवेन्द्रनाथ रॉय ने अपनी मुचलके की दरख़्वास्त पेश करते हुए नीचे लिखी बहस की :—

"मैं अदालत को धन्यवाद देता हूँ कि उसने मुझे स्वयम् अपनी प्रार्थना को उपस्थित करने और बोलने की अनुमति प्रदान की। यह अनुमति मैंने इसलिए माँगी थी कि मेरे वकील अदालत के कार्यकर्ता होने के कारण कहीं उन तर्कों और युक्तियों को अदालत के सामने रखने में असुविधा न मालूम करें, जिन्हें मैं उपस्थित करना चाहता हूँ। वे लोग ऐसे विधानों और शैष्टाचारिक नियमों से बँधे होते हैं जो ऐसे विशुद्ध राजनैतिक मामलों में, जैसा कि यह है, कड़ाई के साथ नहीं पालन किए जा सकते। फिर ऐसे मामले में कि एक साधारण चिट्ठी के अन्दर किसी ने अपने राजनैतिक विचार प्रकट किए हों और कहा यह जाय कि इस निर्दोष काग़ज़ की पीठ पर, जिस पर पत्र लिखा गया है, भारी तोपख़ाना राजसिंहासन की शत्रुता के लिए छिपा खड़ा है। ऐसे क़ानून का औचित्य और उसकी नियमतन्त्रता, जिसके आधार पर मेरा विचार हो रहा है, इस क़िस्म के मुक़दमों में अवश्य ही जाँचनी-पड़तालनी पड़ेगी। मेरे अपनी अवस्थिति, अपने विचार और अपने कामों को न्याय-सङ्गत प्रमाणित करने का अर्थ होगा भारतस्थ अङ्गरेज़ी राज्य को ललकारना। देखता हूँ, कि अदालत मेरे इस बयान को अपराध की स्वीकृति समझ कर लिख रही है और वादी-पक्ष मारे ख़ुशी के उछलता होगा। मैं वादी-पक्ष को बधाई देता हूँ और इस प्रकार के असीम आनन्द का वादा करता हूँ कि उन्हें मुझसे इस तरह की इतनी स्वीकृतियाँ मिलेंगी कि वह घबरा जाएँगे। यह अपराध की स्वीकृतियाँ बिना ज़ोर-ज़ुल्म के स्वेच्छा से होंगी।

लिखित प्रार्थना-पत्र के अतिरिक्त मुझे केवल एक-दो बातें कहनी हैं। क़ानून की जिस पद्धति के अनुसार मेरा विचार हो रहा है और जिसके अधीन यह अदालत है उसीका मन्तव्य है कि जब तक मुलज़िम का अपराध करना उचित प्रमाणों से सिद्ध न हो जाय तब तक उसे निर्दोष समझना चाहिए। इस अदालत की सीमा में पाँच सप्ताह से अधिक होते हैं कि मैं बन्धन में हूँ, यद्यपि मेरे अपराधी होने का कोई प्रमाण अभी तक उसके सामने नहीं रक्खा गया। कम से कम प्रकट रूप से या मेरी जानकारी में तो कोई प्रमाण नहीं दिया गया। इसलिए क़ानून के शब्दों और भावों के अनुसार अब तक अदालत मुझे अवश्य ही निर्दोष समझे। आपने एक निरपराध को पाँच सप्ताह से अधिक बन्धन में रख छोड़ा है। अब और भी इस तरह अन्धन-बन्धन में रखना क्या न्यायानुमोदित है?

मैं जानता हूँ कि इस प्रश्न का क्या उत्तर मिलेगा। आप क़ानून के शब्दों में शरण लेंगे और कहेंगे कि भारत-दण्ड-संग्रह की जिस धारा के अनुसार मुझे पकड़ा गया है, उसमें राज़ीनामा और ज़मानत-मुचलके का विधान नहीं है। सुतराम् यदि यह मुक़दमा ५० वर्ष तक चले या वादी को इस बात के निश्चय करने में कि मेरे मामले में कैसे क्या किया जाय, कई वर्ष लग जायँ, तो इस बीच में मैं जेल में ही पड़ा सड़ा करूँ। जिसका यह अर्थ है कि मैं अवश्य दण्ड भोगूँ; यद्यपि क़ानून मुझे निर्दोष बतलाता है।

निस्सन्देह मैं सरकार के साथ सुलह करने की इच्छा नहीं रखता। क्योंकि यह झगड़ा मेरा वैयक्तिक झगड़ा नहीं है, यह तो ऐतिहासिक झगड़ा है जो मार के पीड़ित और लुटी जनता और उस विदेशी एजेन्सी के साथ हैं जिसने इस देश की हुकूमत को आत्मसात् कर लिया है।

मुचलके की बाबत तो मामला दूसरा ही है। दफ़ा १२१ (अ) भारत-दण्ड-संग्रह में मुचलका नहीं हो सकता, क्योंकि अनुमानात्मक रूप से इसमें गम्भीर विषय का सम्बन्ध है, इसमें प्रतिष्ठित शासन सत्ता के नष्ट हो जाने का भय है। व्यवहार में तो यही बात है कि किसी को भी इस दफ़ा में पकड़ सकते हैं। अन्य फ़ौजदारी क़ानूनों की तरह यह क़ानून भी मिलते-जुलते अङ्गरेज़ी क़ानून के नमूने पर बना है। जिसका 'ट्रेजन फैलनी' क़ानून नाम धरा गया है। लेकिन सर जेम्स स्टिफ़ेनर, जिनकी बदौलत यह विधान की पुस्तक में रक्खा गया, बड़े भारी चित्रकला-विधान शिल्पी की आत्मा रखते होंगे, कारण कि वस्तु नमूने से बिल्कुल नहीं मिलती। क़ानून में बदले की प्यासी उस साम्राज्य-वादी आत्मा की छाप झलकती है जो ग़दर की स्मृति-छाया से काँप रही हो।

मूल अङ्गरेज़ी क़ानून में तो जब तक किसी प्रकट अभिसन्धि का काम प्रमाणित न हो, षड्यन्त्र सिद्ध नहीं होता। जब किसी प्रकट अभिसन्धि से किए हुए काम के लिए पकड़ा जाता है तो उसके विरुद्ध अभियोग का सकारण अनुमान सरलता से किया जाता है कि राजा के विरुद्ध लड़ाई करने का षड्यन्त्र हुआ। लेकिन हिन्दुस्तान के क़ानून में 'किसी अभिसन्धि साधन के लिए प्रकाश्य काम' को छोड़ दिया गया है और ऐसे सन्दिग्धार्थ शब्दों में और इतने लचीले ढङ्ग से लिखा गया है कि कोई भी आदमी, जो वर्तमान शासन-पद्धति को बदलने की राय प्रकट करे, वही पकड़ा जा सकता है। इस पर भी इस दफ़ा में मुचलका नहीं हो सकता, केवल इसलिए कि यह दफ़ा अनिष्ट करने वाली और किसी प्रवृत्ति को लिए हुए अङ्गरेज़ी क़ानून का जो शासन-सत्ता के विरुद्ध वास्तविक अपराध के साथ बर्ताव करने को बना है, हास्यजनक विकृत चित्र है। यह हानिकर और एक पक्ष की ओर झुकने वाला क़ानून खेल-तमाशे की तरह हलके मन से काम में लाया जाता है। प्रायः लोगों को इसी दफ़ा में पकड़ लिया जाता है, लेकिन उनका कोई अपराध नहीं होता, सिवा इसके कि उनका राजनैतिक मत अधिकारियों के मनोभावों के अनुकूल नहीं होता।

इसलिए इस बात का मानना हास्यजनक है कि जो आदमी इस दफ़ा के अनुसार पकड़ा जाय, उसकी ज़मानत-मुचलका न हो। जुदा-जुदा मामलों को उनकी पात्रता के अनुसार निर्णय करना चाहिए और मुचलका मञ्ज़ूर करना चाहिए, जब कि क़ानून का मन्तव्य और मूल सिद्धान्त बाधक न होता हो। मेरे मामले में मैं प्रतिपादन करता हूँ कि बिना फ़ौजदारी क़ानून के साधारण मौलिक सिद्धान्त और प्रचलित प्रथा को बिना तोड़े मेरी मुचलके की प्रार्थना अस्वीकृत नहीं हो सकती।

अतः, पर इलाहाबाद हाईकोर्ट की नज़ीर है कि जो लोग दफ़ा १२१ (अ) भारत-दण्ड-संग्रह के अनुसार पकड़े जाएँ उनको मुचलके पर छोड़ने से सदा इन्कार कर देना ज़रूरी नहीं है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने आज्ञा दी थी कि मेरठ षड्यन्त्र के मुक़दमे के अभियुक्तों को मुचलके पर छोड़ देना चाहिए। यह आज्ञा ठीक इसी आधार पर हुई थी कि उनके विरुद्ध किसी प्रकट अभिसन्धि का प्रमाण नहीं था, जो प्रमाण थे उनसे उन्हें पूरी क़ानूनी सज़ा नहीं हो सकती थी। जस्टिस मुकर्जी की आज्ञा से फ़ुलबेञ्च में जजों ने एक अंश में मतभेद किया और निश्चित मत दिया कि जिन अपराधों में मौत या आजीवन कारावास का दण्ड होता है उनमें मुचलका नहीं लिया जा सकता।

यहाँ यह तर्क हो सकता है कि यह अदालत, वह दर्जा नहीं रखती जो मेरठ के षड्यन्त्र के मामले के सम्बन्ध में इलाहाबाद हाईकोर्ट का है। इस अदालत को यह नहीं मालूम कि वादी की ओर से किस तरह का प्रमाण पेश किया जायगा।

भगवन् मेरा ठीक यह विवाद है। अभी तक अदालत के सामने मेरे विरुद्ध बिल्कुल कोई सबूत नहीं पेश किया गया। आप पूर्व ज्ञान के आधार पर कोई मत नहीं स्थिर कर सकते। अभी तक आपको मालूम नहीं है कि जो प्रमाण मेरे विरुद्ध दिया जायगा उसमे मैं क़ानून के पूरे दण्ड का भागी होऊँगा इसलिए मेरा मुचलके पर छूटने के अधिकार न मिले। इसलिए आप मुझे अब अधिक काल तक बन्धन में कैसे रख सकते हैं?

मैं क़ानून के आधार पर इस बात की पुष्टि करता हूँ कि वादी के पास मेरे विरुद्ध कोई प्रमाण नहीं है इसीलिए उसकी ओर से सुस्ती हो रही है। सात वर्ष पहले के निकले वारण्ट के अनुसार मुझे पकड़ा गया है, जो उस मुक़दमे के सम्बन्ध में है, जिसमें अदालत में उपस्थित मुल्ज़िमों को सज़ा दी गई थी। मुझे पकड़ते ही तुरन्त मेरे मामले की जाँच क्यों नहीं हुई? वादी के पास मामला तैयार था लेकिन १९२४ के कानपूर षड्यन्त्र के मामले में प्रमाण बहुत कमज़ोर था। ऐसे हास्यास्पद सबूत पर राजनैतिक मामलों में मुल्ज़िमों को सज़ा देना केवल ऐसे देश में हो सकता है जो विदेशी शासन के आधीन हो, जहाँ न्याय एक तमाशा बना हो। सात वर्ष बाद वादी फिर उसी प्रहसन का अभिनय करना नहीं चाहते। मैं उनके इस भाव की प्रशंसा करता हूँ। इस बार वह अधिक प्रशस्त तमाशा दिखलाना चाहते हैं। लेकिन जहाँ कुछ नहीं है वहाँ कुछ पैदा कर देना कठिन है। साथ ही वादी-पक्ष बड़ा चतुर है वह उसी कहावत को चरितार्थ करना चाहता है कि कुत्ते के मारने के लिए कोई भी लकड़ी क्यों न हो, ठीक है। इसलिए पुराना कीड़ों का खाया हुआ वारण्ट काम में लाया गया, उसीके आधार पर मुझे पकड़ कर हवालात में रक्खा गया और अब नया नाटक रचा जा रहा है। मेरे पकड़े जाने के बाद तुरन्त ही वादी का प्रमाण पेश न करना सिद्ध करता है कि मेरे विरुद्ध नितान्त अपर्याप्त प्रमाण उसके पास है। इसलिए इस दशा में मैं अधिक दिन तक अब हवालात में नहीं रक्खा जा सकता।

क़ानून और नियम के निवासीगण सात वर्ष तक मेरी चाह में रहे। भूखे मरते भारतवासियों से निचोड़ा हुआ बहुत सा धन ख़र्च किया गया और सारे संसार

'धर्म और भगवान मृत्यु-शय्या पर'

(२७ वें पृष्ठ का शेषांश)

समयोपरान्त हमारे किसी भी जीवन में नियन्त्रण न रहेगा। हमारा नवयुवक-समाज इस प्रश्न पर ध्यान देगा कि हमारा वास्तविक धर्म वही है, जिसे ग्रहण कर हम अपने देश को स्वतन्त्र कर सकें तथा अपनी सभ्यता की रक्षा कर सकें।

❀ ❀ ❀

में मेरी खोज के लिए पुलीस के एजेण्ट और ख़ुफ़िया वाले भेजे गए। दूसरे पूँजीवादी देशों के पुलीस का सहयोग लिया गया, जान पड़ता है बहुत बड़े ख़र्च से यह सहयोग मिला होगा और यह ख़र्च भारत के श्रमिकों को ही देना पड़ा है, जिससे मुझे एक देश से दूसरे देश में निकाला गया और इस काम के लिए अन्तर्राष्ट्रीय नियमों को भङ्ग किया गया। हिन्दुस्तान के मैजिस्ट्रेट के निकाले हुए वारण्ट की तामील के अभिप्राय से १९२७ की पहली अङ्गरेज़ी मज़दूर सरकार फ़्रान्स की पुलीस तक को तरग़ीब दी कि वह मुझे स्कॉटलैण्ड यार्ड की पुलिस के हवाले कर दे, लेकिन यह तदबीर विफल हुई।

अन्त में हिन्दुस्तान की पुलीस को वह आदमी मिल गया, जिसे वह चाहते थे, परन्तु उनके पास ऐसा सबूत नहीं है जिससे वह उनकी इच्छानुसार भारी सज़ा पा जाय। मुझे दुख है कि मैं इस काम में पुलीस की सहायता नहीं कर सकता। हम कम्यूनिस्ट उतनी मूर्खता से काम नहीं करते, जतनी मूर्खता से पुलीस चाहती है कि हम करें। यद्यपि बोलशेविक हैं, हम पुराने धनपात्रों की नीति का अनुकरण नहीं करते। हम ख़ून से भरी छुरी मुँह में दाब कर अन्धकार में नहीं घुसते। कोई मारात्मक हथियार नहीं है न बोलशेविकों को धन मिलता जैसा कि क़िस्सा गढ़ा गया है, न इस बेहूदा सिद्धान्त का कोई सुबूत है क मैं किसी दूसरे देश का एजेण्ट हूँ जैसा कि बम्बई की पुलीस ने अपनी दुमधारी बुद्धिमत्ता से संसार में प्रसिद्ध कर रक्खा है। न इसी बात का प्रमाण है कि कहीं कोई दूषित षड्यन्त्र है। जो काग़ज़ात मेरे शरीर की तलाशी में पकड़ने के समय मिले हैं, उनसे अगर उनको ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा हो तो कुछ राजनैतिक शिक्षा उन्हें मिल सकती है। लेकिन वह षड्यन्त्र नहीं सिद्ध कर सकते। वह सिवा उसके जो संसार जानता है और जिससे मुझे इन्कार नहीं है और कुछ साबित नहीं कर सकते। वह यह साबित करते हैं कि मैं इस बात का विरोध करता हूँ कि कोई विदेशी शक्ति भारतवासियों के भाग्य का निर्णय करे और यह कि मैं भारत की पूर्ण स्वतन्त्रता का पक्षपाती हूँ, और यह फ़ाल (Goal) प्रत्येक प्राप्य उपायों से प्राप्त करना होगा। इस अभीष्ट-सिद्धि के लिए मैंने वश पड़ते सब कुछ किया है और अगर अवसर मिला तो फिर अपने वश भर कोशिश करूँगा कि हिन्दुस्तान की सताई हुई, लुटी खुँसी जनता ग़रीबों की ही क्रान्तिकारी दल के नेतृत्व में सङ्गठित हो जाय; क्योंकि भारत को औपनिवेशिक ग़ुलामी से छुड़ाने का और कोई उपाय नहीं है।

सरकार के लिए मेरे मत को नापसन्द करना स्वाभाविक है, किन्तु अनिश्चित काल तक मैं हवालात में नहीं रक्खा जा सकता। यह तो क़ैद है, जो मेरे अपराधी सिद्ध होने के पहले ही मुझे भोगाई जा रही है, केवल इसलिए कि मेरे विचारों को सरकार पसन्द नहीं करती और मुझे भयानक जन्तु समझती है। जिस क़ानून को सरकार ने बलात् भारतवासियों के गले बाँधा है उसको स्वयम् पालन करे। उसीके क़ानून के अनुसार पसन्द और नापसन्द कोई प्रमाण नहीं है। अदालत वादी के मत की कल्पना के पीछे नहीं चल सकती। उसे मामले के तत्त्व के अनुसार काम करना होगा। इस दशा में बिना क़ानून की उस पद्धति को बिल्कुल तोड़े; जिसके आधार पर अङ्गरेज़ी राज भारतवासियों के सर पर मढ़ा गया है, मुझे अधिक दिन तक हवालात में नहीं रक्खा जा सकता। मेरे मुचलके की दरख़्वास्त को नामन्ज़ूर करना न्याय का चञ्चलता के साथ गला घोंटना होगा। अगर मेरी मुचलके की दरख़्वास्त नामन्ज़ूर हुई, तो एक बार फिर भारत की ब्रिटिश सरकार चाहे करोड़ द्वीप रही हो, अपनी-अपनी सूरत में संसार के सामने आवेगी, आपापन्थी नौकरशाही कोई क़ानून नहीं समझती, सिवा लुटेरी साम्राज्यवादिता के। इसलिए भारतवासियों का अधिकार एक बार दृढ़ हो जायगा कि वह ऐसी सरकार के विरोध में खड़े हो जायँ और उसे उखाड़ फेंके।

इस मुक़दमे में एक पक्ष मेरा होने के नाते मुझे हवलात में रखने का अर्थ होगा, अपने मुक़दमे की पैरवी से वञ्चित रखना। पहले तो मैं अपने शत्रु के बन्धन में हूँ। ऐसी दशा में कोई आदमी अपनी पैरवी की सुविधा बहुत मुश्किल से पा सकता है। दूसरे अदालत और वादी दोनों को अधिकार उसी शत्रु से मिलते हैं। जो अधिकारी मेरे विरुद्ध मुक़दमा चलाता है, मुझे हवालात में डाल रखता है, वही मेरा न्याय करने बैठता है। सरकारी नौकर कैसे निष्पक्ष हो सकता है, ख़ासकर ऐसे मामले में, जिसमें ख़ुद सरकार एक पक्ष में हो? इससे मेरा मतलब मैजिस्ट्रेट की वैयक्तिक ईमानदारी पर हमला करने से नहीं है। लेकिन उसकी परिस्थिति बड़ी गड़बड़ है। उदाहरण के लिए अब तक मुक़दमा अदालत और वादी की सम्मति से ही स्थगित होते रहे। इसलिए मैं देखता हूँ कि मैं एक अपवित्र मित्रता में बँधे विरोधियों के समक्ष हूँ। इस तरह वादी के हाथ में विवश शिकार की भाँति हूँ, अगर मैं इस हवालात में ही पड़ा रक्खा जाऊँ। वादी मुझे अपने वश में रखना चाहता है। इसलिए मैं न्यायालय से प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझे मुचलके पर छोड़ कर अपनी पक्षपातहीनता प्रदर्शित करे।

कुछ कठिनाइयाँ, जो मुझे झेलनी पड़ी हैं, उनको सूक्ष्म रूप से मैं कहे देता हूँ। मैं अपनी इच्छा के अनुसार या उनकी सुविधा के अनुसार अपने वकीलों से भी नहीं मिलने पाता। दूसरे मिलने वालों के सम्बन्ध में मुझे साधारण हवालातियों से अधिक कोई भी स्वतन्त्रता नहीं है। मिलने वाले मुझसे रविवार को ही मिल सकते हैं। डिफ़ेन्स कमिटी के सदस्यों के साथ मिलने में भी कोई अतिरेचन नहीं किया जाता। अब तक डिफ़ेन्स कमिटी के मन्त्री भी मुझसे नहीं मिल सके। निस्सन्देह मेरे पत्र-व्यवहार भी गुप्त नहीं रक्खे जाते। जो कुछ मैं लिखता हूँ, वह सब सरकारी अफ़सरों को ठिकाने पर पहुँचने के पहले ही मालूम हो जाता है। अक्सर जो मैं लिखता हूँ, ठीक ठिकाने पर पहुँचते ही नहीं। अदालत समय की उदारता नहीं दिखला रही है, इसलिए मैं अपनी कठिनाइयों की सूची को, जो बहुत लम्बी है, कम किए देता हूँ।

मैं अपना वक्तव्य समाप्त करने के पूर्व एक बार फिर कह देना चाहता हूँ कि मैं जान-बूझ कर अपने मुक़दमे की पैरवी से वञ्चित किया जा रहा हूँ। या तो मुझे ऐसी सुविधाएँ मिलें कि मैं बड़े-बड़े राजनैतिक और शासन सङ्गठन सम्बन्धी प्रश्नों को, जो इस मुक़दमे में हैं, लड़ूँ, अपनी परिस्थिति को साफ़-साफ़ पूरी तरह से निर्भ्रान्त रूप से प्रकट कर दूँ अथवा क़ानून का ढकोसला उठा दीजिए, न्याय के निष्पक्ष बर्तने का बहाना दूर कीजिए और मुझे एकदम सज़ा दे दीजिए; क्योंकि मेरा मत भारत के विदेशी शासकों को बुरा लगता है।

❀ ❀ ❀

अंगरेज़ों की जान ख़तरे में !

गत तीन वर्षों में मारे गए और घायल हुए गोरे अफ़सरों की सूची

इङ्गलैण्ड की पार्लामेण्ट के एक सदस्य के प्रश्न के उत्तर में भारत-सचिव मि० वेजवुड बेन ने उन सिविल और मिलेटरी अङ्गरेज़ अफ़सरों की एक सूची पेश की है, जो भारतीय क्रान्तिकारियों द्वारा, गत ता० १७ दिसम्बर सन् १९२८ से लेकर अब तक मारे गए हैं या जिन्हें मार डालने की चेष्टा की गई है; तारीख़वार सूची इस प्रकार है :—

सन् १९२८

दिसम्बर १७—लाहौर में पुलिस अफ़सर जे० पी० सॉण्डर्स की हत्या की गई।

सन् १९२९

एप्रिल ८—दिल्ली—व्यवस्थापिका सभा में बम फेंका गया।

एप्रिल २२—सीमा-प्रान्त—एक सिपाही ने कप्तान डबल्यू० सी० एस० हेक्राफ़्ट को गोली मार कर ठण्ढा कर दिया।

जून १४—वज़ीरिस्तान—रज़माक जाते हुए रास्ते में कप्तान एम० स्टीफ़ेन को गोली से मारा गया।

दिसम्बर २३—दिल्ली—वायसरॉय की ट्रेन को सुरङ्ग से उड़ा देने की चेष्टा की गई।

सन् १९३०

फ़रवरी १—लाहौर—अतिरिक्त ज़िला मैजिस्ट्रेट मिस्टर लेविस को मारने की चेष्टा की गई। मिस्टर लेविस के एक दोस्त के ऊपर भी गोली का वार हुआ, जिसे मि० लेविस ने अपनी मोटर मँगनी दी थी।

फ़रवरी २—लोटा लाई—गोली चलाते हुए सारजेण्ट आइन्स को जान से मारा गया।

फ़रवरी २४-२५—लण्डीकोटल—ख़ैबर के एसिस्टेण्ट गेरीजन एञ्जिनियर लेफ़्टीनेण्ट जी० ई० एच० हॉकोज़ को बदमाशों ने मार डाला।

एप्रिल १८-१९—चटगाँव—बङ्गाल के आतङ्क उत्पन्नकारी दल ने रेलवे और पुलीस के अस्त्रागार पर धावा किया, इसमें दो यूरोपियन जान से मारे गए।

मई २०—मुलतान—पुलीस सुपरिण्टेण्डेण्ट को बम से हलकी सी चोट आई।

जून ६—लायलपुर—चिनाब क्लब के अहाते में बम फेंका गया।

अगस्त—झाँसी कमिश्नर पर आक्रमण की चेष्टा हुई। कमिश्नर के बँगले में एक आदमी बम और पिस्तौल लिए पकड़ा गया।

अगस्त २५—कलकत्ता—सर सी० टेगार्ट पुलिस कमिश्नर पर बम फेंके गए।

अगस्त २८—ढाका—बङ्गाल पुलिस इन्स्पेक्टर-जनरल मिस्टर ई० आई० लोमैन मारे गए और मिस्टर ई० हाडसन सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस को गहरी चोट आई।

अक्टूबर १५—लाहौर—पुलिस इन्स्पेक्टर मिस्टर स्मिथ को बध करने की चेष्टा की गई।

अक्टूबर १८—बम्बई—आधी रात के समय लेमिङ्गटन रोड पुलिस स्टेशन में घुसने के समय मिस्टर टेलर और उनकी पत्नी पर गोली चलाई गई। दोनों को हलकी चोटें आईं।

अक्टूबर २८—बर्मा—जिस मेल ट्रेन में बर्मा सरकार के ख़ास-ख़ास सदस्य बैठे थे उसको ध्वंस करने की चेष्टा की गई।

अक्टूबर २९—कलकत्ता—दक्खिन कलकत्ता के यूरोपियन एसिस्टेण्ट पुलिस कमिश्नर के मकान में बम फूटा।

दिसम्बर ४—हैदराबाद—पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट के मकान के अहाते में बम फेंका गया।

दिसम्बर ८—कलकत्ता—राइटर बिल्डिङ्गस में लेफ़्टीनेण्ट करनल एन० एस० सिम्पसन, आई० एम० एस० मारे गए और मिस्टर जे० डबल्यू० नेलसन आई० सी० एस० ज़ख़्मी हुए।

दिसम्बर ६—लाहौर—परेड पर कप्तान पी० डबल्यू० जे० मैक्नीनेगहेन गोली से मारे गए।

दिसम्बर २३—लाहौर—विश्वविद्यालय से लौटते हुए पञ्जाब के गवर्नर सर जी० डी० मोन्टमोरेन्सी पर गोली चलाई गई और वे घायल हुए।

दिसम्बर २४—बेवा (बर्मा)—मिस्टर एच० बी० डबल्यू० फ़ील्ड क़ार्की फ़ारेस्ट एञ्जीनियर मारे गए।

सन् १९३१

१८ फ़रवरी—चारसद्दा—एसिस्टेण्ट कमिश्नर कप्तान एच० ए० बार्निस को मार डालने की चेष्टा की गई।

मार्च १७—कृष्णनगर—सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस के मकान पर बम फेंका गया।

एप्रिल ५-६—चारसद्दा—कप्तान एच० ए० बार्निस की जान पर पुनः आक्रमण।

एप्रिल ८—मिदनापुर—डि० मैजिस्ट्रेट मिस्टर जे० पेड्डी को गोली मारी गई, दूसरे दिन वह मर गए।

मई २२—कानपुर—एक मामूली चिट्ठी का बम, जो जल उठने वाले चूर्ण और काँच के टुकड़ों का बना था, सु० पु० के पास भेजा गया।

जुलाई २२—पूना—फ़रगुसन कॉलेज के निरीक्षण के समय बम्बई के स्थानापन्न गवर्नर सर ई० हॉटसन को गोली से मारने की चेष्टा की गई।

जुलाई २३—मध्य-प्रदेश—पञ्जाब को जाती हुई डाक गाड़ी में लेफ़० हेक्स्ट और लेफ़० शीहेन को घायल किया गया। बाद में हेक्स्ट मर गया।

जुलाई २७—अलीपुर—डि० और सेशन जज मिस्टर आर० आर० गार्लिक, आई० सी० एस० को मार दिया गया।

अगस्त २१—टेंगाइल (बङ्गाल)—ढाका के कमिश्नर मिस्टर अलेक्ज़ेण्डर केसिल्स घायल किए गए।

"अत्याचारी का उपयुक्त दण्ड गोली से मार देना है।"

दिल्ली षड्यन्त्र केस में मुख़बिर का सनसनीपूर्ण बयान

ता ४ सितम्बर को दिल्ली षड्यन्त्र केस की कार्रवाई स्पेशल ट्रिब्यूनल के सामने फिर पेश हुई।

अभियुक्त-पक्ष के सीनियर वकील डॉ० किचलू की जिरह के उत्तर में मुख़बिर कैलाशपति ने कहा कि मैं हिन्दू हूँ और मेरा विश्वास हिन्दू-धर्म में उस समय भी था जब मैं दल में था। परन्तु मैं यह नहीं जानता कि हिन्दू-धर्म या हिन्दू-शास्त्र के अनुसार एक विवाहित स्त्री का एक अपरिचित अविवाहित पुरुष के साथ एक ही कमरे में रात-दिन रहना उचित है या नहीं, क्योंकि मैंने इस विषय का कोई विशेष अध्ययन नहीं किया। मैं चन्द्रावती को प्यार करता हूँ, यही कारण है कि वह मेरे साथ रहती थी। मैंने कभी किसी स्त्री से विवाह करने की दृष्टि से प्रेम नहीं किया। मैंने केवल प्रेम के लिए प्रेम किया। मैं जानता था कि चन्द्रावती दल की सदस्य नहीं है। मुझे यह नहीं मालूम कि चन्द्रावती को यह मालूम था कि नहीं कि मैं दल का सदस्य था। दल को भी यह नहीं मालूम था कि वह मुझसे प्रेम करती है। मैंने उससे दल के विषय में कभी कोई बातचीत नहीं की। हम लोग अपनी व्यक्तिगत बातें और भारतीय राजनीति की बातें किया करते थे, परन्तु मुझे बातचीत का कोई विशेष विषय याद नहीं है। दल के कार्य से बाहर जाने पर मैंने चन्द्रावती को कभी प्रेम-पत्र नहीं लिखा।

मैं उसको भेंट करने के लिए कभी कोई चीज़ बाहर से नहीं लाया था। मैं अजमेर से सिल्क की साड़ी नहीं लाया था। मैं उसे जीजी कहा करता था। जीजी का अर्थ बहिन है। वह मुझे बाबू कहा करती थी। मुझे याद नहीं है कि मैंने उसे कभी "मानिक" कहा था। मैंने उसे कभी कमला नहीं कहा था। मैंने उसे कभी चन्द्रावती रानी या कमलारानी नहीं कहा। मैं सुशीला नाम की किसी स्त्री को नहीं जानता। चन्द्रावती मेरे, सुशीला नाम की किसी स्त्री के साथ सम्बन्ध होने के कारण कभी ईर्षा नहीं करती थी। मैंने चन्द्रावती को छोड़ कर और कभी किसी से प्रेम नहीं किया।

इसके बाद मुख़बिर कैलाशपति के बयान से कुछ अंश पढ़ कर सुनाए गए, जिसमें उसने व्यक्तिगत आतङ्क के कार्यों का विरोध किया था। मुख़बिर से कुछ शब्दों और वाक्यों को स्पष्ट करने के लिए कहा गया। मुख़बिर ने कहा कि "अत्याचारियों" से मेरा तात्पर्य उन लोगों से है जो जनता पर अत्याचार करते हैं, ऐसे अत्याचार करने वालों में सरकारी अफ़सर भी हो सकते हैं। उनके लिए उपयुक्त दण्ड गोली से मार देना है। मुख़बिर ने कहा कि मैं अत्यन्त घृणित अत्याचारियों को दण्ड देकर और बिलकुल उचित और सच्चा आतङ्क उत्पन्न करके जनता में जागृति और क्रान्तकारी भाव फैलाने में अब भी विश्वास रखता हूँ।

अदालत में प्रेम-पत्र

जलपान के बाद अदालत के फिर बैठने पर अभियुक्त-पक्ष के वकील ने मुख़बिर कैलाशपति को उसी के लिखे प्रेम-पत्र को पढ़ने के लिए दिया। मुख़बिर ने कहा कि यह पत्र मेरा नहीं है।

मालिक बनाम "कीपर" का मामला

निकट-सम्बन्धी की मृत्यु होने पर भी पेशी नहीं रुक सकती !!

क्या प्रान्तीय सरकार के पास इस नृशंसता का कोई उत्तर है ??

गत शनिवार ५ सितम्बर को प्रातःकाल दो बजे 'चाँद' तथा 'भविष्य' के अध्यक्ष श्री० सहगल जी की भावज ('चाँद' तथा 'भविष्य' के प्रधान व्यवस्थापक और श्री० सहगल जी के छोटे भाई श्री० नन्दगोपालसिंह सहगल की धर्मपत्नी) का स्वर्गवास हो गया। सहगल जी के भाई धर्मपत्नी के इस आकस्मिक वियोग को सहन नहीं कर सके और उन्हें बेहोशी का दौरा होने लगा। जब कि लाश अस्पताल से संस्था में लाई गई, उस समय उनकी हालत इतनी ख़राब थी कि वे अन्तिम बार धर्मपत्नी के शव तक के दर्शन नहीं कर सके। ऐसी हालत में अपनी धर्मपत्नी का अन्तिम संस्कार करना उनके लिए एक बार ही असम्भव था। डॉक्टरों की राय से श्री० सहगल जी को ही अन्तिम संस्कार करना पड़ा। अस्तु।

पाठकों को विदित है कि कम से कम १३ दिन तक 'कर्ता' घर से बाहर नहीं निकलता और उसे बहुत सी धार्मिक रस्मों एवं कार्यों का सम्पादन करना पड़ता है। शोक एवं उद्विग्नता आदि पीड़ाएँ कल्पना की विषय हैं और पाठक सहज ही इसका अनुमान लगा सकते हैं। चूँकि 'प्रेस-एक्ट' वाले मामले की पेशी ७वीं सितम्बर को होने वाली थी और चूँकि सहगल जी दाह-कर्म करने के कारण तथा स्वाभाविक क्लेश होने के कारण अदालत में नहीं जा सकते थे इसलिए उन्होंने ख़ाँ साहब रहमान बख़्श क़ादरी के पास इस आशय का एक पत्र लिखा कि "चूँकि मैंने दाह-कर्म किया है, इसलिए क्रिया तक (अर्थात् दो सप्ताह तक) मैं मामले में भाग नहीं ले सकता। आपकी वास्तव में बड़ी दया होगी, यदि दो सप्ताह तक आप मामले की पेशी स्थगित कर दें।" पत्र की नक़ल इस प्रकार है :—

Chand Office, Allahabad
7th September, 1931

Sir,

I am very sorry to inform you that my brother's wife, who has been ailing in the Dufferin Hospital of long, expired at 2 A. M. on Saturday and due to the serious illness of my brother I had to perform the last rites and as such I cannot take part in anything for 13 days to come. Mr. Mukerjee has also gone to his home with your permission and even if he was here, I was not in a fit state of mind to instruct him or personally take part in the proceedings.

It will therefore be extremely good of you to postpone further hearings of the case for at least 2 weeks and kindly inform me of the next date at your convenience.

Very truly your's,
Sd. R. Saigal.
7-9-31.

Khan Sahib,
Maulvi Rahman Bux Qadri,
Magistrate 1st Class,
Allahabad.

संस्था से ठीक १० बजे चपरासी यह पत्र लेकर भेजा गया था, जो उत्तर लेकर वापस आया। देरी का कारण पूछने पर उसने बतलाया, कि २-३ बार पत्र लिख-लिख कर फाड़ डाले गए, इसीलिए उसे देरी हुई। पत्र का आशय यह है कि "मुक़द्दमा दो सप्ताह तक कदापि स्थगित नहीं किया जा सकता। १० सितम्बर को मामले की पेशी होगी और उस दिन आपको अवश्य आना पड़ेगा। दूसरी पेशी पूर्व निर्णय के अनुसार १४ तारीख़ को अवश्य होगी और मैं इसमें कोई तरमीम नहीं कर सकता। कृपया आठ आने का टिकट भेज दीजिए, ताकि आपके इस पत्र पर लगाया जा सके, या १० वीं तारीख़ को अपने साथ लेते आइएगा।" पत्र की नक़ल इस प्रकार है :—

Kutchery, Allahabad
7th Sept., 1931

Dear Sir,

Your letter of to-day. It is impossible for me to adjourn the case for 2 weeks. The witnesses will come to-day and it is difficult to postpone cases. However, I am postponing your case to-day and the case wil be taken up on 10/9/1931 (Court time is 11 a. m.) and you must appear on 10/9/1931 at 1 p. m. The witnesses called for to-day with your consent and the approval of your counsel will be examined on 10/9/1931 and the next date will be 14th as already fixed with the consent of your counsel, no change is possible. Please note this. I regret I cannot make any further alterations.

Your's truly,
Sd. R. B. Qadri.

To
R. Saigal, Esq.,

Please send one -/8/- Court-fee stamp for this application or bring it on 10th.

Sd. R. B. Qadri

मैजिस्ट्रेट साहब की इस आज्ञा के विरुद्ध श्री० सहगल जी ने स्थानीय सेशन कोर्ट में अपील की थी, किन्तु वही आज्ञा बहाल रही। अन्त में हाईकोर्ट का द्वार खटखटाया, परन्तु वहाँ भी कोई सुनवाई न हुई। और अन्त में मैजिस्ट्रेट साहब की आज्ञा ही बहाल रक्खी गई !

❀ ❀ ❀

महापुरुषों के विचार

[श्री० जे० पी० गुप्ता]

"पशुबल से डरने की ज़रूरत नहीं। बेत की चोट की परवा मत करो। यदि तुम हँसते-हँसते जेल चले जाओगे, सूली पर चढ़ जाओगे, मौत को गले लगाओगे तो मरोगे नहीं, वरन् अमर हो जाओगे और संसार के शहीदों में तुम्हारी गिनती अनन्त काल तक होती रहेगी।"

—सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी

"जितनी बार हमारा पतन होगा, उतनी ही बार उठने में हमारा गौरव है।"

—महात्मा गाँधी

"ग़रीबों की पुकार सुन कर जो मनुष्य अपने कानों को बन्द कर लेता है, निश्चय जानो कि वह भी एक दिन उसी तरह चिल्लाएगा, चीख़ेगा, मदद के लिए पुकार मचाएगा, पर कोई उसकी एक न सुनेगा।"

—ओल्ड टैस्टामेण्ट

"आत्मिक पराजय का मूल्य बड़ी से बड़ी सांसारिक विजय भी नहीं चुका सकती।"

—टेरेन्स मैक्स्वनी

दास देश में दोष फलते और फूलते हैं। जो आदमी यह बात भली भाँति हृदयङ्गम कर लेता है उसके लिए इसके विरुद्ध लड़ने के सिवा और चारा ही नहीं रहता। दासता के साथ हम सन्धि नहीं कर सकते।

—टेरेन्स मैक्स्वनी

❀

क्या ब्रिटेन दिवालिया होने जा रहा है ?

[कलकत्ता के 'लिबर्टी' नामक अख़बार में, डॉक्टर तारकनाथ दास पी०एच० डी० ने ब्रिटेन की वर्तमान आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध में एक गवेषणापूर्ण लेख लिखा है। 'भविष्य' के पाठकों के मनोरञ्जनार्थ उसका सारांश नीचे दिया जाता है।

स० 'भविष्य']

अङ्गरेज़ राजनीतिज्ञ और व्यापारी लोग, जो भारत पर सदा के लिए अपना अधिकार रखना चाहते हैं, और इच्छा रखते हैं कि भारत की आर्थिक शक्ति, उसकी सोने की बचत और बाज़ार वग़ैरह ब्रिटेन के हित के काम में आता रहे, वह लगातार भारतवासियों के कान में यही फूँका करते हैं कि भारत को आर्थिक रक्षाओं की ज़रूरत है। ब्रिटेन भारत की अपेक्षा इसकी अधिक अच्छी तरह रक्षा कर सकता है। भारत के स्वार्थी राजनीतिज्ञ देश के शासन की अपने में योग्यता व भरोसा नहीं देखते, इसलिए ब्रिटेन की हाँ में हाँ मिला देते हैं।

भारत के राजनीतिज्ञों को उचित है कि अपने देश की साम्पत्तिक समस्या पर ब्रिटेन को पूरा अधिकार देने के पहले देख लें कि ब्रिटेन की आर्थिक स्थिति कैसी है।

अमरीका, फ़ान्स, हॉलैण्ड और बेलजियम आदि स्थानों में भी यहाँ तक कि जर्मनी में भी, यह प्रश्न खड़ा हो गया है कि 'क्या ब्रिटेन दिवालिया होने जा रहा है ?'

ब्रिटेन की औद्योगिक दशा खोखली हो रही है। जिन्हें सन्देह हो, वे उसकी बेकारी, सम्पत्ति और उद्योग-धन्धे सम्बन्धी तीनों रिपोर्टें पढ़ें और उसके राष्ट्रीय ख़र्च का भी विवरण देखें। इनसे उन ख़राबियों का पता चलेगा, जिन्होंने ब्रिटेन को जकड़ रक्खा है। इस वर्ष ब्रिटेन के बजट में ९६ अरब पाउण्ड (९६०००००००००) का घाटा है। पिछले कतिपय महीनों में लन्दन की अन्तर्राष्ट्रीय बैङ्कों ने मिस्टर स्नाउडेन को सचेत किया है कि अगर ब्रिटिश सरकार ने अपनी बजट की निर्बलता दूर न की, तो संसार में उसकी साख निश्चय कम हो जायगी।

ब्रिटेन अपने को सँभाल नहीं सकता, जब तक कि, विदेशी धन उसकी बैङ्कों में न जमा होता रहे और बाहरी धन उस समय तक नहीं जमा हो सकता जब तक कि पूरा विश्वास न हो।

ब्रिटेन का बहुत सा धन विदेशों में लगा हुआ है, फिर भी वह डगमगा रहा है। एक साहूकार इस सम्बन्ध में कहता है :—

हम अङ्गरेज़ लोग ऋण लेते कम थे और देते अधिक थे और विश्वास करते थे कि अन्तर्राष्ट्रीय साम्पत्तिक परिस्थिति हमारी दुर्जेय है। अब हाल यह है कि हमारे ऊपर थाती के रूप में विदेश का ऋण बहुत है—अनुमान बीस-पचीस करोड़ पाउण्ड होगा—और पास में माल कुछ नहीं, जिससे जल्दी इनका भुगतान हो सके। इसी परिस्थिति को मिटाने के लिए हाल में अमेरिका और फ़ान्स से पाँच करोड़ पाउण्ड इङ्गलैण्ड ने उधार भी लिया है। इतने पर भी इङ्गलैण्ड की साम्पत्तिक दशा दृढ़ आधार पर नहीं है

लन्दन का 'ऑबज़र्वर' पत्र ९ अगस्त के अङ्क में इस सम्पर्क में लिखता है :—

जो सन्देह ब्रिटेन की साम्पत्तिक दशा पर पैदा हुए, वह एकदम नहीं पैदा हो गए। इसके कारण एक अर्से से धीरे-धीरे घनीभूत होते रहे हैं। जो चोटें ब्रिटिश अर्थ और उद्योग पर धीरे-धीरे पड़ती रही हैं उनसे क्या पाउण्ड बच सकता है। कहीं पाउण्ड का भी वही हाल न हो जो कभी जर्मन 'मार्क्स' फ़ान्सीसी 'फ्रेङ्क' और इटली के लिए हो चुका है

जब इङ्गलैण्ड दिवाले की ओर अग्रसर हो रहा था, महात्मा गाँधी ने गवर्नमेण्ट के साथ समझौता कर लिया, इससे इङ्गलैण्ड को जो मदद मिली है, हमारे देश के राजनैतिक नेता उसका अन्दाज़ा नहीं लगा सकते। हिन्दुस्तान के बहिष्कार आन्दोलन से इङ्गलैण्ड की साख में और भी बट्टा लगा चला जा रहा था, क्योंकि उसकी कारीगरी को धक्का पहुँचता था और बेकारों की संख्या ज़ोर से बढ़ रही थी। अगर करबन्दी और क़ानून की भद्र अवज्ञा का आन्दोलन चलता रहता तो इङ्गलैण्ड की दशा और भी बिगड़ जाती और दिवाला पास आ जाता। पिछले महासमर में भी अहिंसा के व्रती होते हुए महात्मा जी ने इङ्गलैण्ड को सेना भर्ती करके दी और इस बार इङ्गलैण्ड के निकलते हुए दिवाले के रोकने में मदद की और उसकी इज़्ज़त रक्खी। क्या इसका प्रतिफल भारत को यही मिलेगा कि भारत पर आर्थिक संरक्षण का भार लादा जाय, जिससे भारत के ख़ज़ाने की कुञ्जी इङ्गलैण्ड के हाथ में रहे। भारत को पूर्ण आर्थिक स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए।

❀ ❀ ❀

अख़बारों की स्वाधीनता पर बज्र-प्रहार

नए प्रेस-सम्बन्धी क़ानून का संक्षिप्त ब्योरा

जो नया क़ानून प्रेस और सम्वाद-पत्रों को कुचलने के लिए व्यवस्थापिका परिषद् के गर्भ से इसी मास के अन्त तक उत्पन्न होने वाला है, उसका हम समास में पाठकों को परिचय करा देना आवश्यक समझते हैं। जो व्यक्ति प्रेस-ऐक्ट की दफ़ा ४ के अनुसार प्रेस का डिक्लेरेशन देगा, उसे डिक्लेरेशन देने के मैजिस्ट्रेट के यहाँ मैजिस्ट्रेट की आज्ञानुसार ज़मानत दाख़िल करनी होगी। यह न ५००) से कम होगी, न २०००) से अधिक। यदि मैजिस्ट्रेट चाहेगा तो नक़द या प्रामेसरी नोटों में लेगा। मैजिस्ट्रेट जिसे चाहेगा, ज़मानत से बरी कर सकेगा। अगर किसी प्रेस चलाने वाले से पहले ज़मानत ली जा चुकी होगी, तो उससे इस दफ़ा में ५०००) तक ज़मानत ली जा सकेगी।

यदि मैजिस्ट्रेट किसी को बेज़मानत डिक्लेरेशन दे देगा, तो जब वह उचित समझेगा, अपना हुक्म रद्द करके ऊपर की किसी धारा के अनुसार ज़मानत ले सकेगा। जो प्रेस इस क़ानून के पास होने के पहले से चल रहे हैं, उनमें से किसी की बाबत अगर प्रान्तीय सरकार को यह मालूम हो कि वह इस क़ानून के विरुद्ध काम करता है, तो उसे अधिकार होगा कि वह ५००) से ५०००) तक की ज़मानत मैजिस्ट्रेसी में जमा करने की आज्ञा निकाले।

ज़मानत ज़ब्त कब होगी ?

अगर प्रान्तिक सरकार को मालूम हो कि कोई छापाख़ाना, जिससे ज़मानत जमा कराई जा चुकी है, किसी ऐसे सम्बाद-पत्र, पुस्तक या दूसरे काग़ज़ के छापने का काम करता है, जिसमें कोई ऐसे शब्द, चिह्न या चित्र आदि रहते हैं, जिनसे बहुत सम्भव है, या जिनका झुकाव प्रत्यक्ष या परोक्ष रीति से ऐसा है जिनसे प्राणघात करने का प्रोत्साहन होता है, या उत्तेजना मिलती हो या बल-प्रयोग करने की प्रकृति उत्पन्न होती हो अथवा किसी के किए हुए ऐसे कामों को प्रोत्साहित किया गया हो, या साधुवाद दिया गया हो, चाहे बात वास्तविक हो या कल्पित, कहानी द्वारा, फिर चाहे इन बातों का सङ्केत किया गया हो, राय दी गई हो, इशारा या सूचना दी गई हो, हवाला दिया गया हो, अलङ्कार आदि द्वारा दर्शाया गया हो, तो सरकार ऐसे प्रेस के चलाने वाले (Keeper) को लिखित सूचना देगी, जिसमें दूषित वाक्यों, इशारों या चित्रों आदि का जो भी हो विवरण होगा, और कह देगी कि तुम्हारी ज़मानत जो जमा थी वह सब की सब या उसका कुछ अंश ज़ब्त किया गया और उस सम्बाद-पत्र, पुस्तक या काग़ज़ की सारी प्रतियाँ, जिनमें उक्त दूषित विषय छपा था, ब्रिटिश भारत में जहाँ कहीं भी मिलें, ज़ब्त की गईं। इस नोटिस के दस दिन बाद पहला डिक्लेरेशन रद्द समझा जायगा।

दूसरी बार जो फिर डिक्लेरेशन दिया जायगा तो मैजिस्ट्रेट को अधिकार होगा कि कम से कम १,०००) से लेकर १,००००) की ज़मानत लेकर नया डिक्लेरेशन ले। अगर सब ज़मानत ज़ब्त न हुई होगी तो मैजिस्ट्रेट की माँगी हुई ज़मानत में से बची रक़म कम करके बाक़ी दाख़िल करनी होगी।

दूसरी बार ज़मानत जमा कर देने के बाद अगर सरकार की समझ में उसी प्रेस ने फिर वही क़सूर किया तो उसे पहले की भाँति नोटिस के द्वारा अधिकार होगा कि वह (१) सारी ज़मानत या उसका कुछ अंश ज़ब्त कर ले। (२) छापाख़ाना ज़ब्त कर ले। (३) छपा हुआ आपत्ति-जनक सामान ज़ब्त कर ले।

प्रकाशक की ज़िम्मेदारी

प्रत्येक सम्वाद-पत्र का प्रकाशक, जो प्रेस-ऐक्ट १८६७ की दफ़ा ५ के अनुसार डिक्लेरेशन देता है, उसे भी पहिली बार प्रेस वाले के अनुसार ५००) से २,०००) तक की ज़मानत मैजिस्ट्रेट की मर्ज़ी के अनुसार देनी होगी, यदि मैजिस्ट्रेट चाहेगा तो ज़मानत से प्रार्थी को मुक्त कर देगा।

दूसरी दफ़ा भी प्रेस के डिक्लेरेशन देने वालों की भाँति ही है, ५००) से ५०००) तक मैजिस्ट्रेट ज़मानत ले सकेगा—अगर पहले कभी ज़मानत ली जा चुकी होगी।

जिससे ज़मानत लेना मैजिस्ट्रेट ने ज़रूरी न समझा होगा और बाद में ज़रूरी समझेगा, उससे ज़मानत ले सकेगा।

इस क़ानून के प्रचलित होने के पहले जो सम्वाद पत्र चल रहे हैं, उनसे भी सरकार ज़रूरी समझेगी तो ५००) से ५०००) तक ज़मानत ले सकेगी।

अगर सरकार की समझ में किसी सम्बाद-पत्र ने, जिससे ज़मानत ली गई है, कुछ ऐसे शब्द, चिन्ह या चित्र आदि दिए हैं, जो सकार की समझ में वैसे हैं

[शेष मैटर ३५वें पृष्ठ के तीसरे कालम के नीचे देखिए]

लम्बी दाढ़ी

दाढ़ी वालों को भी प्यारी है
बच्चों को भी !
बड़ी मासूम, बड़ी नेक—
! है लम्बी दाढ़ी !!
अच्छी बातें भी बताती है,
हँसाती भी है !
लाख दो लाख में, बस एक—
है लम्बी दाढ़ी !!

ऊपर की चार पंक्तियों में ही पुस्तक का संक्षिप्त विवरण "गागर में सागर" की भाँति समा गया है। फिर पुस्तक कुछ नई नहीं है, अब तक इसके तीन संस्करण हो चुके हैं और ५,००० प्रतियाँ हाथोंहाथ बिक चुकी हैं। पुस्तक में तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर के अलावा पूरे एक दर्जन ऐसे सुन्दर चित्र दिए गए हैं कि एक बार देखते ही हँसते-हँसते पढ़ने वालों के बत्तीसों दाँत मुँह के बाहर निकलने का प्रयत्न करते हैं। मूल्य केवल २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र !!

चुहल

पुस्तक क्या है, मनोरञ्जन के लिए अपूर्व सामग्री है। केवल एक चुटकुला पढ़ लीजिए, हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जायँगे। काम की थकावट से जब कभी जी ऊब जाय, उस समय केवल पाँच मिनट के लिए इस पुस्तक को उठा लीजिए, सारी उदासीनता काफ़ूर हो जायगी। इसमें इसी प्रकार के उत्तमोत्तम, हास्य-रसपूर्ण चुटकुलों का संग्रह किया गया है। कोई चुटकुला ऐसा नहीं है जिसे पढ़ कर आपके दाँत बाहर न निकल आवें और आप खिलखिला कर हँस न पड़ें। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल लागत मात्र १); स्थायी ग्राहकों के ॥।) केवल थोड़ी सी प्रतियाँ और शेष हैं, शीघ्रता कीजिए, नहीं तो दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।

'चाँद' कार्यालय की अनमोल पुस्तकें

निर्वासिता वह मौलिक उपन्यास है, जिसकी चोट से क्षीणकाय भारतीय समाज एक बार ही तिलमिला उठेगा। अन्नपूर्णा का नैराश्यपूर्ण जीवन-वृत्तान्त पढ़ कर अधिकांश भारतीय महिलाएँ आँसू बहावेंगी। कौशल-किशोर का चरित्र पढ़ कर समाज-सेवियों की छातियाँ फूल उठेंगी। उपन्यास घटना-प्रधान नहीं, चरित्र-चित्रण-प्रधान है। निर्वासिता उपन्यास नहीं, हिन्दू-समाज के वक्षस्थल पर दहकती हुई चिता है, जिसके एक-एक स्फुलिङ्ग में जादू का असर है। इस उपन्यास को पढ़ कर पाठकों को अपनी परिस्थिति पर घण्टों विचार करना होगा, भेड़-बकरियों के समान समझी जाने वाली करोड़ों अभागिनी स्त्रियों के प्रति करुणा का स्रोत बहाना होगा, आँखों के मोती बिखेरने होंगे और समाज में प्रचलित कुरीतियों के विरुद्ध क्रान्ति का झण्डा बुलन्द करना होगा; यही इस उपन्यास का संक्षिप्त परिचय है। भाषा अत्यन्त सरल, छपाई-सफ़ाई दर्शनीय, सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३) रु० ; स्थायी ग्राहकों से २।)

यह वह मालिका नहीं, जिसके फूल मुरझा जायँगे; इसके फूलों की एक-एक पङ्खुरी में सौन्दर्य है, सौरभ है, मधु है, मदिरा है। आपकी आँखें तृप्त हो जायँगी। इस संग्रह की प्रत्येक कहानी करुण-रस की उमड़ती हुई धारा है।

इन कहानियों में आप देखेंगे मनुष्यता का महत्त्व, प्रेम की महिमा, करुणा का प्रभाव, त्याग का सौन्दर्य तथा वासना का नृत्य, मनुष्य के नाना प्रकार के पाप, उसकी घृणा, क्रोध, द्वेष आदि भावनाओं का सजीव चित्रण ! पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, मधुर तथा मुहावरेदार है। शीघ्रता कीजिए, अन्यथा दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी। सजिल्द, तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से सुशोभित; मूल्य केवल ४); स्थायी ग्राहकों से ३)

पुस्तक का नाम ही उसका परिचय दे रहा है। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाले प्रत्येक नवयुवक को इसकी एक प्रति अवश्य रखनी चाहिए। इसमें काम-विज्ञान सम्बन्धी प्रत्येक बातों का वर्णन बहुत ही विस्तृत रूप से किया गया है। नाना प्रकार के इन्द्रिय-रोगों की व्याख्या तथा उनसे त्राण पाने के उपाय लिखे गए हैं। हज़ारों पति-पत्नी, जो कि सन्तान के लिए लालायित रहते थे तथा अपना सर्वस्व लुटा चुके थे, आज सन्तान-सुख भोग रहे हैं।

जो लोग झूठे कोकशास्त्रों से धोखा उठा चुके हैं, प्रस्तुत पुस्तक देख कर उनकी आँखें खुल जायँगी। काम-विज्ञान जैसे गहन विषय पर हिन्दी में यह पहिली पुस्तक है, जो इतनी छान-बीन के साथ लिखी गई है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार; सचित्र एवं सजिल्द तथा तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य केवल ४); तीसरा संस्करण अभी-अभी तैयार हुआ है।

इस पुस्तक में बिछुड़े हुए दो हृदयों—पति-पत्नी—के अन्तर्द्वन्द्व का ऐसा सजीव चित्रण है कि पाठक एक बार इसके कुछ ही पन्ने पढ़ कर करुणा, कुतूहल और विस्मय के भावों में ऐसे ओत-प्रोत हो जायँगे कि फिर क्या मजाल कि इसका अन्तिम पृष्ठ तक पढ़े बिना कहीं किसी पत्ते की खड़खड़ाहट तक सुन सकें !

अशिक्षित पिता की अदूरदर्शिता, पुत्र की मौन-व्यथा, प्रथम पत्नी की समाज-सेवा, उसकी निराश रातें, पति का प्रथम पत्नी के लिए तड़पना और द्वितीय पत्नी को आघात न पहुँचाते हुए उसे सन्तुष्ट रखने को सचेष्ट रहना, अन्त में घटनाओं के जाल में तीनों का एकत्रित होना और द्वितीय पत्नी के द्वारा, उसके अन्तकाल के समय, प्रथम पत्नी का प्रकट होना—ये सब दृश्य ऐसे मनमोहक हैं, मानो लेखक ने जादू की क़लम से लिखे हों !! शीघ्रता कीजिए, थोड़ी ही प्रतियाँ शेष हैं ! छपाई-सफ़ाई दर्शनीय; मूल्य केवल २) स्थायी ग्राहकों से १॥)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय,

चन्द्रलोक, इलाहाबाद

अद्भुत पर्वत

[श्री० जयकरण पाण्डेय]

संसार के सर्वोच्च पर्वत-शिखरों में सबसे ऊँचा हिमालय का गौरीशङ्कर शिखर या 'मौण्ट एवेरिस्ट' है, जिसकी ऊँचाई समुद्र-तट से २९,००२ फ़ीट है। संसार के बहुत से अगम्य स्थानों के अन्वेषण करने का गौरव यूरोप-निवासियों को प्राप्त है। फलतः इस शिखर को भी ढूँढ़ने तथा इसकी ऊँचाई आदि ज्ञात करने का श्रेय उन्हीं यूरोप-निवासियों को है। यह पर्वत-शिखर अन्य शिखरों से इस प्रकार घिरा हुआ है कि यद्यपि यह समुद्र-तट से ६ मील ऊँचा है, तथापि भारतवर्ष के केवल दो या तीन स्थानों से ही देखा जा सकता है।

यद्यपि 'एवेरिस्ट' भारतवर्ष से देखा जा सकता था; किन्तु यह तिब्बत और नैपाल की सीमा पर स्थित है और आज से थोड़े दिन पहले तक विदेशी जातियों का इन देशों में आना निषिद्ध था, इसलिए 'एवेरिस्ट' के अधिक समीप पहुँच कर इसके समीपवर्ती स्थानों का पता लगाना असम्भव था।

सन् १९२१ ईस्वी में आङ्गल देशीय पहाड़ी मनुष्यों को 'एवेरिस्ट' पर्वत के समीप जाकर अन्वेषण करने तथा उसकी चोटी पर पहुँच कर नाप करने की आज्ञा दी गई। इस यात्रा में बहुत सी अद्भुत बातें सिद्ध हुईं तथा सहस्रों मील सर्वथा अज्ञात भूतल का अन्वेषण हुआ। अन्वेषकों को भिन्न-भिन्न प्रकार के जलवायु का सामना करना पड़ा; घाटियों में उष्ण देशीय जङ्गल तथा बालुकामय रेगिस्तान थे। ऊँचाई के अर्द्धभाग का जलवायु ग्रेट-ब्रिटेन के सदृश दिखलाई पड़ा; पर्वत के ऊपरी भाग के समीप सदैव बर्फ़ जमी रहती थी, जहाँ महान ग्लेशियर शिखरों के बीच भीषण गति से प्रवाहित हो रहे थे तथा हिममय आँधी सदा बहती रहती थी।

अन्वेषक शिखर से एक मील दूर ही थे कि उन्हें शीत की अधिकता के कारण लौटना पड़ा, क्योंकि शरद ऋतु समीप थी और इस कारण चढ़ाई के अन्तिम तथा सब से कठिन भाग के लिए अन्वेषकों का दूसरा समूह भेजा गया। यह दल कई प्रयत्नों के पश्चात् २७,३०० फ़ीट की ऊँचाई तक पहुँच सका; यहाँ हवा इतनी पतली है कि बड़े पर्वत-शिखर पर चढ़ने वाले कुशल अन्वेषकों को भी औषजन (ऑक्सिजन) की प्राप्ति के लिए यन्त्रों का सहारा लेना अत्यावश्यक सिद्ध हुआ, किन्तु उससे उनका बोझ अत्यधिक हो गया। पाँच रात्रि के घोर परिश्रम के पश्चात् उन्होंने २१,००० फ़ीट की दूरी को तथा दो रात्रि के पश्चात् २५,९०० फ़ीट की दूरी को तय किया, किन्तु इसी दशा में मौसिमी हवा उठी तथा अन्वेषक पाला में अति क्लेशित हुए और आगे जाने से बिल्कुल निराश हो गए। १९२४ ईस्वी में फिर से कार्य-सिद्धि के लिए उद्योग किया गया तथा दो वीर आरोही, मेसर्स मेलरी और इरविन २८,२२७ फ़ीट की ऊँचाई पर देखे गए, जो कि शिखर से ८०० फ़ीट नीचे है; किन्तु उन लोगों का प्राणान्त हो गया, अतएव इस विषय में सन्देह है कि वे शिखर पर पहुँच सके थे या नहीं। निस्सन्देह संसार में सब से ऊँची चोटी का अवलोकन हो गया, यद्यपि उससे आर्थिक लाभ प्राप्त हो अथवा न हो।

आल्पस का ऊँचा पर्वत यद्यपि एवेरिस्ट के तुल्य ऊँचा नहीं है, तथापि इसका दृश्य अत्यन्त ही मनोरञ्जक है।

ब्लाङ्क पर्वत, जिसकी सर्वोच्च चोटी १५,२१५ फ़ीट है, समुद्र-तट से ठीक तीन मील ऊँचा है। सर्व-प्रथम सन् १७८६ ईस्वी में दो फ़्रान्सीसी अन्वेषक इस पर चढ़े और दूसरे वर्ष एक तीसरे फ़्रान्सीसी युवक ने इसकी सर्वोच्च चोटी पर पदार्पण किया; इनके साथ अठारह पथ-प्रदर्शक थे। आधुनिक समय में शिखर का रास्ता लोगों को अच्छी तरह ज्ञात है तथा अन्वेषकों का झुण्ड प्रतिवर्ष इस पर चढ़ता है।

जङ्गफ़्रू जो स्विट्ज़रलैण्ड के ऊँचे पर्वतों में से मुख्य पर्वत है, सूर्योदय के समय शिखर से दिखाई पड़ने वाले दृश्य के लिए अति प्रख्यात है। इस पर्वत पर आरोहण करना अति दुष्कर तथा भयानक समझा जाता था, किन्तु वर्तमान काल में रेलवे लाइन इसके ढाल पर उन लोगों के लिए बनी हुई है, जो पर्वत के ऊपर चढ़ाई की कठिनाई का अनुभव नहीं करना चाहते।

मैटर्न आल्पस पर्वत की तीसरी ऊँची चोटी है। १८६५ ईस्वी में चार अङ्गरेज़ों ने तीन पथ-प्रदर्शकों के साथ इसके निरीक्षण करने के निमित्त प्रस्थान किया और शिखर पर कुशलपूर्वक पहुँच भी गए, किन्तु उतार के समय इनमें से तीन अङ्गरेज़ तथा एक पथ-प्रदर्शक फिसल कर बहुत ऊँचाई से पर्वत के नीचे ग्लेशियर में लुढ़क गए तथा चारों काल के ग्रास बने।

जापान के फ़्यूजियामा पर्वत की चोटी अत्यन्त सुन्दर और प्रसिद्ध है। फ़्यूजियामा शब्द का अर्थ अमरत्व का पर्वत है। फ़्यूजी को जापानी अति पवित्र मानते हैं, इसके दर्शनार्थ सहस्रों यात्री प्रति वर्ष इसके शिखर तक यात्रा करते हैं। फ़्यूजी बिल्कुल अकेला शिखर है, जो जापान की राजधानी टोकियो से ६० मील के लगभग दक्खिन-पश्चिम के मैदान में स्थित है। यह एवेरिस्ट तथा ब्लैङ्क शिखरों के सदृश किसी महान पर्वत-श्रेणी का भाग नहीं है, अतएव अधिक चौरस मैदान में स्थित होने के कारण विशेष ऊँचा दिखलाई पड़ता है।

अफ़्रिका में फ़्यूजीयामा के सदृश किलिमाजारो नामक शिखर है, जो कुछ ही दिनों पूर्व देखा जा सका है और शान्त ज्वालामुखी ज्ञात हुआ है। दक्षिण अमेरिका में हिमालय की एवेरिस्ट चोटी के लगभग समकक्ष चोटियाँ एडीज़ पर्वत की विशाल श्रेणी में स्थित हैं। सर्वोच्च पर्वतों में से कुछ इक्वेडर में बिल्कुल भूमध्य-रेखा पर हैं। चिम्बोरेज़ो, जो २,००० फ़ीट से अधिक ऊँचा है, विषवत् रेखा पर स्थित है, किन्तु इसकी चोटी सदैव बर्फ़ से ढकी रहती है और इसके हिमाच्छादित शान्त मुख के नीचे इसकी घाटी से ग्लेशियर की धारा बहती रहती है। कोटेपैक्सी, जो क़रीब २०,००० फ़ीट ऊँचा है, अभी तक जाग्रत अवस्था में है तथा सौन्दर्य्य में इसका स्थान केवल फ़्यूजीयामा के नीचे है।

गत दो शताब्दियों के पूर्व यह जान पड़ता है कि पर्वत-शिखरों पर पहुँचने के लिए लोगों ने कभी विचार भी नहीं किया, किन्तु एवेरिस्ट और इसी भाँति के हिमालय पर्वत के विशाल शिखरों को छोड़ कर मनुष्यों ने गत दो शताब्दियों में संसार के प्रायः सभी पर्वत-शिखरों पर चढ़ने में सफलता प्राप्त कर ली। आधुनिक युग में साहसी व्यक्तियों ने अफ़्रिका के रहस्यमय भीतरी भाग और मध्य एशिया के दुरूह मैदान में भी घुस कर प्रत्येक महाद्वीप के ऊँचे से ऊँचे स्थानों पर पहुँच कर अपनी पहुँच कर ली है। फिर भी एक दूसरी तथा कदाचित् इससे अधिक भीषण खोज शेष है। यह संसार के बहुत से भागों में तथा विशेषकर चूने के पत्थर के स्थानों में स्वयम् पर्वतों के अन्दर घुसे हुए विकराल खोहों का अन्वेषण है। बहुत सी खोहों का आंशिक रूप से अन्वेषण हुआ है, परन्तु कौन जानता है कि उनके पीछे क्या रहस्य छिपा है। यह निश्चय है कि भूतल के नीचे मनोरम खोहों से चमकते हुए सहस्रों विस्तृत दालान हैं, जिन्हें किसी मनुष्य ने अभी तक नहीं देखा है।

❀ ❀ ❀

अख़बारों की स्वाधीनता पर वज्र-प्रहार

(३३वें पृष्ठ का शेषांश)

जिनका ज़िक्र ऊपर आ चुका है, तो सरकार सारी ज़मानत ज़ब्त कर लेगी अथवा उसका कुछ अंश। नोटिस निकलने की तारीख़ से दस दिन बाद पहला डिक्लेरेशन रद्द हो जाएगा।

दूसरी बार डिक्लेरेशन देने पर मैजिस्ट्रेट की इच्छानुसार १०००) से १००००) तक की ज़मानत होगी। अगर पहली ज़मानत सब न ज़ब्त हुई होगी, तो बचा हुआ रुपया दूसरी ज़मानत में कम कर दिया जाएगा।

अगर फिर भी सरकार की नज़र में सम्बाद-पत्र के प्रकाशक ने वही क़सूर किया, जिसके कारण पहली ज़मानत ज़ब्त हुई थी, तो इस बार सरकार जैसा उचित समझेगी, कुल ज़मानत या उसका कुछ अंश ज़ब्त कर लेगी। उस सम्बादपत्र की सारी प्रतियाँ ब्रिटिश भारत में जहाँ पाएगी, ज़ब्त कर लेगी। नोटिस की तारीख़ से १० दिन के बाद डिक्लेरेशन रद्द समझा जाएगा और फिर ऐसे सम्बाद-पत्र को छपने की मञ्जूरी न दी जाएगी जब तक कि प्रान्तिक सरकार की इजाज़त न हो।

जो कोई आदमी ज़मानत माँगी जाने पर, ज़मानत दिए बिना, पुस्तक या सम्बाद-पत्र आदि छापने के लिए छापाख़ाना रक्खेगा, उसे वही सज़ा होगी जो धारा ४ के अनुसार डिक्लेरेशन नहीं देता और प्रेस रखता है।

जो ज़मानत माँगी जाने पर बिना ज़मानत दाख़िल किए सम्बाद-पत्र प्रकाशित करता है, उसे भी वही दण्ड मिलेगा जो बिना डिक्लेरेशन के सम्बाद-पत्र प्रकाशित करने वाले के लिए है।

जो ज़मानत देने के पहले प्रेस से काम लिया जाएगा, तो सरकार प्रेस को ज़ब्त कर सकेगी, क्योंकि ज़मानत माँगी जाने के बाद प्रेस को काम में न लाना चाहिए।

सम्बाद-पत्र का प्रकाशक अथवा प्रेस का चालक जब चाहे मैजिस्ट्रेट को दरख़्वास्त देकर अपनी ज़मानत वापिस ले सकेगा।

जहाँ कोई प्रेस है या ज़ब्त किए हुए सम्बाद-पत्र, किताब या दूसरे काग़ज़ हैं, उस जगह की तलाशी के लिए प्रान्तीय सरकार मैजिस्ट्रेट को आज्ञा दे सकती है कि वह किसी पुलिस-अफ़सर को, जो सब-इन्स्पेक्टर से नीचे दर्जे का न हो, नियत करे, जो उन चीज़ों को, जिनकी ज़ब्ती का हुक्म हुआ है, हस्तगत करके रक्खे, किसी मकान में उन चीज़ों के लिए तलाशी लेने जाय, जहाँ वह हो या उनके होने का सन्देह हो या जहाँ ऐसा सम्बाद-पत्र, पुस्तक बिक्री के लिए, पब्लिक के देखने के लिए, बाँटने के लिए रक्खे जाने का सन्देह हो।

ज़ब्ती के विरुद्ध हाईकोर्ट में अपील हो सकेगी। इस प्रकार की अपीलें स्पेशल बेञ्च में सुनी जाएँगी। हाईकोर्ट को अधिकार होगा कि ज़ब्त की हुई ज़मानत या दूसरी चीज़ को लौटा देने की आज्ञा दे।

* * *

सोने-चाँदी के फ़ैन्सी ज़ेवर के लिए

सोनो मोहनलाल जेठाभाई

केटलॉग दाम ।) 'ब्री' केटलॉग दाम ।)

पोस्टेज भेज कर मँगाइए !

३२ आरमनी स्ट्रीट, टेलीफ़ोन नं० ३१४३, बड़ा बाज़ार, कलकत्ता
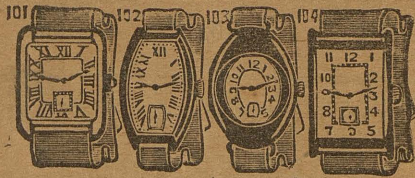
६।|) रु० में तीन घड़ियाँ (गारण्टी साथ में)

१।|=) पा०वा०गा०२ वर्ष	७।|) जे० अ०गा० ८ वर्ष
१।) बी टाइमपीस,, २ ,,	१०।|) रि० गो० ली० ६ ,,
२।) बर्मा ,, ,, ४ ,,	२७) ,, रोल्डगोल्ड ८ ,,
३।|) एलार्म,, ,, ५ ,,	२५) ,, ,, ली० १० ,,
३।|) रि० निकल,, ५ ,,	५०) ,, सोना१८ के१० ,,
४।|) ,, सुनहरा,, ५ ,,	१५) पा० क्रो० ,, १० ,,
६।|) ,, चाँदी ,, ६ ,,	१२।|) ठीक समय व
१०।|) दीवार घड़ी १० ,,	मस्ताना बाजा बजाती

नं० १+२+५ एक साथ मँगाने से ६।|) डा० ख़० अलग।

पता—रॉयल स्वीज़ वाच कम्पनी,
पी० बी० १२,२१२ कलकत्ता। मुरादाबाद (यू० पी०)

गृहस्थ का सच्चा मित्र

३० वर्ष से प्रचलित, रजिस्टर्ड

बालक, वृद्ध, जवान, स्त्री, पुरुषों के शिर से लेकर पैर तक के सब रोगों की अचूक रामबाण दवा। हमेशा पास रखिए, वक़्त पर लाखों का काम देगी। सूची मय कलेण्डर मुफ़्त मँगा कर देखो। क़ीमत ।।|) तीन शीशी २) डा० म० अलग।

पता—चन्द्रसेन जैन वैद्य, इटावा

मनोहर पिल्स चन्द्रप्रभा

ताक़त का ख़ज़ाना है, जो खोई हुई ताक़त को वापस लाकर, धातु को गाढ़ा करके स्वप्न-दोष, क्षीणता, अधिक विलासिता से उत्पन्न हुई रग व पट्ठों की कमज़ोरी को रफ़ा करके हर क़िस्म का प्रमेह, सूज़ाक, बवासीर, नवासीर, भगन्दर व औरतों के मासिक धर्म की ख़राबी के लिए अकसीर है। क़ीमत बड़ी शीशी ५) छोटी २।|)

बवासीर

ख़ूनी हो या बादी, बिला ऑपरेशन २४ घण्टे में तकलीफ़ को रफ़ा करके सिर्फ़ १ शीशी से ही आराम, क़ीमत बड़ी शीशी ५) ख़ुर्द २।|)

वै० भू० पं० मनोहरलाल मिश्र
आयुर्वेदिक मेडिकल हाल
चौक मैदानख़ाँ हैदराबाद, दक्षिण

चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं रही!

आप "निरमोलिन" से अपने रेशमी, ऊनी आदि सब प्रकार के रङ्गीन और मुलायम कपड़े आसानी से धो सकते हैं।

इसमें किसी प्रकार की हानिकारक वस्तु नहीं मिली हुई है!

हर जगह मिल सकती है।

कलकत्ता सोप-वर्क्स,
(हिन्दुस्तान में सब से बड़ी सोप-फ़ैक्टरी)
बालीगञ्ज, कलकत्ता

डॉ० डब्लू० सी० राय, एल० एम० एस० की

पागलपन की दवा

५० वर्ष से स्थापित

मूर्च्छा, मृगी, अनिद्रा, न्यूरस्थेनिया के लिए भी मुफ़ीद है। इस दवा के विषय में विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ कहते हैं कि :—"मैं डॉ० डब्लू० सी० राय की स्पेसिफ़िक फ़ॉर इन्सेनिटी (पागलपन की दवा) से तथा उसके गुणों से बहुत दिनों से परिचित हूँ।" स्वर्गीय जस्टिस सर रमेशचन्द्र मित्र की राय है—"इस दवा से आरोग्य होने वाले दो आदमियों को मैं ख़ुद जानता हूँ।" दवा का दाम ५) प्रति शीशी।

पता—एस० सी० राय एण्ड कं०,
१६७/३ कार्नवालिस स्ट्रीट,
या (३६ धर्मतल्ला स्ट्रीट) कलकत्ता!
तार का पता—"Dauphin" कलकत्ता

अग्रवाल वर चाहिए

बीसा अग्रवाल के उच्च घराने की विवाह योग्य शिक्षित कन्याओं के लिए, जोकि यू० पी० की निवासी हैं, ऐसे वरों की दरकार है, जो १८ से २१ साल तक के स्वस्थ, सदाचारी, शिक्षित और कम से कम ५००) मासिक बँधी हुई आमदनी रखने वाले और आदर्श सुधारक हों। लेने-देने का ठहराव, फ़ज़ूल-ख़र्च व कुरीतियाँ कुछ न होंगी, किन्तु विवाह बहुत सादापन से आडम्बर-रहित होगा, जन्म-पत्री नहीं मिलाई जायगी, कोई भाई मन्तव्य-विरुद्ध लिखा-पढ़ी न करें। व्यापारी बाइन विशेष वाञ्छनीय है।

अग्रवाल समिति,
D. बलदेव बिलडिङ्ग झाँसी, JHANSI

बरसात में इन औषधों की परमावश्यकता है!

तत्काल गुण दिखाने वाली ४० वर्ष की परीक्षित दवाइयाँ

शरीर में तत्काल बल बढ़ाने वाला, क़ब्ज़, बदहज़मी कमज़ोरी, खाँसी और नींद न आना दूर करता है। बुढ़ापे के कारण होने वाले सभी कष्टों से बचाता है। पीने में मीठा व स्वादिष्ट है। क़ीमत तीन पाव की बड़ी बोतल २), डाक-ख़र्च १।|) ; छोटी बोतल १) रु०, डाक-ख़र्च १=)

बच्चों को बलवान, सुन्दर और सुखी बनाने के लिए सुख सञ्चारक कम्पनी, मथुरा का मीठा **"बालसुधा"** उन्हें पिलाइए! क़ीमत ।।|) आना, डाक-ख़र्च ॥-)

सब दवा बेचने वालों के पास मिलती हैं। धोखे से नक़ली दवा न ख़रीदिए!

पता—सुख-सञ्चारक कम्पनी, मथुरा
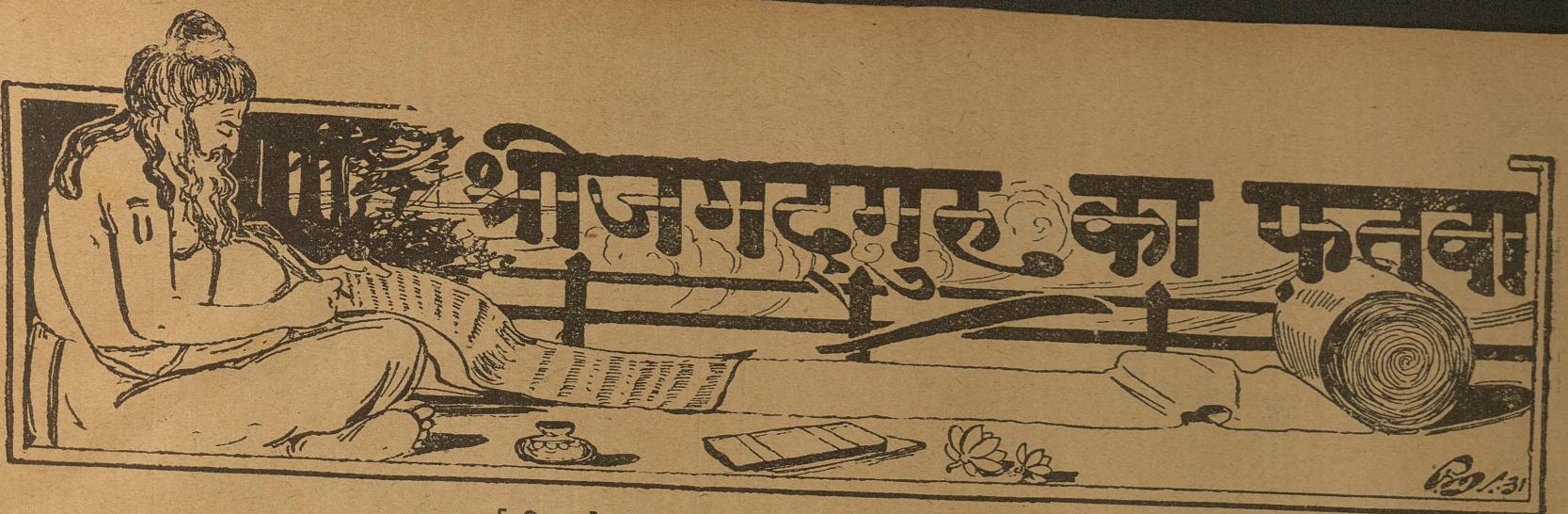
[हिज़ होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द जी विरूपाक्ष]

आवश्यकता है, श्री० जगद्गुरु को एक ऐसे मीर मुन्शी की, जो रङ्ग का चाहे धवल-शुभ्र न हो, परन्तु अक़्ल ठीक भारत-सरकार के मीर-मुन्शी श्री० क्रेरार की सी रखता हो। वेतन योग्यतानुसार—कुल्हड़ से लेकर ठिलिया भर तक दूधिया बूटी, दोनों वक़्त अर्थात् सबेरे और शाम को, पूरी महारत हो लेने पर 'कागावासी' और मध्यान-कालीन 'राक्षसी' के सम्बन्ध में भी विवेचना की जाएगी।

कार्य—जिस दिन कहीं से दक्षिणा न प्राप्त हो, उस दिन बूटी के लिए पैसों का जुगाड़ करना, जिस तरह कि ठाले के दिनों में माल गाँठने का उपाय श्री० क्रेरार साहब कर लेते हैं। उपाय इच्छानुसार, प्रतिवाद अपने सगे बाप का भी न सुनना।–कोई चीख़े या चिल्लाए, परवाह करने की आवश्यकता नहीं। समय और सुयोग से लाभ उठाने के लिए सदैव तत्पर रहना। बस इतने 'क्वालीफ़िकेशन' से ही काम चल जाएगा।

श्रावण, पितरपख, महामारी अर्थात् श्राद्ध और तर्पण के बाहुल्य के दिन और विवाहादि के दिनों में छुट्टी रहेगी। क्योंकि इन दिनों दक्षिणा का अभाव नहीं होता और भाँग-बूटी का प्रबन्ध स्वयं गुरुआनी जी अपने हाथों में ले लेती हैं, जैसे महारानी द्रौपदी ने महाराज युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के अवसर पर सारा प्रबन्ध अपने हाथों में ले रक्खा था।

इसके लिए ठीक श्री० क्रेरार साहब की योग्यता का आदमी चाहिए। क्योंकि आपकी चतुरता, बुद्धिमत्ता समय और सुयोग के अनुसार कार्यपटुता देख कर हिज़ होलीनेस आपाद-मस्तक विमुग्ध हो गए हैं। इनकी धारणा है कि जब तक श्रीमान् क्रेरार साहब सखी नौकरशाही के मीर-मुन्शी के पद पर प्रतिष्ठित हैं, तब तक स्वयं शनिदेव भी सखी का बाल बाँका नहीं कर सकते।

देश के मुष्टिमेय उच्छृङ्खल और काण्ड-ज्ञान-हीन नवयुवकों द्वारा सरकारी कर्मचारियों की हत्याएँ होती देख कर सारे देश के बुद्धिमान उद्विग्न और व्यग्र हो रहे थे। सभी चिन्तित थे कि ये चिनगारियाँ कैसे बुझें? महात्मा गाँधी से लेकर श्री० रुकटूराम तक ने ऐसी नृशंस नर-हत्याओं की निन्दा की। इसे रोकने के लिए बड़े-बड़े बुद्धिमानों ने मत्था मारा और टापते रह गए।

परन्तु धन्य हैं श्री० क्रेरार साहब, जिन्होंने सारे रोगों के लिए, बात की बात में एक "अक्सीरे आज़म" ढूँढ़ निकाला, जिसे देख कर अरस्तू और लुकमान भी अश् अश् करके रह जाएँगे। धन्वन्तरि होते तो क़सम ख़ुदा की, अपने एक हाथ की हर्र और दूसरे हाथ की जोंक श्री० क्रेरार साहब को सौंप कर उन्हें गोद ले लेते।

श्रीजगद्गुरु के इस 'हाफ़डज़न' सुटिप्पण-विशिष्ट उपर्युक्त भूमिका का तात्पर्य यह है कि श्रीमान क्रेरार साहब ने देश के अमनोआमान को क़ायम रखने के लिए, एसेम्बली में अपना एक 'प्रेस-पछाड़क' बिल पेश कर दिया है। अगले सप्ताह यह बिल क़ानून बन जाएगा, जैसे मट्टी का लोंदा पक कर ईंट हो जाता है।

इसके बाद 'मारे घुटना फूटे आँख' वाली कहावत चरितार्थ होगी। देश के प्रेस और पत्र जेठ की धूप में पड़े खटमलों की तरह छटपटा कर मर जाएँगे और सारे देश में अमनोआमान क़ायम हो जाएगा। अनारकिस्टों के हाथों में कोढ़ फूट जाएगा, यूरोप के पिस्तौलों के कारख़ानों में आग लग जायगी या चटगाँव के मुसलमान उन्हें लूट-पाट कर ठीक कर देंगे, बारूद बनाने वाले आत्म-हत्या कर लेंगे और मिस नौकरशाही आनन्दपूर्वक थिरक-थिरक कर सप्तम स्वर में गा उठेंगी,—

ट्विङ्किल-ट्विङ्किल लिटिल स्टार!
हाउ आई वण्डर ह्वाट यू आर !!

आपको मालूम नहीं, सारे ख़ुराफ़ात की जड़ ये अख़बार वाले हैं। इनकी बीबियाँ पिस्तौल बनाती हैं और बच्चे बम! इनकी लेखनी में ऐसा जादू भरा है कि जिसे चाहें तीसमारख़ाँ बना दें और जिसे चाहें रुस्तम। अगर ये लिख दें कि ताँतिया भील नामक डाकू बड़ा बहादुर था, उसने थाने में जाकर एक पुलीस के दारोग़ा की नाक काट ली थी, तो बस सारे देश के नवयुवक छुरी लेकर पुलीस के दारोग़ों की नाकें काटने लग जाएँ, और अगर ये लिख दें कि श्रीमान क्रेरार साहब बड़े बुद्धिमान और चतुर आदमी हैं, तो लाला रिखई ठाकुर का भोंदुआ भी भारत-सरकार का प्राइम-मिनिस्टर बन जाय।

काशी के एक सुप्रसिद्ध स्वर्गीय विद्वान और साधक कहा करते थे कि जिस.........के ऊपर.....दूँ, वह राजा हो जाए। सुनते हैं, उनमें शक्ति भी ऐसी थी और ऐसी ही अलौकिक और अपूर्व शक्ति श्रीमान क्रेरार साहब की कृपा से इस देश के अख़बार वालों को प्राप्त हो गई है। ये सर्वशक्तिमान जो चाहें कर और करा सकते हैं। "यह चाहैं सुमेरु को छार करैं, अरु छार को चाहैं सुमेरु बनायें!"

सुतरां श्री० क्रेरार साहब की ज़बानी इस देश के अख़बारों और प्रेसों की इस अलौकिक शक्ति का परिचय पाकर श्री० जगद्गुरु आजकल अपने भङ्गघोटने के सम्बन्ध में विशेष चिन्तित रहने लगे हैं और बड़ी सतर्कता से उसकी रक्षा किया करते हैं। क्योंकि ख़ुदानाख़ास्ता अगर किसी मनचले सम्पादक की नज़र उस पर पड़ गई और कम्बख़्त डण्डे के बजाय तोप या मशीनगन बन गया तो भाँग घोटने से तो गए ही, साथ ही 'आर्म्स-ऐक्ट' का भी शिकार होना पड़ेगा।

इधर कुछ दिनों से प्रेसों और अख़बारों पर श्रीमान शनिदेव की असीम अनुकम्पा है। बहुत से प्रेस-कर्मचारी अन्नाभाव के कारण चान्द्रायण करके बैतरणी पार कर जाना चाहते हैं। जो पूर्वजन्म के पुण्य-प्रताप से किसी तरह जी रहे हैं, वे भी इस शनिदेव के सहोदर 'ऐक्ट' की बदौलत भव-बन्धन से विमुक्त हो जाएँगे। फिर तो सारे देश का कोना-कोना 'ओ३म् शान्तिः शान्तिः' से गूँज उठेगा और उनके बाल-बच्चे श्रीमान क्रेरार का आन्तरिक आशीर्वाद प्राप्त करेंगे।

ऐसी दशा में अगर आस्तिकों का यह विश्वास हो कि एसेम्बली के स्वनाम-धन्य सदस्य और भारतीय प्रेसों के एकमात्र प्रतिनिधि श्री० केशवचन्द्र रॉय जगन्नियन्ता के पास श्रीमान क्रेरार साहब और श्रीमती नौकरशाही की शान्ति-प्रियता की कथा सुनाने ही चले गए हैं, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। क्योंकि श्रीमती के इस शान्ति-प्रियता रोग का इलाज भी अब जगन्नियन्ता ही कर सकते हैं।

ख़ैर, मङ्गलाचरण अच्छा हुआ है, नवीन प्रेस ऐक्ट के गर्भाधान संस्कार के साथ ही श्री० रॉय को शहीद होना पड़ा है। फलतः परम आशावादी श्रीजगद्गुरु को दृढ़ आशा है कि नान्दीमुख श्राद्ध तक कुछ और विधवाओं की वृद्धि भी इस देश में हो जायगी और फिर 'गेज़ेटेड' होकर जब 'बबुआ जी' गिल्ली-डण्डा खेलने लायक़ हो जाएँगे, तब तो बस—

किसी को मारा, किसी को काटा, किसी को छोड़ा हलाल करके।

ख़ैर, अपने राम तो 'भाग्यं फलति सर्वत्रम् न च विद्या न च पौरुषम्' के पक्षपाती हैं। देश के अख़बारों और प्रेसों की कपाल-क्रिया अगर श्रीमान क्रेरार साहब के हाथों ही बदी होगी तो उसे कौन टाल सकता है? फिर उपयुक्त अधिकारी के हाथ से अन्त्येष्टि होती भी बड़े सौभाग्य से है। प्रसन्नता की बात तो यह है कि श्रीमान क्रेरार साहब अपने इस शुभानुष्ठान द्वारा दादा रौलट से भी बढ़ कर बाज़ी मार ले जाएँगे। आपके पवित्र स्मृति की अटल छाप भारतवासी मात्र के हृदय-पटल पर अङ्कित रहेगी—

कहैंगे सबै नैन नीर भरि-भरि पाछे, प्यारे
'हरिचन्द' की कहानी रह जायगी!

ख़ैर, 'यहाँ की बातें यहाँ ही रह गईं, अब आगे का सुनो हवाल!' आल्हा-खण्ड की इस उक्ति के अनुसार, आइए ज़रा यहीं से बैठे विलायत की सैर कर लें। क्योंकि आजकल वहाँ फ़ेडरल कमिटी की बैठक हो रही है और विलायत के चतुर राजनीतिज्ञगणों ने 'वचनम् किं दरिद्रता' के अनुसार दाता कर्ण को भी मात कर दिया है। एक तो ब्रिटेन को ९६ अरब पौण्ड का घाटा और ऊपर से यह सख़ावत। ख़ुदा न करे, अगर कहीं राजा हरिश्चन्द्र की तरह डोम के हाथ बिकना पड़ा तो बड़ी मुश्किल होगी।

बातें लॉर्ड सैङ्की से लेकर भूतपूर्व (यह 'भूतपूर्व' क़सम ख़ुदा की, कलेजे में काँटे की तरह चुभ रहा है) भारत-सचिव मि० वेजउड बेन तक सभी 'भारत-बन्धुओं' ने एक से बढ़ कर एक लच्छेदार और श्रुति-मधुर सुनाई हैं, परन्तु इन सब में मीर हैं, हमारे चिर-परिचित दादा मुग्धानल देव। आपने अभय वाणी उच्चारण करते हुए कहा है, यहाँ चाहे कितना ही राज-नीतिक परिवर्तन या अर्थनैतिक सङ्कट क्यों न उपस्थित हो जाय, हमारी राष्ट्रीय नीति में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता! विगत गोलटेबिल के समय जो अवस्था थी, वही अब भी है, अर्थात् भारत के सम्बन्ध में—

वही रफ़्तार बेढङ्गी, जो पहले थी वह अब तक है!

❀

सर सेमुएल होर 'कञ्जर्वेटिव' (Conservative Party) के प्रतिनिधि और नवीना नेशनल सरकार के नवीन भारत-सचिव हैं। इसलिए आपने अपने 'अभयरूप' से दादा मुग्धानल देव की शहनाई में सुर मिलाया है। अन्याय सुहृदरों ने भी 'दिलो जाँ दीनो ईमाँ है, जो लेना हो सनम ले लो" कह कर बूढ़े भारत को आप्यायित किया है। माशा अल्लाह, फ़ेडरल कमिटी की उद्बोधिनी स्पीचें पढ़ कर तो बस यही कहना पड़ता है कि—

हमारे भी हैं मेहरबाँ कैसे-कैसे!

❀

ऐसी उदारता, सद्भावना और वदान्यता से लबालब भरी हुई लच्छेदार वाणी सुन कर भला कौन सङ्गदिल पिघल कर पानी न हो जाएगा? फलतः भारत के मुँह-फोड़ प्रतिनिधियों ने भी भाव-विह्वल चित्त से प्रत्युत्तर प्रदान किया है—

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव नाती च पोता त्वमेव।
त्वमेव 'दादा' त्वमेव 'दादी'
त्वमेव सर्वं मम देव देव।

❀

परन्तु अपने राम तो स्वयं मर कर स्वर्ग देखने के पक्षपाती हैं। इसीलिए इन्हें दूसरे की बाँटी हुई बूटी में ज़रा कम मज़ा आता है। फलतः इन्हें न तो लच्छेदार स्पीचों से कोई मतलब है, न विलायत की नवीन सरकार के गोरखधन्धे से कोई प्रेम। इन्हें तो बस, चचा चर्चिल के कथन पर सोलह आने विश्वास है। क्योंकि इङ्गलैण्ड भर में वही एक सच्चा और साधु-पुरुष है। भगवान उन्हें कुशल-क्षेम से रक्खें।

❀

भारत के इस सच्चे प्रेमी ने आज से कई महीने पहले ही कह दिया था कि "मैया तजों दैया पै कन्हैया नाहिं तजिहों!" यह पुरानी कामधेनु, जब चाहिए तभी ठिलिया भर देने वाली सूधी गौ क्या सहज ही छोड़ देने की चीज़ है? इसी बल पर बी ब्रितानिया सारे संसार में सहज सुहागिन बनी फिर[illegible] छोड़ कर क्य। बेचारी वैधव्य भोगेंगी [illegible]

❀

दुखदाई बवासीर

ख़ूनी या बादी, नई या पुरानी-ख़राब से ख़राब चाहे जैसी बवासीर, भगन्दर हो, सिर्फ़ एक दिन में "हमारी दवा" बिना ऑपरेशन के जादू की तरह असर कर अद्भुत फ़ायदा करेगी, तीन दिन में जड़ से आराम। अधिक प्रशंसा व्यर्थ है, फ़ायदा न हो तो चौगुना दाम वापस देंगे। क़ीमत २)

नेत्र सुधा-सागर सुर्मा

असली मोती तथा ममीरा आदि जङ्गली जड़ी-बूटियाँ मिला कर यह बना है, जिससे फूला, माड़ा, परवाल, रतौंधी, दिनौंधी, रोहे, गुहेरी, लाली, मोतियाबिन्द को आराम करने में रामबाण है, रोज़ाना लगाने से बुढ़ापे तक दृष्टि कम न होगी, यह नेत्र-रोगों की महौषधि है। क़ीमत १।), तीन शीशी ३)

बहिरापन

कान के तमाम रोगों पर जैसे कान में पीप आना, जलन, खुजली, कान में भयङ्कर वेदना, कान बहना तथा बहिरापन नाश करने में हमारा चमत्कारी 'बहिरापन तेल' अमोघ है। हज़ारों कम सुनने वाले अच्छे हुए हैं। फ़ायदा न हो तो दाम वापस। क़ीमत २)

पता—शक्ति सुधा कार्यालय, बम्बई न० ४

सिर्फ़ एक माह के लिए क़ीमत कम कर ५) की पुस्तकें २) में

१—विश्वव्यापार—सोडावाटर, अर्क़, ख़िज़ाब, इत्र, बालसफ़ा, रबड़ की मुहर, अञ्जन, मञ्जन बना धन कमाओ मू० १)

२—नवीन कोकशास्त्र—८४ आसनों के चित्र, स्त्री-पुरुष सर्वगुप्त भेद, ज्योतिष, सामुद्रिक, शकुन का पूरा वर्णन मू० १)

३—इङ्गलिश टीचर—घर बैठे अङ्गरेज़ी पढ़ना सीखो मू० १)

४—करामात—मैस्मेरिज़्म, हिप्नोटिज़्म का वर्णन मू० १) पूरा सेट २) में डाक व्यय ॥) एक पुस्तक पूरे मू० में।

पता—बी० आर० जैसवाल, अलीगढ़, सिटी।

भृगुसंहिता का गुप्त रहस्य

प्राचीन, हस्तलिखित, अपूर्व ग्रन्थ ४०० पृष्ठों में हिन्दी में छप रहा है, अगर भृगु जी के चमत्कारों की सत्यता का प्रमाण देखना हो तो अवश्य मँगावें मूल्य ३) ग़रीबों से २)

सी० एस० एण्ड ब्रादर्स, महराजगञ्ज, ज़िला सारन

दाम ५) बा[illegible]
यह तेल [illegible]
जड़ से काम[illegible]
प[illegible]
कनखी सि[illegible]

डॉक्टर बनिए

घर बैठे डॉक्टरी पास करना हो तो कॉलेज की नियमावली मुफ़्त मँगाइए! पता—
इण्टर नेशनल कॉलेज, (गवर्नमेण्ट रजिस्टर्ड)
३१ बाँसतल्ला गली, कलकत्ता

मुफ़्त! मुफ़्त!! मुफ़्त!!

जो कवच २) में मिलता था, आज वह सिर्फ़ १५ दिन के वास्ते मुफ़्त भेजा जाता है। यह कवच संसार भर के जादू, तन्त्र-मन्त्र, ज्योतिष चमत्कारों से परिपूर्ण है, इसके धारण करने से हर तरह के काम सिद्ध होते हैं। जैसे रोज़गार में लाभ, मुक़द्दमे में जीत, सन्तान-लाभ, हर तरह के सङ्कटों से छुटकारा, इम्तिहान में पास होना, इच्छानुसार नौकरी मिलना, जिसको चाहे वश कर लेना, हर प्रकार के रोगों से छुटकारा पाना, देश-देशान्तरों का हाल क्षण भर में जान लेना, भूत-प्रेतों को वश में कर लेना, स्वप्न-दोष का न होना, मरे हुओं से बातचीत करना, राज-सम्मान होना, कहाँ तक गिनाएँ, बस जिस काम में हाथ डालिएगा, फ़तह ही फ़तह है। १५ दिन तक फ़्री, बाद १५ दिन के १ कवच का मूल्य २), तीन का ५॥) डाक-महसूल ॥ॽ; ध्यान रहे, मरे हुओं की १ पुश्त तक का हाल बतावेगा, दूसरे के ज़िम्मेदार हम नहीं। अगर कोई झूठा साबित करे तो १५) इनाम। सन्तान चाहने वाले स्त्री और पुरुष दोनों ही कवच मँगावें।

पता—एस कुटी, हाटखोला (कलकत्ता)

होमियोपैथिक दवाइयाँ

विशुद्ध अमेरिकन दवा[illegible]
दाम -)।, -)॥ व [illegible]
असली दवा अङ्गरे[illegible]
शीशी, काग, गोली [illegible]
कर सस्ते दर में [illegible]
हैज़ा व सब बीमारियों की दवा, हिन्दी [illegible]
ड्रापर सहित १२, २४, ३०, ४८, ६०, ८४, १[illegible]
का दाम केवल ३), ३॥), ४॥), ६), ८), १[illegible]
ख़र्च अलग। बायोकेमिक दवाइयाँ प्रति [illegible]
बायोकैमिक दवाइयों का बक्स, एक किताब [illegible]
इयों के साथ मूल्य २॥) डाक-ख़र्च [illegible]

THE BHAVISHYA

'भविष्य' का चन्दा
वार्षिक चन्दा ... १२)
छःमाही चन्दा ... ६॥)
तिमाही चन्दा ... ३॥)
एक प्रति का मूल्य ।)

तार का पता :
'भविष्य'

साप्ताहिक संस्करण
का
जुबली-नम्बर

इस अङ्क का मूल्य केवल

...ठकों को "जुबली-नम्बर" पढ़ कर आश्चर्य अवश्य होगा, क्योंकि 'भविष्य' को प्रकाशित हुए ५० वर्ष नहीं; ...। किन्तु 'भविष्य' के मित्रों, शुभचिन्तकों एवं बुज़ुर्गों ने दूसरे वर्ष का पहिला अङ्क "जुबली-अङ्क" के नाम ... अनुरोध किया है, जो बाध्य होकर संस्था के प्रवर्तकों को स्वीकार करना पड़ा; अतएव निश्चय यह कि ...षाङ्क के रूप में प्रकाशित किया जाय, शायद पाठकों को बतलाना न होगा कि 'भविष्य' का प्रत्येक ... हुआ है और इसलिए यदि हम ५० सप्ताहों को ५० वर्ष के समान मान कर अपने हृदय की सा... विशेषाङ्क हम इतना सुन्दर प्रकाशित करना चाहते हैं, जितना सुन्दर एवं महत्वपूर्ण अङ्क अ... ...न्तु सारे साधनों को एकत्र करने में थोड़े समय को भी ज़रूरत है और चूँकि पूरे एक ... ...ला है (जबकि होली पर अन्य पत्र पूरे एक सप्ताह की छुट्टी ग्रहण करते हैं, ठीक उसी सम... ...भेंट किया था) इसलिए हम दो सप्ताह की छुट्टी भी लेना चाहते हैं ; अतएव ५० अङ्क पूरे करके ...ाह की छुट्टी ग्रहण करेगा और इसका ५१वाँ अङ्क

'जुबली-अङ्क' के नाम से एक बृहत् विशेषाङ्क

...त होगा। इस विशेषाङ्क में लगभग १०० पृष्ठ, सैकड़ों चित्र तथा कार्टून (कुछ चित्र आर्ट पेपर पर) भी ...वर, नया टाइप, ठोस पाठ्य सामग्री तथा अनेक महत्वपूर्ण बातें इस विशेषाङ्क में पाठकों को मिलेंगी। छपाई-... ...त्र

केवल बारह आना होगा

... 'भविष्य' (साप्ताहिक संस्करण) के ग्राहक हैं, उन्हें तथा जो विशेषाङ्क प्रकाशित होने के पूर्व ही स्थायी ...भेज कर नाम लिखा लेंगे, उन्हें यह विशेषाङ्क उनके चन्दे में ही दिया जायगा।

यदि आप स्थायी ग्राहक नहीं हैं तो शीघ्र ही अपना नाम लिखा लीजिए।

एजण्टों तथा विज्ञापनदाताओं को तुरन्त अपना ऑर्डर रजिस्टर करा लेना चाहि...

'चाँद' के विशेषाङ्क के लिए, जो आगामी नवम्बर (दीपावली) के अवसर पर "राजपूताना-अङ्क" के नाम से ...काशित होगा, तथा 'भविष्य' के "जुबली-अङ्क" के लिए, ग्राहकों की सुविधा को दृष्टि में रख कर अभी से कूपन छपा ... ...भविष्य' की समस्त एजन्सियों द्वारा अथवा इस संस्था की शाखों द्वारा अभी से ख़रीद कर अपनी कॉपी रिज़र्व करा ली... ...ठिन हो जायगा।

"तुरन्त अथवा कभी नहीं" का प्रश्न है !!

व्यवस्थापक "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद

Printed, Published and Edited by Shrimati Lakshmi Devi, at The Fine Art Printing Cot...
28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad

मूल्य केवल ४) रु०	# आदर्श चित्रावली THE IDEAL PICTURE ALBUM	स्थायी ग्राहकों से ३) रु०

यह वह चीज़ है, जो आज तक भारत में नसीब नहीं हुई !

यदि 'चाँद' के निजी प्रेस

दि फ़ाइन आर्ट प्रिन्टिङ्ग कॉटेज

की

छपाई और सुघड़ता का रसास्वादन करना चाहते हैं तो

एक बार इसे देखिए

बहू-बेटियों को उपहार दीजिए और इष्ट-मित्रों का मनोरञ्जन कीजिए। पाश्चात्य देशवासी

धड़ाधड़ मँगा रहे हैं

विलायती पत्रों में इस

चित्रावली की धूम मची हुई है

कुछ भारतीय प्रतिष्ठित विद्वानों और पत्रों की सम्मतियाँ मँगा कर देखिए—

तार का पता : 'चाँद'	व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद	टेलीफ़ोन-नं० २०५